विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश/शाक-ष

< विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश

मूलशब्द—व्याकरण—संधिरहित मूलशब्द—व्युत्पत्ति—हिन्दी अर्थ

- **शाकः**—पुं॰—-—शक्यते भोक्तुम् - शक् + घञ्—शाक, साग -भाजी, खाद्यपत्ते, फल या कन्द जो शाक की भांति उपयोग में लाये जायं
- **शाकम्**—नपुं॰—-—शक्यते भोक्तुम् - शक् + घञ्—शाक, साग -भाजी, खाद्यपत्ते, फल या कन्द जो शाक की भांति उपयोग में लाये जायं
- **शाकः**—पुं॰—-—-—शक्ति, सामर्थ्य, ऊर्जा
- **शाकः**—पुं॰—-—-—सागौन का वृक्ष
- **शाकः**—पुं॰—-—-—शिरीष का वृक्ष
- **शाकः**—पुं॰—-—-—एक जाति का नाम
- **शाकः**—पुं॰—-—-—वर्ष, विशेषतः शालिवाहन संवत्सर
- **शाकाङ्गम्**—नपुं॰—शाकः-अङ्गम्—-—मिर्च
- **शाकाम्लम्**—नपुं॰—शाकः- अम्लम्—-—महादा, इमली
- **शाकाख्यः**—पुं॰—शाकः- आख्यः—-—सागौन का वृक्ष
- **शाकाख्यम्**—नपुं॰—शाकः- आख्यम्—-—शाकभाजी
- **शाकाहारः**—पुं॰—शाकः- आहारः—-—शाकभाजी खाने वाला (वनस्पति खाकर जीवित रहने वाला)
- **शाकचुक्रिका**—स्त्री॰—शाकः-चुक्रिका—-—इमली
- **शाकतरुः**—पुं॰—शाकः-तरुः—-—सागौन का वृक्ष
- **शाकपणः**—पुं॰—शाकः-पणः—-—मुट्ठीभर भार के बराबर तोल
- **शाकपणः**—पुं॰—शाकः-पणः—-—मुट्ठीभर शाकभाजी
- **शाकपार्थिवः**—पुं॰—शाकः-पार्थिवः—-—अपने नाम से वर्ष चलाने का शौकीन
- **शाकप्रति**—अव्य॰—शाकः-प्रति—-—थोड़ी सी वनस्पति
- **शाकयोग्यः**—पुं॰—शाकः-योग्यः—-—धनिया
- **शाकवृक्षः**—पुं॰—शाकः-वृक्षः—-—सागौन का पेड़
- **शाकशाकटम्**—नपुं॰—शाक-शाकटम्—-—साग भाजी का खेत, रसोई के योग्य सब्जियों का उद्यान
- **शाकशाकिनम्**—नपुं॰—शाक-शाकिनम्—-—साग भाजी का खेत, रसोई के योग्य सब्जियों का उद्यान

- **शाकट**—वि०—-—शकट + अण्—गाड़ी सम्बन्धी
- **शाकट**—वि०—-—शकट + अण्—गाड़ी में बैठकर जाने वाला
- **शाकटः**—पुं०—-—-—गाड़ी खींचने वाला बैल
- **शाकटः**—पुं०—-—-—श्लेष्मान्तक वृक्ष
- **शाकटः**—नपुं०—-—-—खेत
- **शाकटायनः**—पुं०—-—शकटस्यापत्यम्-शकट + फक्—भाषाविज्ञान और व्याकरण का पंडित जिसका पाणिनि और यास्क ने कई बार उल्लेख किया है
- **शाकटिक**—वि०—-—शकट + ठक्—गाड़ी सम्बन्धी
- **शाकटिक**—वि०—-—शकट + ठक्—गाड़ी में बैठकर जाने वाला
- **शाकटीनः**—पुं०—-—शकट + खञ्—गाड़ी में समाने योग्य बोझ, बीस तुला के समान बोझ की तोल
- **शाकल**—वि०—-—शकल + अण्—टुकड़े से सम्बन्ध रखने वाला
- **शाकलः**—पुं०ब० व०—-—-—ऋग्वेद की एक शाखा, इस शाखा के अनुयायी
- **शाकलप्रातिशाख्यम्**—नपुं०—शाकल-प्रातिशाख्यम्—-—ऋग्वेद का प्रातिशाख्य
- **शाकलशाखा**—स्त्री०—शाकल-शाखा—-—ऋग्वेद का परम्परागत पाठ जो शाकल शाखा में प्रचलित है
- **शाकल्यः**—पुं०—-—शकलस्यापत्यम् - यञ्—एक प्राचीन वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि ने किया है
- **शाकारी**—स्त्री०—-—-—प्राकृत का एक निम्नतम रूप, शकार द्वारा बोली गई बोली
- **शाकिनम्**—नपुं०—-—शाक + इनच्—खेत
- **शाकिनी**—स्त्री०—-—शाकिन् + ङीप्—साग-भाजी का खेत
- **शाकिनी**—स्त्री०—-—-—दुर्गादेवी की सेविका (जो एक पिशाचिनी या परी समझी जाती है)
- **शाकुन**—वि०—-—शकुन + अण्—पक्षियों से सम्बन्ध रखने वाला
- **शाकुन**—वि०—-—शकुन + अण्—सगुन सम्बन्धी
- **शाकुन**—वि०—-—शकुन + अण्—शकुनसम्बन्धी
- **शाकुनिकः**—पुं०—-—शकुनेन पक्षिवधादिना जीवति ठञ्—बहेलिया, चिड़ीमार
- **शाकुनिकम्**—नपुं०—-—-—शकुनों की व्याख्या
- **शाकुनेयः**—पुं०—-—शकुनि + ढक्—छोटा उल्लू
- **शाकुन्तलः**—पुं०—-—शकुन्तला + अण्—भरत का मातृपरक नाम (शकुन्तला का पुत्र)
- **शाकुन्तलम्**—नपुं०—-—-—कालिदास का अभिज्ञान शाकुन्तल नामक नाटक
- **शाकुलिकः**—पुं०—-—शकुल + ठक्—मछुआ, मछली मारने वाला

- **शाक्करः**—पुं°—-—शक्कर + अण्—बैल
- **शक्ति**—वि°—-—शक्ति + अण्—शक्ति सम्बन्धी
- **शक्ति**—वि°—-—शक्ति + अण्—दिव्यशक्ति की स्त्री प्रतिमा से सम्बन्ध रखने वाला
- **शक्तः**—पुं°—-—-—शक्तिपूजक
- **शाक्तिकः**—पुं°—-—शक्ति + ठक्—शक्ति का पूजक
- **शाक्तिकः**—पुं°—-—शक्ति + ठक्—बर्छीधारी, भाला रखने वाला
- **शाक्तीकः**—पुं°—-—शक्ति + ईकक्—बर्छी रखने वाला, भालाधारी
- **शाक्तेयः**—पुं°—-—शक्ति + ढक्—शक्ति का उपासक
- **शाक्यः**—पुं°—-—शक् + घञ् तत्र साधुः यत्— बुद्ध के कुटुम्ब का नाम
- **शाक्यः**—पुं°—-—शक् + घञ् तत्र साधुः यत्—बुद्ध
- **शाक्यभिक्षुकः**—पुं°—शाक्य-भिक्षुकः—-—बौद्धभिक्षु
- **शाक्यमुनिः**—पुं°—शाक्य-मुनिः—-—बुद्ध के विशेषण
- **शाक्यसिंहः**—पुं°—शाक्य-सिंहः—-—बुद्ध के विशेषण
- **शाक्री**—स्त्री°—-—शक्र + अण् + ङीप्—इन्द्र की पत्नी शची
- **शाक्री**—स्त्री°—-—शक्र + अण् + ङीप्—दुर्गादेवी
- **शाक्वरः**—स्त्री°—-—शक्वर + अण्—बैल
- **शाखा**—स्त्री°—-—शाखति गगनं व्याप्नोति -शाख् + अच् + टाप्—(वृक्ष आदि की) डाली, शाख
- **शाखा**—स्त्री°—-—शाखति गगनं व्याप्नोति -शाख् + अच् + टाप्—भुजा
- **शाखा**—स्त्री°—-—शाखति गगनं व्याप्नोति -शाख् + अच् + टाप्—दल, अनुभाग, गुट
- **शाखा**—स्त्री°—-—शाखति गगनं व्याप्नोति -शाख् + अच् + टाप्—किसी कार्य का भाग या उपभाग
- **शाखा**—स्त्री°—-—शाखति गगनं व्याप्नोति -शाख् + अच् + टाप्—सम्प्रदाय, शाखा, पन्थ
- **शाखा**—स्त्री°—-—शाखति गगनं व्याप्नोति -शाख् + अच् + टाप्—परम्परा प्राप्त वेद का पाठ, किसी सम्प्रदाय द्वारा मान्यताप्राप्त परम्परागत पाठ यथा शाकल शाखा, आश्वलायन शाखा, बाष्कल शाखा आदि
- **शाखाचन्द्रन्यायः**—पुं°—शाखा-चन्द्रन्यायः—-—
- **शाखानगरम्**—नपुं°—शाखा-नगरम्—-—नगराञ्चल, नगर परिसर
- **शाखापुरम्** —नपुं°—शाखा-पुरम् —-—नगराञ्चल, नगर परिसर
- **शाखापित्तः**—पुं°—शाखा-पित्तः—-—शरीर के हाथ, कन्धा आदि छोरों में सूजन

- **शाखाभृत्**—पुं°—शाखा-भृत्—-—वृक्ष
- **शाखाभेद**—वि°—शाखा-भेद—-—(वेद की) शाखाओं का अन्तर
- **शाखामृगः**—पुं°—शाखा-मृगः—-—बन्दर, लंगूर
- **शाखामृगः**—पुं°—शाखा-मृगः—-—गिलहरी
- **शाखारण्डः**—पुं°—शाखा-रण्डः—-—अपनी शाखा के प्रति द्रोह करने वाला, वह ब्राह्मण जिसने अपनी वैदिक शाखा को बदल दिया है
- **शाखारथ्या**—स्त्री°—शाखा-रथ्या—-—गली, वीथिका
- **शाखालः**—पुं°—-—शाखा + ला + क—एक प्रकार का बेंत, वानीर
- **शाखिन्**—वि°—-—शाखा + इनि—शाखाधारी
- **शाखिन्**—वि°—-—शाखा + इनि—शाखाओं से युक्त, शाखामय
- **शाखिन्**—वि°—-—शाखा + इनि—(वेद के) किसी सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्ध रखने वाला
- **शाखिन्**—पुं°—-—-—वृक्ष
- **शाखिन्**—पुं°—-—-—वेद
- **शाखिन्**—पुं°—-—-—वेद की किसी भी शाखा का अनुयायी
- **शाखोटः** —पुं°—-—शाख् + ओटन —एक वृक्ष, पेड़
- **शाखोटकः**—पुं°—-—शाखोट + कन्—एक वृक्ष, पेड़
- **शाङ्करः**—पुं°—-—शङ्कर + अण्—बैल
- **शाङ्करिः**—पुं°—-—शङ्कर + इञ्—कार्तिकेय
- **शाङ्करिः**—पुं°—-—शङ्कर + इञ्—गणेश
- **शाङ्करिः**—पुं°—-—शङ्कर + इञ्—अग्नि
- **शाङ्खिकः**—पुं°—-—शङ्ख + ठक्—शङ्खकार, शङ्ख को काटकर उसकी चीजें बनाने वाला
- **शाङ्खिकः**—पुं°—-—शङ्ख + ठक्—एक वर्णसङ्कर जाति
- **शाङ्खिकः**—पुं°—-—शङ्ख + ठक्—शङ्ख बजाने वाला
- **शाटः** —पुं°—-—शट् + घञ्—वस्त्र, कपड़ा
- **शाटः** —पुं°—-—शट् + घञ्—अधोवस्त्र, साड़ी
- **शाटी**—स्त्री°—-—शाट + ङीष्—वस्त्र, कपड़ा
- **शाटी**—स्त्री°—-—शाट + ङीष्—अधोवस्त्र, साड़ी
- **शाटकः** —पुं°—-—शाट + कन्—वस्त्र, कपड़ा, अधोवस्त्र, साड़ी

- **शाटकम्**—नपुं°—-—शाट + कन्—
- **शाठ्यम्**—नपुं°—-—शठ + ष्यञ्—बेईमानी, छल, कपट, चालाकी, जालसाज़ी, दुष्कर्म
- **शाण**—वि°—-—शणेन निर्वृत्तम् -अण्—सन का बना हुआ, पटसन का बना हुआ
- **शाणः**—पुं°—-—-—कसौटी
- **शाणः**—पुं°—-—-—सान रखने वाला पत्थर
- **शाणः**—पुं°—-—-—आरा
- **शाणः**—पुं°—-—-—चार माशे की तोल
- **शाणम्**—नपुं°—-—-—मोटा कपड़ा, बोरे या थैले आदि बनाने का कपड़ा
- **शाणम्**—नपुं°—-—-—सन का बना वस्त्र
- **शाणाजीवः**—पुं°—शाण-आजीवः—-—शस्त्रनिर्माता, सिकलीगर
- **शाणिः**—पुं°—-—शण् + इण्—(एक पौधा जिसके रेशों से वस्त्र बनता है) पटुआ
- **शाणित**—भू° क° कृ°—-—शण् + णिच् + क्त—सान पर रक्खा हुआ, पीसा हुआ, (शाण पर रखकर) पैनाया हुआ
- **शाणी**—स्त्री°—-—शण् + ङीप्—कसौटी
- **शाणी**—स्त्री°—-—शण् + ङीप्—सान
- **शाणी**—स्त्री°—-—शण् + ङीप्—आरा
- **शाणी**—स्त्री°—-—शण् + ङीप्—सन का बना वस्त्र
- **शाणी**—स्त्री°—-—शण् + ङीप्—फटा कपड़ा, चिथड़ा
- **शाणी**—स्त्री°—-—शण् + ङीप्—छोटा पर्दा या तंबू
- **शाणी**—स्त्री°—-—शण् + ङीप्—अंगविक्षेप, हाथ या आँख आदि से संकेत करना
- **शाणीरम्**—नपुं°—-—शण् + ईरण्—शोण नदी का तट, शोण नदी का भूभाग
- **शाण्डिल्यः**—पुं°—-—शण्डिल + यञ्—एक ऋषि जिसने विधिशास्त्र पर ग्रन्थ लिखा
- **शाण्डिल्यः**—पुं°—-—शण्डिल + यञ्—बिल्ववृक्ष, बेल का पेड़
- **शाण्डिल्यः**—पुं°—-—शण्डिल + यञ्—अग्नि का रूप
- **शाण्डिल्यगोत्रम्**—नपुं°—शाण्डिल्य-गोत्रम्—-—शांडिल्य का परिवार
- **शात**—भू° क° कृ°—-—शो + क्त—तीक्ष्ण किया हुआ, पैनाया हुआ
- **शात**—भू° क° कृ°—-—शो + क्त—पतला, दुबला
- **शात**—भू° क° कृ°—-—शो + क्त—दुर्बल, कमजोर

- **शात**—भू० क० कृ०—-—शो + क्त—सुन्दर, मनोहर
- **शात**—भू० क० कृ०—-—शो + क्त—प्रसन्न, फलता-फूलता
- **शातः**—पुं०—-—-—धतूरे का पौधा
- **शातम्**—नपुं०—-—-—आनन्द, प्रसन्नता, खुशी
- **शातोदरी**—स्त्री०—शात-उदरी—-—कृशोदरी, पतली कमर वाली स्त्री
- **शातशिख**—वि०—शात-शिख—-—तेज़ नोक वाला, तीक्ष्ण नोकदार
- **शातकुम्भम्**—नपुं०—-—शतकुंभे पर्वते भवम् - अण्—सोना
- **शातकुम्भम्**—नपुं०—-—शतकुंभे पर्वते भवम् - अण्—धतूरा
- **शातकौस्तुभम्**—नपुं०—-—शतकुम्भ + अण्—सुवर्ण, सोना
- **शातनम्**—नपुं०—-—शो + णिच् + तङ् + ल्युट्—पैनाना, तेज़ करना
- **शातनम्**—नपुं०—-—शो + णिच् + तङ् + ल्युट्—काटने वाला, विनाशकर्ता
- **शातनम्**—नपुं०—-—शो + णिच् + तङ् + ल्युट्—गिराना या नष्ट करना
- **शातनम्**—नपुं०—-—शो + णिच् + तङ् + ल्युट्—कुम्हलाहट पैदा करना
- **शातनम्**—नपुं०—-—शो + णिच् + तङ् + ल्युट्—पतला या छोटा होना, पतलापन
- **शातनम्**—नपुं०—-—शो + णिच् + तङ् + ल्युट्—मुर्झाना, कुम्हलाना
- **शातपत्रकः** —पुं०—-—शतपत्र + अण् + कन्—चाँद का प्रकाश
- **शातपत्रकी**—स्त्री०—-—-—चाँद का प्रकाश
- **शातभीरुः**—पुं०—-—शाताः दुर्बलाः पान्थाः भीरवो यस्याः -ब० स०— एक प्रकार की मल्लिका
- **शातमान**—वि०—-—शतमानेन क्रीतम् - अण्—एक सौ में मोल लिया हुआ
- **शात्रव**—वि०—-—शत्रु + अण्—शत्रुसंबंधी
- **शात्रव**—वि०—-—शत्रु + अण्—विरोधी, शत्रुतापूर्ण
- **शात्रवः**—पुं०—-—-—दुश्मन
- **शात्रवम्**—नपुं०—-—-—शत्रुओं का समूह
- **शात्रवम्**—नपुं०—-—-—शत्रुता, दुश्मनी
- **शात्रवीय**—वि०—-—शत्रु + छ—शत्रुसंबंधी
- **शात्रवीय**—वि०—-—शत्रु + छ—विरोधी, शत्रुतापूर्ण
- **शादः**—पुं०—-—शद् + घञ्—छोटी घास

- **शादः**—पुं°——शद् + घञ्—कीचड़
- **शादहरितः**—पुं°—शाद-हरितः———नये घास के कारण हरियाली भूमि, वह भूमि जिस पर हरियाली छा गई है
- **शादहरितम्**—नपुं°—शाद-हरितम्———नये घास के कारण हरियाली भूमि, वह भूमि जिस पर हरियाली छा गई है
- **शाद्वल**—वि°——शादाः सन्त्यत्र वलच्—तृणयुक्त
- **शाद्वल**—वि°——शादाः सन्त्यत्र वलच्—जहाँ नई घास, या हरी हरी घास उग आई हो
- **शाद्वल**—वि°——शादाः सन्त्यत्र वलच्—हरा भरा, सब्ज़, हरियाली से युक्त
- **शाद्वलः** —पुं°————घास से युक्त भूमि, हरियाली, चरागाह
- **शाद्वलम्**—नपुं°————घास से युक्त भूमि, हरियाली, चरागाह
- **शान्**—भ्वा° उभ° <शीशांसति>, <शीशांसते>————तेज़ करना, पैनाना
- **शानः**—पुं°——शान् + अच्—कसौटी
- **शानः**—पुं°——शान् + अच्—सान का पत्थर
- **शानवादः**—पुं°—शान-वादः———चन्दन पीसने का पत्थर
- **शानवादः**—पुं°—शान-वादः———पारियात्र पर्वत
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—प्रसन्न किया हुआ, दमन किया हुआ, धीरज दिलाया हुआ, सन्तुष्ट किया हुआ, प्रशान्त
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—चिकित्सित, सान्त्वना दिया हुआ
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—घटाया हुआ, कम किया हुआ, समाप्त किया हुआ, हटाया हुआ, बुझाया हुआ
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—विरत, ठहराया हुआ
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—मृत, उपरत
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—शान्त किया हुआ, दबाया हुआ
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—सौम्य, चुपचाप, बाधाहीन, निस्तब्ध, मूक, मौन
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—सधाया हुआ, पाला हुआ
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—आवेशरहित, आराम से, सन्तुष्ट
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—छायादार
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—पवित्रीकृत
- **शान्त**—भू° क° कृ°——शम् + क्त—शुभ (शकुन)
- **शान्तं पापम्**—अव्य°————'अहो! नहीं, यह कैसे हो सकता है, भगवान् करे ऐसी अशुभ या दुर्भाग्यपूर्ण घटना न घटे'
- **शान्तः**—पुं°————वैरागी, संन्यासी

- **शान्तः**—पुं०—-—-—शान्ति निस्तब्धता, मौनभाव, सांसारिक विषय वासनाओं के प्रति तटस्थता की प्रभावना
- **शान्तम्**—अव्य०—-—-—बस, और नहीं ऐसा नहीं शर्म की बात है, चुप रहो, भगवान् न करे
- **शान्तात्मन्**—वि०—शान्त-आत्मन्—-—सौम्य, शान्तमना, धीर, स्वस्थमना
- **शान्तचेतस्**—वि०—शान्त-चेतस्—-—सौम्य, शान्तमना, धीर, स्वस्थमना
- **शान्ततोय**—वि०—शान्त-तोय—-—जिसका पानी स्थिर हो
- **शान्तरसः**—पुं०—शान्त-रसः—-—मौनाभाव
- **शान्तनवः**—पुं०—-—शन्तनु + अण्—शन्तनु का पुत्र भीष्म
- **शान्ता**—स्त्री०—-—शान्त + टाप्—दशरथ की पुत्री जिसे लोमपाद ऋषि ने गोद ले लिया था तथा जो ऋष्यशृङ्ग को ब्याही गई थी
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—प्रशमन, निराकरण, सान्तवना, हटाव
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—धैर्य, प्रशान्तता, निःशब्दता, अमन-चैन, विश्राम
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—वैरनिरोध
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—विराम, निवृत्ति
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—आवेश का अभाव, मौनभाव, सभी सांसारिक भोगों के प्रति पूर्ण उदासीनता
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—सान्तवना, ढाढस
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—सामञ्जस्यविधान, विरोधोपशमन
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—भूख की तृप्ति
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—प्रायश्चित अनुष्ठान, पाप को दूर करने के लिए तुष्टिप्रद अनुष्ठान
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—सौभाग्य, बधाई, आशीर्वाद, माङ्गलिकता
- **शान्तिः**—स्त्री०—-—शम् + क्तिन्—दोषमार्जन, कलंक से मुक्ति, परिरक्षण
- **शान्त्युदम्**—नपुं०—शान्ति-उदम्—-—शान्तिकर तथा प्रसादपूर्ण जल
- **शान्त्युदकम्**—नपुं०—शान्ति-उदकम्—-—शान्तिकर तथा प्रसादपूर्ण जल
- **शान्तिजलम्**—नपुं०—शान्ति-जलम्—-—शान्तिकर तथा प्रसादपूर्ण जल
- **शान्तिकर**—वि०—शान्ति-कर—-—सान्त्वक, प्रशामक
- **शान्तिकारिन्**—वि०—शान्ति-कारिन्—-—सान्त्वक, प्रशामक
- **शान्तिगृहम्**—नपुं०—शान्ति-गृहम्—-—विश्रामकक्ष
- **शान्तिहोमः**—पुं०—शान्ति-होमः—-—पाप का निस्तारण करने के लिए यज्ञ करना
- **शान्तिक**—वि०—-—शान्ति + कन्—प्रायश्चित्तात्मक, सान्त्वनाप्रद, तुष्टिकर

- **शान्तिकम्**—नपुं०———संकट को दूर करने के लिए किया गया अनुष्ठान
- **शान्त्व्**—————
- **शापः**—पुं०———शप् + घञ्—अभिशाप, अवक्रोश, फटकार
- **शापः**—पुं०———शप् + घञ्—सौगन्ध, शपथोक्ति
- **शापः**—पुं०———शप् + घञ्—दुर्वचन, मिथ्या आरोप
- **शापान्तः**—स्त्री०—शाप-अन्तः———अभिशाप की समाप्ति
- **शापावसानम्**—स्त्री०—शाप-अवसानम्———अभिशाप की समाप्ति
- **शापनिवृत्तिः**—स्त्री०—शाप-निवृत्तिः———अभिशाप की समाप्ति
- **शापास्त्रः**—पुं०—शाप-अस्त्रः———`अभिशाप को ही जिसने अपना आयुध बनाया है' ऋषि, महात्मा
- **शापोत्सर्गः**—पुं०—शाप-उत्सर्गः———अभिशाप का उच्चारण
- **शापोद्धारः**—पुं०—शाप-उद्धारः———अभिशाप से छुटकारा
- **शापमुक्तिः** —स्त्री०—शाप-मुक्तिः ———अभिशाप से छुटकारा
- **शापमोक्षः**—पुं०—शाप-मोक्षः———अभिशाप से छुटकारा
- **शापग्रस्त**—वि०—शाप-ग्रस्त———अभिशाप से दबकर परिश्रम करने वाला
- **शापमुक्त**—वि०—शाप-मुक्त———अभिशाप से जिसने छुटकारा पा लिया है
- **शापयन्त्रित**—वि०—शाप-यन्त्रित———अभिशाप के कारण नियन्त्रणपूर्ण
- **शापित**—भू० क० कृ०———शप् + णिच् + क्त—सौगन्ध से बंधा हुआ, शपथपूर्वक उक्त
- **शापित**—भू० क० कृ०———शप् + णिच् + क्त—गृहीशपथ, जिसने शपथ ले ली है
- **शाफरिकः**—पुं०———शफरान् हन्ति-शफर + ठक्—मछुआ, मछली पकड़ने वाला
- **शाबर**—वि०———शबर + अण्—असभ्य, जंगली
- **शाबर**—वि०———शबर + अण्—नीच, कमीना, अधम
- **शावर**—वि०———शवर + अण्—असभ्य, जंगली
- **शावर**—वि०———शवर + अण्—नीच, कमीना, अधम
- **शाबरः**—पुं०—————अपराध, दोष
- **शाबरः**—पुं०—————पाप, दुष्टता
- **शाबरः**—पुं०—————लोध्र नामक वृक्ष
- **शाबरी**—स्त्री०—————प्राकृत बोली का एक निम्नरूप (पहाड़ी लोगों से बोला जाने वाला)

- **शाबरभेदाख्यम्**—नपुं°—शाबर-भेदाख्यम्—-—तांबा
- **शाब्द**—वि°—-—शब्द + अण्—शब्द संबंधी या शब्द से व्युत्पन्न
- **शाब्द**—वि°—-—शब्द + अण्—ध्वनि पर निर्भर या ध्ननि सम्बन्धी
- **शाब्द**—वि°—-—शब्द + अण्—शाब्दिक, मौखिक
- **शाब्द**—वि°—-—शब्द + अण्—ध्वननशील, मुखर
- **शाब्दः**—पुं°—-—-—वैयाकरण
- **शाब्दबोधः**—पुं°—शाब्द-बोधः—-—शब्दों के अर्थ का अवबोध या प्रत्यक्षीकरण
- **शाब्दव्यंजना**—स्त्री°—शाब्द-व्यंजना—-—शब्दों पर आधारित व्यग्योक्ति
- **शाब्दिक**—वि°—-—शब्द + ठक्—ज़बानी, मौखिक
- **शाब्दिक**—वि°—-—शब्द + ठक्—निनादी
- **शाब्दिकः**—पुं°—-—-—वैयाकरण
- **शामनः**—पुं°—-—शमन् + अण्—यम
- **शामनम्**—नपुं°—-—-—हत्या, वध
- **शामनम्**—नपुं°—-—-—शान्ति, अमन-चैन
- **शामनम्**—नपुं°—-—-—अन्त
- **शामनी**—स्त्री°—-—-—दक्षिण दिशा
- **शामित्रम्**—नपुं°—-—शम् + णिच् + इत्रच्—यज्ञ करना
- **शामित्रम्**—नपुं°—-—शम् + णिच् + इत्रच्—मेघ, यज्ञ में पशुवध करना
- **शामित्रम्**—नपुं°—-—शम् + णिच् + इत्रच्—यज्ञ के लिए बलिपशु बांधना
- **शामित्रम्**—नपुं°—-—शम् + णिच् + इत्रच्—यज्ञीय पात्र
- **शामिलम्**—नपुं°—-—शमी + ष्लच्—भस्म, राख
- **शामिली**—स्त्री°—-—शामिल + ङीष्—यज्ञीय स्रुवा, स्रुच्
- **शाम्बरी**—स्त्री°—-—शम्बर + अण् + ङीप्—बाजीगरी, जादूगरी
- **शाम्बरी**—स्त्री°—-—शम्बर + अण् + ङीप्—जादूगरनी
- **शाम्बविकः**—पुं°—-—शम्बु + ठक्—शंखों का व्यापारी
- **शाम्बुक**—वि°—-—शम्बुक + अण्—द्विकोषीय घोंघा
- **शाम्बूक**—वि°—-—-—द्विकोषीय घोंघा

- **शाम्भव**—वि०———शम्भु + अण्—शिवसम्बन्धी
- **शाम्भवः**—पुं०——————शिवोपासक
- **शाम्भवः**—पुं०——————शिव जी का पुत्र
- **शाम्भवः**—पुं०——————कपूर
- **शाम्भवः**—पुं०——————एक प्रकार का विष
- **शाम्भवम्**—नपुं०——————देवदारु वृक्ष
- **शाम्भवी**—स्त्री०———शाम्भव + ङीप्—पार्वती
- **शाम्भवी**—स्त्री०———शाम्भव + ङीप्—एक पौधा, नीलदूर्बा
- **शायकः**—पुं०———शो + ण्वुल्—बाण
- **शायकः**—पुं०———शो + ण्वुल्—तलवार
- **शार्**—चुरा० उभ० < शारयति>, <शारयते>——————दुर्बल करना
- **शार्**—चुरा० उभ० < शारयति>, <शारयते>——————कमज़ोर होना
- **शार**—वि०———शार् + अच्, शृ + घञ् वा—चितकबरा, धब्बेदार चित्तीदार, शबल
- **शारः**—पुं०——————रंगबिरंगा रंग
- **शारः**—पुं०——————हरा रंग
- **शारः**—पुं०——————हवा, वायु
- **शारः**—पुं०——————शतरंज का मोहरा, गोट
- **शारः**—पुं०——————क्षति पहुँचाने वाला, आघात करने वाला
- **शारङ्गः**—पुं०———शारम् अङ्गम् यस्य - ब० स०—चातक पक्षी
- **शारङ्गः**—पुं०———शारम् अङ्गम् यस्य - ब० स०—मोर
- **शारङ्गः**—पुं०———शारम् अङ्गम् यस्य - ब० स०—भौंरा
- **शारङ्गः**—पुं०———शारम् अङ्गम् यस्य - ब० स०—हरिण
- **शारङ्गः**—पुं०———शारम् अङ्गम् यस्य - ब० स०—हाथी
- **शारङ्गी**—स्त्री०———शारङ्ग + ङीष्—एक संगीत वाद्य विशेष जो गज से बजाया जाता है,
- **शारद**—वि०———शरदि भवम्-अण्—पतझड़ से संबंध रखने वाला, शरत्कालीन
- **शारदी**—स्त्री०——————पतझड़ से संबंध रखने वाला, शरत्कालीन
- **शारद**—वि०———शरदि भवम्-अण्—वार्षिक

- **शारद**—वि°—-—शरदि भवम्-अण्—नया, नूतन
- **शारद**—वि°—-—शरदि भवम्-अण्—अनुभवहीन, नौसिखिया
- **शारद**—वि°—-—शरदि भवम्-अण्—विनीत, शर्मीला, लज्जालु
- **शारद**—वि°—-—शरदि भवम्-अण्—शंकालु, साहसहीन
- **शारदः**—पुं°—-—-—वर्ष
- **शारदः**—पुं°—-—-—शरत्कालीन बीमारी
- **शारदः**—पुं°—-—-—शरत्कालीन धूप
- **शारदः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का लोबिया या उड़द
- **शारदः**—पुं°—-—-—बकुल का वृक्ष, मौलसिरी
- **शारदी** —स्त्री°—-—-—कार्तिक मास की पूर्णिमा
- **शारदम्**—नपुं°—-—-—अनाज, धान्य
- **शारदम्**—नपुं°—-—-—श्वेत कमल
- **शारदा**—स्त्री°—-—-—एक प्रकार की वीणा या सारंगी
- **शारदा**—स्त्री°—-—-—दुर्गा
- **शारदा**—स्त्री°—-—-—सरस्वती
- **शारदिकः**—पुं°—-—शरद् + ठञ्—शरत्कालीन रोग
- **शारदिकः**—पुं°—-—शरद् + ठञ्—शरत्कालीन धूप या गर्मी
- **शारदिकम्**—नपुं°—-—-—शरत्कालीन या वार्षिक श्राद्ध
- **शारदीय**—वि°—-—शरद् + छ—शरत्कालीन, पतझड़ संबन्धी
- **शारिः**—पुं°—-—शृ + इञ्—शतरंज का मोहरा, गोट
- **शारिः**—पुं°—-—शृ + इञ्—छोटी गोल गेंद
- **शारिः**—पुं°—-—शृ + इञ्—एक प्रकार का पासा
- **शारि**—स्त्री°—-—-—सारिका पक्षी, मैना
- **शारि**—स्त्री°—-—-—जालसाज़ी, चाल
- **शारि**—स्त्री°—-—-—हाथी की झूल
- **शारिपट्टः**—पुं°—शारिः-पट्टः—-—शतरंज खेलने की बिसात
- **शारिफलम्**—नपुं°—शारिः-फलम्—-—शतरंज खेलने की बिसात

- **शारिफलकः**—पुं॰—शारिः-फलकः—-—शतरंज खेलने की बिसात
- **शारिकम्**—नपुं॰—शारिः-कम्—-—शतरंज खेलने की बिसात
- **शारिका**—स्त्री॰—-—शारि + कन् + टाप्—एक पक्षी, मैना
- **शारिका**—स्त्री॰—-—शारि + कन् + टाप्—तन्त्रयुक्त वाद्ययत्रों को बजाने वाला गज
- **शारिका**—स्त्री॰—-—शारि + कन् + टाप्—शतरंज खेलना
- **शारिका**—स्त्री॰—-—शारि + कन् + टाप्—शतरंज का मोहरा, गोटी
- **शारी**—स्त्री॰—-—शारि + ङीष्—एक पक्षी, मैना
- **शारीर**—वि॰—-—शरीर + अण्—शरीर से संबद्ध शारीरिक, दैहिक
- **शारीर**—वि॰—-—शरीर + अण्—शरीरधारी, मूर्तिमान्
- **शारीरः**—पुं॰—-—-—शरीरधारी,जीवात्मा, मानवात्मा, वैयक्तिक आत्मा
- **शारीरः**—पुं॰—-—-—साँड़
- **शारीरः**—पुं॰—-—-—एक प्रकार की औषधि
- **शारीरक**—वि॰—-—शरीर + कन् + अण्—शरीर सम्बन्धी
- **शारीरकम्**—नपुं॰—-—-—मूर्तिमान् जीव, जीव के स्वरूप की पृच्छा (ब्रह्मसूत्रों पर शङ्कराचार्य द्वारा किया गया भाष्य)
- **शारीरकसूत्रम्**—नपुं॰—शारीरक-सूत्रम्—-—वेदान्त दर्शन के सूत्र
- **शारीरिक**—वि॰—-—शरीर + ठक्—दैहिक, शरीर संबन्धी, भौतिक
- **शारुक**—वि॰—-—शॄ + उकञ्—अनिष्टकर, चोट पहुँचाने वाला, उपद्रवी
- **शार्कक**ः—पुं॰—-—शर्क + अण् + कन्—दानेदार चमकीली खांड़, मिसरी
- **शार्कर**—वि॰—-—शर्करा + अण्—चीनी का बना हुआ, शर्करामिश्रित
- **शार्कर**—वि॰—-—शर्करा + अण्—पथरीला, कंकरीला
- **शार्करः**—पुं॰—-—-—कंकरीला स्थान
- **शार्करः**—पुं॰—-—-—दूध का झाग, पपड़ी
- **शार्करः**—पुं॰—-—-—मलाई
- **शार्ङ्ग**—वि॰—-—शृङ्ग + अण्—सींग का बना हुआ, सींग वाला
- **शार्ङ्ग**—वि॰—-—शृङ्ग + अण्—धनुर्धारी, धनुष से सुसज्जित
- **शार्ङ्गः** —पुं॰—-—-—धनुष
- **शार्ङ्गः** —पुं॰—-—-—विष्णु का धनुष

- **शार्ङ्गम्**—नपुं॰———-—धनुष
- **शार्ङ्गम्**—नपुं॰———-—विष्णु का धनुष
- **शार्ङ्गधन्वन्**—पुं॰—शार्ङ्ग-धन्वन्—-—विष्णु के विशेषण
- **शार्ङ्गधरः**—पुं॰—शार्ङ्ग-धरः—-—विष्णु के विशेषण
- **शार्ङ्गपाणिः**—पुं॰—शार्ङ्ग-पाणिः—-—विष्णु के विशेषण
- **शार्ङ्गधृत्**—पुं॰—शार्ङ्ग-धृत्—-—विष्णु के विशेषण
- **शार्ङ्गिन्**—पुं॰—-—शार्ङ्ग + इनि—तीरंदाज, धनुर्धारी
- **शार्ङ्गिन्**—पुं॰—-—शार्ङ्ग + इनि—विष्णु का विशेषण
- **शार्दूलः**—पुं॰—-—शृ + ऊलल्, दुक् च—व्याघ्र
- **शार्दूलः**—पुं॰—-—शृ + ऊलल्, दुक् च—चीता
- **शार्दूलः**—पुं॰—-—शृ + ऊलल्, दुक् च—राक्षस
- **शार्दूलः**—पुं॰—-—शृ + ऊलल्, दुक् च—एक पक्षी
- **शार्दूलः**—पुं॰—-—शृ + ऊलल्, दुक् च— प्रमुख या पूज्य पुरुष, अग्रणी
- **शार्दूलचर्मन्**—नपुं॰—शार्दूल-चर्मन्—-—व्याघ्र की खाल
- **शार्दूलविक्रीडितम्**—नपुं॰—शार्दूल-विक्रीडितम्—-—चीते की क्रीड़ा
- **शार्दूलविक्रीडितम्**—नपुं॰—शार्दूल-विक्रीडितम्—-—छन्द या वृत्त
- **शार्वर**—वि॰—-—शर्वरी + अण्—रात्रिकालीन
- **शार्वर**—वि॰—-—शर्वरी + अण्—उपद्रवी, प्राणहर
- **शार्वरम्**—नपुं॰———-—अंधकार, धुप अंधेरा
- **शार्वरी**—स्त्री॰———-—रात
- **शाल्**—भ्वा॰ आ॰ <शालते>———-—प्रशंसा करना, खुशामद करना
- **शाल्**—भ्वा॰ आ॰ <शालते>———-—चमकना
- **शाल्**—भ्वा॰ आ॰ <शालते>———-—पूरित होना
- **शाल्**—भ्वा॰ आ॰ <शालते>———-—कहना
- **शालः**—पुं॰—-—शल् + घञ्—एक वृक्ष
- **शालः**—पुं॰—-—शल् + घञ्—वृक्ष, पेड़
- **शालः**—पुं॰—-—शल् + घञ्—बाड़ा, बाड़

- **शालः**—पुं°—-—शल् + घञ्—एक प्रकार की मछली
- **शालः**—पुं°—-—शल् + घञ्—राजा शालिवाहन
- **शालग्रामः**—पुं°—शालः-ग्रामः—-—विष्णु भगवान् की आदर्श प्रस्तरमूर्ति
- **शालगिरि**—पुं°—शालः- गिरि—-—पर्वत का नाम
- **शालशिला**—स्त्री°—शालः-शिला—-—शालग्राम पत्थर
- **शालजः**—पुं°—शालः-जः—-—सालवृक्ष का प्रस्त्राव, राव
- **शालनिर्यासः**—पुं°—शालः-निर्यासः—-—सालवृक्ष का प्रस्त्राव, राव
- **शालभञ्जिका**—स्त्री°—शालः-भञ्जिका—-—गुड़िया, पुत्तलिका, मूर्ति
- **शालभञ्जिका**—स्त्री°—शालः-भञ्जिका—-—वेश्या, रंडी
- **शालभञ्जी**—स्त्री°—शालः-भञ्जी—-—गुड़िया, पुत्तलिका
- **शालवेष्टः**—पुं°—शालः-वेष्टः—-—साल के पेड़ से निकली राल
- **शालसारः**—पुं°—शालः-सारः—-—उत्कृष्ट वृक्ष
- **शालसारः**—पुं°—शालः-सारः—-—हींग
- **शालवः**—पुं°—-—शाल + वल् + ड—लोध्र वृक्ष
- **शाला**—स्त्री°—-—शाल् + अच् + टाप्—कक्ष, प्रकोष्ट, बैठक, कमरा
- **शाला**—स्त्री°—-—शाल् + अच् + टाप्—घर, आवास
- **शाला**—स्त्री°—-—शाल् + अच् + टाप्—वृक्ष की मुख्य शाखा
- **शाला**—स्त्री°—-—शाल् + अच् + टाप्—वृक्ष का तना
- **शालाञ्जिरः**—पुं°—शाला-अञ्जिरः—-—मिट्टी का कसोरा
- **शालाञ्जिरम्**—नपुं°—शाला-अञ्जिरम्—-—मिट्टी का कसोरा
- **शालामृगः**—पुं°—शाला-मृगः—-—गीदड़
- **शालावृकः**—पुं°—शाला-वृकः—-—कुत्ता
- **शालावृकः**—पुं°—शाला-वृकः—-—भेड़िया हरिण
- **शालावृकः**—पुं°—शाला-वृकः—-—बिल्ली
- **शालावृकः**—पुं°—शाला-वृकः—-—गीदड़
- **शालावृकः**—पुं°—शाला-वृकः—-—बन्दर
- **शालाकः**—पुं°—-—-—पाणिनि

- **शालाकिन्**—पुं॰—-—शालाक + इन्—भाला रखने वाला, बर्छीधारी
- **शालाकिन्**—पुं॰—-—-—जर्राह
- **शालाकिन्**—पुं॰—-—-—नाई
- **शालातुरीयः**—पुं॰—-—शलातुर + छ—पाणिनि का विशेषण
- **शालारम्**—नपुं॰—-—शाला + ऋ + अण्—ज़ीना, सीढ़ी
- **शालारम्**—नपुं॰—-—शाला + ऋ + अण्—पिंजरा
- **शालिः**—पुं॰—-—शाल् + णिनि—चावल
- **शालिः**—पुं॰—-—शाल् + णिनि—गंधबिलाव
- **शाल्योदनः**—पुं॰—शालि-ओदनः—-—भात (उत्कृष्टतर प्रकार का)
- **शाल्योदनम्**—नपुं॰—शालि-ओदनम्—-—भात (उत्कृष्टतर प्रकार का)
- **शालिगोपी**—स्त्री॰—शालि-गोपी—-—चावल के खेत की रखवाली करने वाली स्त्री
- **शालिचूर्णः**—पुं॰—शालि-चूर्णः—-—चावल का आटा
- **शालिचूर्णम्**—नपुं॰—शालि-चूर्णम्—-—चावल का आटा
- **शालिपिष्टम्**—नपुं॰—शालि-पिष्टम्—-—स्फटिक
- **शालिभवनम्**—नपुं॰—शालि-भवनम्—-—चावल का खेत
- **शालिवाहनः**—पुं॰—शालि-वाहनः—-—भारत का एक विख्यात राजा जिसके नाम से ख्रिस्ताब्द ७८ में एक संवत्सर आरं हुआ
- **शालिहोत्रः**—पुं॰—शालि-होत्रः—-—पशुचिकित्सा पर ग्रन्थप्रणेता
- **शालिहोत्रः**—पुं॰—शालि-होत्रः—-—घोड़ा
- **शालिहोत्रिन्**—पुं॰—शालि-होत्रिन्—-—घोड़ा
- **शालिकः**—पुं॰—-—शालि + कै + क—जुलाहा
- **शालिकः**—पुं॰—-—शालि + कै + क—मार्गकर, शुल्क
- **शालिन्**—वि॰—-—शाला + इनि—सहित, युक्त, सम्पन्न, चमकीला, चमकदार
- **शालिन्**—वि॰—-—शाला + इनि—घरेलू
- **शालिनी**—स्त्री॰—-—शालिन् + ङीप्—घर की स्वामिनी, गृहिणी
- **शालिनी**—स्त्री॰—-—शालिन् + ङीप्—छन्द का नाम
- **शालीन**—वि॰—-—शाला + खञ्—विनीत, लज्जाशील, शर्मीला, लज्जालु
- **शालीन**—वि॰—-—शाला + खञ्—सदृश, समान

- **शालीनः**—पुं°————गृहस्थ
- **शालीनी कृ**—————विनयी बनाना, विनम्र करना
- **शालुः**—पुं°———शाल् + उण्—मेंढक
- **शालुः**—पुं°———शाल् + उण्—एक प्रकार का गन्ध द्रव्य
- **शालु**—नपुं°————कुमुदिनी की जड़
- **शालुकम्**—नपुं°————कुमुदिनी की जड़
- **शालुकम्**—नपुं°————जायफल
- **शालूकम्**—नपुं°———शल् + ऊकण्—कुमुदिनी की जड़
- **शालूकम्**—नपुं°———शल् + ऊकण्—जायफल
- **शालुकः**—पुं°————मेंढक
- **शालुरः** —पुं°————मेंढक
- **शालूरः**—पुं°———शाल् + ऊर्—मेंढक
- **शालेयम्**—नपुं°———शालि + ढक्—चावलों का खेत
- **शालोत्तरीयः**—पुं°———शालोत्तरे ग्रामे भवः - छ—पाणिनि का विशेषण
- **शाल्मलः**—पुं°———शाल् + मलच्—सेमल का पेड़
- **शाल्मलः**—पुं°———शाल् + मलच्—भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक
- **शाल्मलिः**—पुं°———शाल् + मलिच्—सेमल का पेड़
- **शाल्मलिः**—पुं°———शाल् + मलिच्—भू-मण्डल के सात बड़े खण्ड़ों में से एक
- **शाल्मलिः**—पुं°———शाल् + मलिच्—नरक का एक भेद
- **शाल्मलिस्थः**—पुं°—शाल्मलि-स्थः———गरुड़ का विशेषण
- **शाल्मली**—स्त्री°———शाल्मलि + ङीष्—सेमल का पेड़
- **शाल्मली**—स्त्री°———शाल्मलि + ङीष्—पाताल लोक की एक नदी
- **शाल्मली**—स्त्री°———शाल्मलि + ङीष्—नरक का एक भेद
- **शाल्मलीवेष्टः**—पुं°—शाल्मली-वेष्टः———सेमल के पेड़ का गोंद
- **शाल्मलीवेष्टकः**—पुं°—शाल्मली-वेष्टकः———सेमल के पेड़ का गोंद
- **शाल्वः**—पुं°———शाल् + व—एक देश का नाम
- **शाल्वः**—पुं°———शाल् + व—शाल्व देश का राजा

- **शाव**—वि०—-—शव + अण्—शवसम्बन्धी, (किसी रिस्तेदार की) मृत्यु से उत्पन्न
- **शाव**—वि०—-—शव + अण्—भूरे रङ्ग का, गहरे पीले रङ्ग का
- **शावः**—पुं०—-—-—किसी जानवर का छोटा बच्चा, कुरङ्गक, मृगछौना, वन्यपशुशावक
- **शावकः**—पुं०—-—शाव + कन्—किसी भी वन्य पशु का बच्चा
- **शाश्वत**—वि०—-—शश्वद् भवः अण्—नित्य, सनातन, चिरस्थायी
- **शाश्वतः**—पुं०—-—-—शिव
- **शाश्वतः**—पुं०—-—-—व्यास
- **शाश्वतः**—पुं०—-—-—सूर्य
- **शाश्वतम्**—अव्य०—-—-—नित्य, निरन्तर, सदा के लिए
- **शाश्वतिक**—वि०—-—शाश्वत + ठक्—नित्य, स्थायी, सनातन, सतत
- **शाश्वती**—स्त्री०—-—शाश्वत + ङीप्—पृथ्वी
- **शाष्कुल**—वि०—-—शष्कुल + अण्—मांस (या मत्स्य) भक्षी
- **शाष्कुलिकम्**—नपुं०—-—शष्कुली + ठक्—पूरियों का ढेर
- **शास्**—अदा० पर० <शास्ति>,<शिष्ट>—-—-—अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, प्रशिक्षित
- **शास्**—अदा० पर० <शास्ति>,<शिष्ट>—-—-—राज्य करना, शासन करना
- **शास्**—अदा० पर० <शास्ति>,<शिष्ट>—-—-—आज्ञा देना, समादिष्ट करना, निदेश देना, हुक्म देना
- **शास्**—अदा० पर० <शास्ति>,<शिष्ट>—-—-—कहना, सम्वाद देना, सूचित करना
- **शास्**—अदा० पर० <शास्ति>,<शिष्ट>—-—-—उपदेश देना
- **शास्**—अदा० पर० <शास्ति>,<शिष्ट>—-—-—आदेश देना, राजाज्ञा लागू करना
- **शास्**—अदा० पर० <शास्ति>,<शिष्ट>—-—-—दण्ड देना, सज़ा देना, निर्दोष बनाना
- **शास्**—अदा० पर० <शास्ति>,<शिष्ट>—-—-—सधाना, वशीभूत करना
- **अनुशास्**—अदा० पर०—अनु-शास्—-—उपदेश देना, प्रेरित करना
- **अनुशास्**—अदा० पर०—अनु-शास्—-—अध्यापन करना, शिक्षण प्रदान करना, आज्ञा देना, आदेश करना
- **अनुशास्**—अदा० पर०—अनु-शास्—-—राज्य करना, शासन करना
- **अनुशास्**—अदा० पर०—अनु-शास्—-—सज़ा देना, दण्ड देना
- **अनुशास्**—अदा० पर०—अनु-शास्—-—प्रशंसा करना, स्तुति करना
- **आशास्**—अदा० पर०—आ-शास्—-—आशीर्वाद देना, आशीर्वाद उच्चारण करना

- **आशास्**—अदा॰ पर॰—आ-शास्—-—आज्ञा देना, आदेश देना, निदेश देना (इस अर्थ में पर॰)
- **आशास्**—अदा॰ पर॰—आ-शास्—-—इच्छा करना, खोजना, आशा करना, प्रत्याशा करना
- **आशास्**—अदा॰ पर॰—आ-शास्—-—प्रशंसा करना
- **प्रशास**—अदा॰ पर॰—प्र-शास—-—अध्यापन करना, शिक्षण देना, उपदेश करना
- **प्रशास**—अदा॰ पर॰—प्र-शास—-—आदेश देना, समादिष्ट करना
- **प्रशास**—अदा॰ पर॰—प्र-शास—-—राज्य करना, शासन करना, प्रभु बनना
- **प्रशास**—अदा॰ पर॰—प्र-शास—-—दण्ड देना, सज़ा देना
- **प्रशास**—अदा॰ पर॰—प्र-शास—-—प्रार्थना करना, याचना करना, तलाश करना
- **शासनम्**—नपुं॰—-—शास् + ल्युट्—शिक्षण, अध्यापन, अनुशासन
- **शासनम्**—नपुं॰—-—शास् + ल्युट्—राज्य, प्रभुत्व, सरकार
- **शासनम्**—नपुं॰—-—शास् + ल्युट्—आज्ञा, आदेश, निदेश
- **शासनम्**—नपुं॰—-—शास् + ल्युट्—राजविज्ञप्ति, अधिनियम, राजाज्ञा
- **शासनम्**—नपुं॰—-—शास् + ल्युट्—विधि, नियम
- **शासनम्**—नपुं॰—-—शास् + ल्युट्—अग्रहार, राज़ा द्वारा दान की हुई भूमि, अधिकार-पत्र
- **शासनम्**—नपुं॰—-—शास् + ल्युट्—पट्टा, दस्तावेज़, लिखित समझौता
- **शासनम्**—नपुं॰—-—शास् + ल्युट्—आवेशों का नियन्त्रण
- **शासनपत्रम्**—नपुं॰—शासनम्-पत्रम्—-—वह ताम्रपत्र जिस पर भूदान की राजाज्ञा खोदी गई हो
- **शासनपत्रम्**—नपुं॰—शासनम्-पत्रम्—-—वह कागज जिस पर कोई राजाज्ञा अंकित हो
- **शासनहारिन्**—पुं॰—शासनम्-हारिन्—-—राजदूत, संदेशवाहक
- **शासित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शास् + क्त—राज्य किया गया, शासन किया गया
- **शासित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शास् + क्त—दण्डित
- **शासितृ**—पुं॰—-—शास् + तृच्—राज्य करने वाला, शासक
- **शासितृ**—पुं॰—-—शास् + तृच्—दण्ड देने वाला
- **शास्तृ**—पुं॰—-—शास् + तृच्, इडभावः—अध्यापक, शिक्षक
- **शास्तृ**—पुं॰—-—शास् + तृच्, इडभावः—शासक, राजा, प्रभु
- **शास्तृ**—पुं॰—-—शास् + तृच्, इडभावः—पिता
- **शास्तृ**—पुं॰—-—शास् + तृच्, इडभावः—बुद्ध या जैन धर्म का गुरु, आचार्य

- **शास्त्रम्**—नपुं॰——शिष्यतेऽनेने- शास् + ष्ट्रन्—आज्ञा, समादेश, नियम, विधि
- **शास्त्रम्**—नपुं॰——शिष्यतेऽनेने- शास् + ष्ट्रन्—वेदविधि, धर्मशास्त्र की आज्ञा
- **शास्त्रम्**—नपुं॰——शिष्यतेऽनेने- शास् + ष्ट्रन्—धार्मिक ग्रन्थ, वेद, धर्मशास्त्र
- **शास्त्रम्**—नपुं॰——शिष्यतेऽनेने- शास् + ष्ट्रन्—विद्याविभाग, विज्ञान
- **शास्त्रम्**—नपुं॰——शिष्यतेऽनेने- शास् + ष्ट्रन्—पुस्तक, ग्रन्थ
- **शास्त्रम्**—नपुं॰——शिष्यतेऽनेने- शास् + ष्ट्रन्—सिद्धान्त
- **शास्त्रातिक्रमः**—पुं॰—शास्त्रम्-अतिक्रमः——वैदिक विधियों का उल्लंघन, धार्मिक प्रामाणिकता की अवहेलना
- **शास्त्राननुष्ठानम्**—नपुं॰—शास्त्रम्-अननुष्ठानम्——वैदिक विधियों का उल्लंघन, धार्मिक प्रामाणिकता की अवहेलना
- **शास्त्रानुष्ठानम्**—नपुं॰—शास्त्रम्-अनुष्ठानम्——वेदविधि का पालन या तदनुरूपता
- **शास्त्राभिज्ञ**—वि॰—शास्त्रम्-अभिज्ञ——शास्त्रों में निष्णात
- **शास्त्रार्थः**—पुं॰—शास्त्रम्-अर्थः——वेदविधि का अर्थ
- **शास्त्रार्थः**—पुं॰—शास्त्रम्-अर्थः——वैदिक विधि या शास्त्रीय वक्तव्य
- **शास्त्राचरणम्**—नपुं॰—शास्त्रम्-आचरणम्——वेदविधि का पालन
- **शास्त्रोक्त**—वि॰—शास्त्रम्-उक्त——शास्त्रविधि से विहित, शास्त्रों की आज्ञा, वैध, क़ानूनी
- **शास्त्रकारः**—पुं॰—शास्त्रम्-कारः——किसी धर्मशास्त्र का रचयिता
- **शास्त्रकारः**—पुं॰—शास्त्रम्-कारः——ग्रन्थ प्रणेता
- **शास्त्रकृत्**—पुं॰—शास्त्रम्-कृत्——किसी धर्मशास्त्र का रचयिता
- **शास्त्रकृत्**—पुं॰—शास्त्रम्-कृत्——ग्रन्थ प्रणेता
- **शास्त्रकोविद**—वि॰—शास्त्रम्-कोविद——शास्त्रों में निष्णात
- **शास्त्रगण्डः**—नपुं॰—शास्त्रम्-गण्डः——दिखाऊ पाठक, हलका अध्ययन करने वाला विद्यार्थी, पल्लवग्राही
- **शास्त्रचक्षुस्**—नपुं॰—शास्त्रम्-चक्षुस्——व्याकरण
- **शास्त्रज्ञ**—वि॰—शास्त्रम्-ज्ञ——शास्त्रों का जानकार
- **शास्त्रविद्**—वि॰—शास्त्रम्-विद्——शास्त्रों का जानकार
- **शास्त्रज्ञानम्**—नपुं॰—शास्त्रम्-ज्ञानम्——धर्मशास्त्र का ज्ञान, वेद की जानकारी
- **शास्त्रतत्त्वम्**—नपुं॰—शास्त्रम्-तत्त्वम्——शास्त्रों में वर्णित सचाई, वैदिक तत्त्व
- **शास्त्रदर्शिन्**—वि॰—शास्त्रम्-दर्शिन्——धर्मशास्त्रों का ज्ञाता
- **शास्त्रदृष्ट**—वि॰—शास्त्रम्-दृष्ट——धर्मशास्त्रों में विहित या उक्त

- **शास्त्रदृष्टिः**—स्त्री°—शास्त्रम्-दृष्टिः—-—शास्त्रीय दृष्टिकोण
- **शास्त्रयोनिः**—पुं°स्त्री°—शास्त्रम्-योनिः—-—शास्त्रों का स्रोत या उद्गमस्थान
- **शास्त्रविधानम्**—नपुं°—शास्त्रम्-विधानम्—-—शास्त्रीय विधि, वेदाज्ञा
- **शास्त्रविधिः**—पुं°—शास्त्रम्-विधिः—-—शास्त्रीय विधि, वेदाज्ञा
- **शास्त्रविप्रतिषेधः**—पुं°—शास्त्रम्-विप्रतिषेधः—-—शास्त्रीय विधियों का पारस्परिक विरोध, विधि-विधान की असंगति
- **शास्त्रविप्रतिषेधः**—पुं°—शास्त्रम्-विप्रतिषेधः—-—वेद विधि के विरुद्ध आचरण
- **शास्त्रविरोधः**—पुं°—शास्त्रम्-विरोधः—-—शास्त्रीय विधियों का पारस्परिक विरोध, विधि-विधान की असंगति
- **शास्त्रविरोधः**—पुं°—शास्त्रम्-विरोधः—-—वेद विधि के विरुद्ध आचरण
- **शास्त्रविमुख**—वि°—शास्त्रम्-विमुख—-—अध्ययन से पराङ्मुख
- **शास्त्रविरुद्ध**—वि°—शास्त्रम्-विरुद्ध—-—शास्त्रों के विपरीत, अवैध, गैरक़ानूनी
- **शास्त्रव्युत्पत्तिः**—स्त्री° —शास्त्रम्-व्युत्पत्तिः—-—धर्मशास्त्रों का अन्तरंग ज्ञान, शास्त्रों में प्रवीणता
- **शास्त्रशिल्पिन्**—पुं°—शास्त्रम्-शिल्पिन्—-—काश्मीरदेश
- **शास्त्रसिद्ध**—वि°—शास्त्रम्-सिद्ध—-—धर्मशास्त्रों के प्रमाणानुसार स्थापित
- **शास्त्रिन्**—वि°—-—शास्त्र + इनि—शास्त्रों में अभिज्ञ, कुशल
- **शास्त्रिन्**—पुं°—-—शास्त्र + इनि—शास्त्रों में पारंगत, विद्वान् पुरुष, महान् पंडित
- **शास्त्रीय**—वि°—-—शास्त्रेण विहितः छ—वेदविहित, शास्त्रानुमोदित
- **शास्त्रीय**—वि°—-—शास्त्रेण विहितः छ—वैज्ञानिक
- **शास्य**—वि°—-—शास् + ण्यत्—सिखलाये जाने योग्य, उपदेश दिये जाने योग्य
- **शास्य**—वि°—-—शास् + ण्यत्—विनियमित या शासित किये जाने के योग्य
- **शास्य**—वि°—-—शास् + ण्यत्—दण्डनीय, दण्डाई
- **शि**—स्वा° उभ° <शिनोति>, <शिनुते>—-—-—तेज़ करना, पैनाना
- **शि**—स्वा° उभ° <शिनोति>, <शिनुते>—-—-—कृश करना, पतला करना
- **शि**—स्वा° उभ° <शिनोति>, <शिनुते>—-—-—उत्तेजित करना
- **शि**—स्वा° उभ° <शिनोति>, <शिनुते>—-—-—सावधान होना
- **शि**—स्वा° उभ° <शिनोति>, <शिनुते>—-—-—तीक्ष्ण होना
- **शिः**—पुं°—-—शि + क्विप्—माङ्गलिकता, स्वरसाम्यता
- **शिः**—पुं°—-—शि + क्विप्—स्वस्थता, सौम्यता, शान्ति, अमन-चैन

- **शिः**—पुं°———शि + क्विप्—शिव का विशेषण
- **शिंशपा**—पुं°———शिवं पाति-शिव + पा + क, पृषो° साधुः—शीशम का पेड़
- **शिंशपा**—पुं°———शिवं पाति-शिव + पा + क, पृषो° साधुः—अशोक वृक्ष
- **शिक्कु**—वि°———सिच् + कु, पृषो°—सुस्त, आलसी, अकर्मण्य
- **शिक्थम्**—नपुं°———सिच् + थक्, पृषो°—मोम
- **शिक्यम्**—नपुं°———स्रंस् + यत्, कुगागमः, शि आदेशः —(रस्सी से बुना हुआ) छीका, झोला
- **शिक्यम्**—नपुं°———स्रंस् + यत्, कुगागमः, शि आदेशः —बहंगी पर लटका कर ले जाये जाने वाला बोझ
- **शिक्या**—स्त्री°———स्रंस् + यत्, कुगागमः, शि आदेशः-शिक्य + टाप्—(रस्सी से बुना हुआ) छींका, झोला
- **शिक्या**—स्त्री°———स्रंस् + यत्, कुगागमः, शि आदेशः-शिक्य + टाप्—बहंगी पर लटका कर ले जाये जाने वाला बोझ
- **शिक्यित**—वि°———शिक्य + णिच् + क्त—छींके में लटकाया हुआ
- **शिक्ष्**—भ्वा° आ° <शिक्षते>, <शिक्षित>——————सीखना, अध्ययन करना, ज्ञानार्जन करना
- **शिक्षकः**—पुं°———शिक्ष् + णिच् + ण्वुल्—सीखने वाला
- **शिक्षकः**—पुं°———शिक्ष् + णिच् + ण्वुल्—अध्यापक, सिखाने वाला
- **शिक्षणम्**—नपुं°———शिक्ष् + ल्युट्—सीखना, अधिगम, ज्ञानार्जन
- **शिक्षणम्**—नपुं°———शिक्ष् + ल्युट्—अध्यापन, सिखाना
- **शिक्षमाणः**—पुं°———शिक्ष् + शानच्—शिष्य, विद्यार्थी, विद्याभ्यासी
- **शिक्षा**—स्त्री°———शिक्ष् भाव अ + टाप्—अधिगम, अध्ययन, ज्ञानाभिग्रहण
- **शिक्षा**—स्त्री°———शिक्ष् भाव अ + टाप्—किसी कार्य को करने के योग्य होने की इच्छा, निष्णात होने की इच्छा
- **शिक्षा**—स्त्री°———शिक्ष् भाव अ + टाप्—अध्यापन, शिक्षण, प्रशिक्षण
- **शिक्षा**—स्त्री°———शिक्ष् भाव अ + टाप्—छः वेदांगों में से एक जिसके द्वारा शब्दों का सही उच्चारण तथा सन्धि के नियम सिखाये जाते है
- **शिक्षा**—स्त्री°———शिक्ष् भाव अ + टाप्—विनय, विनम्रता
- **शिक्षाकरः**—पुं°—शिक्षा-करः———अद्धापक, शिक्षक
- **शिक्षाकरः**—पुं°—शिक्षा-करः———व्यास
- **शिक्षानरः**—पुं°—शिक्षा-नरः———इन्द्र का विशेषण
- **शिक्षाशक्तिः**—स्त्री°—शिक्षा-शक्तिः———कुशलता
- **शिक्षित**—भू° क° कृ°———शिक्ष् + क्त, शिक्षा जाताऽस्य -तार° इतच्—अधिगत, अधीत
- **शिक्षित**—भू° क° कृ°———शिक्ष् + क्त, शिक्षा जाताऽस्य -तार° इतच्—अध्यापित, सिखाया गया

- **शिक्षित**—भू॰ क॰ कृ॰—–—शिक्ष् + क्त, शिक्षा जाताऽस्य -तार॰ इतच्—प्रशिक्षित, अनुशासित
- **शिक्षित**—भू॰ क॰ कृ॰—–—शिक्ष् + क्त, शिक्षा जाताऽस्य -तार॰ इतच्—सधाया हुआ, विनयशील
- **शिक्षित**—भू॰ क॰ कृ॰—–—शिक्ष् + क्त, शिक्षा जाताऽस्य -तार॰ इतच्—कुशल, चतुर
- **शिक्षित**—भू॰ क॰ कृ॰—–—शिक्ष् + क्त, शिक्षा जाताऽस्य -तार॰ इतच्—विनीत, लज्जाशील
- **शिक्षिताक्षरः**—पुं॰—शिक्षित-अक्षरः—-—शिष्य
- **शिक्षितायुध**—वि॰—शिक्षित-आयुध—-—हथियारों के संचालन में अभिज्ञ
- **शिखण्डः**—पुं॰—-—शिखाममति-अम् + ड, शक॰ पररूपम्—मुंडन-संस्कार के अवसर पर रखी गई शिखा, चोटी, या दोनों पार्श्व में छोड़े गये बाल, काकपक्ष
- **शिखण्डः**—पुं॰—-—शिखाममति-अम् + ड, शक॰ पररूपम्—मोर की पूँछ
- **शिखण्डकः**—पुं॰—–—शिखण्ड इव + कन्—चूडाकर्म संस्कार के अवसर पर सिर पर रक्खी गई चोटी
- **शिखण्डकः**—पुं॰—–—शिखण्ड इव + कन्—सिर के पार्श्वभागों में छोड़े गये बाल
- **शिखण्डकः**—पुं॰—–—शिखण्ड इव + कन्—कलंगी, बालों का गुच्छा, चूडा या शेखर
- **शिखण्डकः**—पुं॰—–—शिखण्ड इव + कन्—मयूर पुच्छ
- **शिखण्डिकः**—पुं॰—-—शिखण्डिन् + कै + कः—मुर्गा
- **शिखण्डिका**—स्त्री॰—-—-—मुंडन-संस्कार के अवसर पर रखी गई शिखा, चोटी, या दोनों पार्श्व में छोड़े गये बाल, काकपक्ष
- **शिखण्डिन्**—वि॰—–—शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि—कलगीदार, शिखाधारी
- **शिखण्डिन्**—पुं॰—-—शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि—मोर
- **शिखण्डिन्**—पुं॰—-—शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि—मुर्गा
- **शिखण्डिन्**—पुं॰—–—शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि—बाण
- **शिखण्डिन्**—पुं॰—–—शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि—मोर की पूँछ
- **शिखण्डिन्**—पुं॰—–—शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि—एक प्रकार की चमेली
- **शिखण्डिन्**—पुं॰—–—शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि—विष्णु
- **शिखण्डिन्**—पुं॰—–—शिखण्डोऽस्त्यस्य इनि—द्रुपद के एक पुत्र का नाम
- **शिखण्डिनी**—स्त्री॰—-—शिखण्डिण् + ङीप्—मोरनी
- **शिखण्डिनी**—स्त्री॰—–—शिखण्डिण् + ङीप्—एक प्रकार की चमेली
- **शिखण्डिनी**—स्त्री॰—–—शिखण्डिण् + ङीप्—द्रुपद की पुत्री
- **शिखरः**—पुं॰—–—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—चोटी, पहाड़ का सिरा या शृंग

- **शिखरः**—पुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—वृक्ष का सिर या चोटी
- **शिखरः**—पुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—कलगी, चूडा
- **शिखरः**—पुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—तलवार की नोक या धार
- **शिखरः**—पुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—चोटी, शृंग, शीर्षबिन्दु
- **शिखरः**—पुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—कांख, बगल
- **शिखरः**—पुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—बालों का कड़ा होना
- **शिखरः**—पुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—अरवी चमेली की कली
- **शिखरः**—पुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—एक लाल की भांति मणि
- **शिखरम्**—नपुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—चोटी, पहाड़ का सिरा या शृंग
- **शिखरम्**—नपुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—वृक्ष का सिर या चोटी
- **शिखरम्**—नपुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—कलगी, चूडा
- **शिखरम्**—नपुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—तलवार की नोक या धार
- **शिखरम्**—नपुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—चोटी, शृंग, शीर्षबिन्दु
- **शिखरम्**—नपुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—कांख, बगल
- **शिखरम्**—नपुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—बालों का कड़ा होना
- **शिखरम्**—नपुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—अरवी चमेली की कली
- **शिखरम्**—नपुं°—-—शिखा अस्त्यस्य-अरच् आलोपः—एक लाल की भांति मणि
- **शिखरवासिनी**—स्त्री°—शिखरः-वासिनी—-—दुर्गा का विशेषण
- **शिखरिणी**—स्त्री°—-—शिखरिन् + ङीप्—नारीरत्न
- **शिखरिणी**—स्त्री°—-—शिखरिन् + ङीप्—चीनी मिश्रित दही जिसमें मसाले पड़े हों, श्रीखंड
- **शिखरिणी**—स्त्री°—-—शिखरिन् + ङीप्—रोमावली जो वक्षःस्थल से चलकर नाभि को पार कर जाती है
- **शिखरिणी**—स्त्री°—-—शिखरिन् + ङीप्—एक छन्द का नाम
- **शिखरिन्**—वि°—-—शिखरमस्त्यस्य इनि—चोटी वाला, शिखाधारी
- **शिखरिन्**—वि°—-—शिखरमस्त्यस्य इनि—नुकीला, शिखरयुक्त
- **शिखरिन्**—पुं°—-—शिखरमस्त्यस्य इनि—पहाड़ी दुर्ग
- **शिखरिन्**—पुं°—-—शिखरमस्त्यस्य इनि—वृक्ष
- **शिखरिन्**—पुं°—-—शिखरमस्त्यस्य इनि—टिटिहरी

- **शिखरिन्**—पुं°—-—शिखरमस्त्यस्य इनि—अपामार्ग का पौधा
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—सिर को चोटी पर बालों का गुच्छा
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—चोटी, शिखाग्रन्थि
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—चूड़ा, कलगी
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—चोटी, शिखर, शीर्षबिन्दु
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—तेज़ सिरा, धार, नोक या सिरा
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—वस्त्र का छोर
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—अग्नि ज्वाला
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—प्रकाश की किरण
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—मोर की कलगी
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—जटायुक्त जड़
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—शाखा (विशेष रूप से जड़ पकड़ती हुई)
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—प्रधान या मुखिया
- **शिखा**—स्त्री°—-—शि + खक् तस्य नेत्वम्, पृषो°—कामज्वर
- **शिखातरुः**—पुं°—शिखा-तरुः—-—दीपाधार, दीपट
- **शिखाधरः**—पुं°—शिखा-धरः—-—मोर
- **शिखाजम्**—नपुं°—शिखा-जम्—-—मोर का पंख
- **शिखाधारः**—पुं°—शिखा-धारः—-—मोर
- **शिखामणिः**—पुं°—शिखा-मणिः—-—चूड़ामणि
- **शिखामूलम्**—नपुं°—शिखा-मूलम्—-—गाजर
- **शिखामूलम्**—नपुं°—शिखा-मूलम्—-—मूली
- **शिखावरः**—पुं°—शिखा-वरः—-—कटहल का पेड़
- **शिखावल**—वि°—शिखा-वल—-—नुकीला, कलगीदार
- **शिखावलः**—पुं°—शिखा-वलः—-—मोर
- **शिखावृक्षः**—पुं°—शिखा-वृक्षः—-—दीपाधार, दीपट
- **शिखावृद्धिः**—स्त्री°—शिखा-वृद्धिः—-—प्रतिदिन बढ़ने वाला ब्याज
- **शिखालुः**—पुं°—-—शिखा + अलुच्—मोर का कलँगी

- **शिखावत्**—वि॰—-—शिखा + मतुप्—कलगीदार
- **शिखावत्**—वि॰—-—शिखा + मतुप्—ज्वालामय
- **शिखावत्**—पुं॰—-—शिखा + मतुप्—दीपक
- **शिखावत्**—पुं॰—-—शिखा + मतुप्—आग
- **शिखिन्**—वि॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—नुकीला
- **शिखिन्**—वि॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—कलंगीदार, शिखाधारी
- **शिखिन्**—वि॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—घमंडी
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—मोर
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—अग्नि
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—मुर्गा
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—बाण
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—वृक्ष
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—दीपक
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—साँड़
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—घोड़ा
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—पहाड़
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—ब्राह्मण
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—साधु
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—केतु
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—तीन की संख्या
- **शिखिन्**—पुं॰—-—शिखा अस्त्यस्य इनि—चित्रक वृक्ष
- **शिखिकण्ठम्**—नपुं॰—शिखिन्-कण्ठम्—-—तूतिया, नीला थोथा
- **शिखिग्रीवम्**—नपुं॰—शिखिन्-ग्रीवम्—-—तूतिया, नीला थोथा
- **शिखिध्वजः**—पुं॰—शिखिन्-ध्वजः—-—कार्तिकेय का विशेषण
- **शिखिध्वजः**—पुं॰—शिखिन्-ध्वजः—-—धूआँ
- **शिखिपिच्छम्**—नपुं॰—शिखिन्-पिच्छम्—-—मोर की पूँछ, दुम
- **शिखिपुच्छम्**—नपुं॰—शिखिन्-पुच्छम्—-—मोर की पूँछ, दुम

- **शिखियूपः**—पुं°—शिखिन्-यूपः——बारहसिंगा
- **शिखिवर्धकः**—पुं°—शिखिन्-वर्धकः——गोल लौकी
- **शिखिवाहनः**—पुं°—शिखिन्-वाहनः——कार्तिकेय का विशेषण
- **शिखिशिखा**—स्त्री°—शिखिन्-शिखा——ज्वाला
- **शिखिशिखा**—स्त्री°—शिखिन्-शिखा——मोर की कलंगी
- **शिग्रुः**—पुं°——शि + रुक् गुक् च—सागभाजी
- **शिग्रुः**—पुं°——शि + रुक् गुक् च—सहिजन का पेड़
- **शिङ्ख्**—भ्वा° पर° <शिङ्खति>————जाना, हिलना-जुलना
- **शिङ्ख्**—भ्वा° पर° <शिङ्खति>————सूंघना
- **शिङ्घाणः**—पुं°——शिङ्घ् + आणक, पृषो° कलोपः—पपड़ी, झाग
- **शिङ्घाणः**—पुं°——शिङ्घ् + आणक, पृषो° कलोपः—बलगम, कफ
- **शिङ्घाणम्**—नपुं°————नाक की मैल, सिणक
- **शिङ्घाणम्**—नपुं°————लोहे का जंग
- **शिङ्घाणम्**—नपुं°————शीशे का बर्तन
- **शिङ्घाणकः**—पुं°——शिङ्घ् + अणक—नासिकामल, सिणक
- **शिङ्घाणकम्**—नपुं°——शिङ्घ् + अणक—नासिकामल, सिणक
- **शिङ्घाणकः**—पुं°————कफ, बलगम
- **शिञ्ज्**—भ्वा° अदा° आ°<शिञ्जते>, <शिङ्क्ते>, <शिञ्जयति>,<शिञ्जयते>, चुरा° उभ° <शिञ्जित>————टनटनाना, झनझनाना, खड़खड़ाना
- **शिञ्जः**—पुं°——शिञ्ज् + घञ्—टंकार, झनझनाहट, टनटन या झनझन की ध्वनि, विशेषकर झांवर आदि गहनों की झंकार
- **शिञ्जञ्जिका**—स्त्री°————कटिबंध, करधनी
- **शिञ्जा**—स्त्री°——शिञ्ज् + अ + टाप्—टंकार, झंकार आदि
- **शिञ्जा**—स्त्री°——शिञ्ज् + अ + टाप्—धनुष की डोरी
- **शिञ्जित**—भू° क° कृ°——शिञ्ज् + क्त—टंकृत, झंकृत
- **शिञ्जितम्**—नपुं°————टंकार, (झाँवर आदि गहनों की) झंकार
- **शिञ्जिनी**—स्त्री°——शिञ्ज् + णिनि + ङीप्—धनुष की डोरी
- **शिञ्जिनी**—स्त्री°——शिञ्ज् + णिनि + ङीप्—झांवर नूपुर (पैरों में पहना जाने वाला गहना)
- **शिट्**—भ्वा° पर°<शेटति>————तुच्छ समझना, घृणा करना, तिरस्कार करना

- **शित**—भू० क० कृ०—-—शो + क्त—तेज किया हुआ, पैनाया हुआ
- **शित**—भू० क० कृ०—-—शो + क्त—पतला, कृश
- **शित**—भू० क० कृ०—-—शो + क्त—छीजा हुआ-क्षीण दुर्बल, बलहीन
- **शिताग्रः**—पुं०—शित-अग्रः—-—काँटा
- **शितधारा**—वि०—शित-धारा—-—तेज धार वाला
- **शितशूकः**—पुं०—शित-शूकः—-—जौ
- **शितशूकः**—पुं०—शित-शूकः—-—गेहूँ
- **शितद्रुः**—स्त्री०—-—-—सतलुज नाम की नदी
- **शिति**—वि०—-—शि + क्तिच्—श्वेत
- **शिति**—वि०—-—शि + क्तिच्—काला
- **शितिः**—पुं०—-—-—भूर्जवृक्ष
- **शितिकण्ठः**—पुं०—शिति-कण्ठः—-—शिव का विशेषण
- **शितिकण्ठः**—पुं०—शिति-कण्ठः—-—मोर
- **शितिकण्ठः**—पुं०—शिति-कण्ठः—-—जलकुक्कुट
- **शितिच्छदः**—पुं०—शिति-छदः—-—हंस
- **शितिपक्षः**—पुं०—शिति-पक्षः—-—हंस
- **शितिरत्नम्**—नपुं०—शिति-रत्नम्—-—नीलम
- **शितिवासस्**—पुं०—शिति-वासस्—-—बलराम का विशेषण
- **शिथिल**—वि०—-—श्लथ् + किलच्, पृषो०—ढीला, धीमा, सुस्त, विश्रान्त
- **शिथिल**—वि०—-—श्लथ् + किलच्, पृषो०—विनबंधा, खुला हुआ
- **शिथिल**—वि०—-—श्लथ् + किलच्, पृषो०—वियुक्त, डाल से टूटा हुआ
- **शिथिल**—वि०—-—श्लथ् + किलच्, पृषो०—निढाल, निश्शक्त, असमर्थ
- **शिथिल**—वि०—-—श्लथ् + किलच्, पृषो०—दुर्बल, कमजोर
- **शिथिल**—वि०—-—श्लथ् + किलच्, पृषो०—पिलपिला, ढीलाढाला
- **शिथिल**—वि०—-—श्लथ् + किलच्, पृषो०—धुला हुआ
- **शिथिल**—वि०—-—श्लथ् + किलच्, पृषो०—मुर्झाया हुआ
- **शिथिल**—वि०—-—श्लथ् + किलच्, पृषो०—निष्क्रिय, निरर्थक, व्यर्थ

- **शिथिल**—वि°———श्लथ् + किलच्, पृषो°—असावधान
- **शिथिल**—वि°———श्लथ् + किलच्, पृषो°—ढीलेढाले ढंग से किया हुआ, पूरी पावन्दी के साथ जिसको सम्पन्न न किया गया हो
- **शिथिल**—वि°———श्लथ् + किलच्, पृषो°—फेंका हुआ, परित्यक्त
- **शिथिलम्**—नपुं°—————ढीलापन, शिथिलता
- **शिथिलम्**—नपुं°—————सुस्ती
- **शिथिली कृ**——————ढीला करना, खोलना, खुला छोड़ना
- **शिथिली कृ**——————छूट देना, ढील डालना
- **शिथिली कृ**——————दुर्बल करना, निर्बल करना, कमजोर बनाना
- **शिथिली कृ**——————छोड़ देना, परित्यक्त करना
- **शिथिली भू**——————ढीला होना, सुस्त होना
- **शिथिली भू**——————गिर पड़ना
- **शिथिलयति**—ना° धा° पर°—————विश्राम करना, धीमा करना, ढीला करना
- **शिथिलयति**—ना° धा° पर°—————छोड़ देना, परित्यक्त करना
- **शिथिलयति**—ना° धा° पर°—————कम करना, शान्त होने देना
- **शिथिलित**—वि°———शिथिल + इतच्—ढीला किया हुआ
- **शिथिलित**—वि°———शिथिल + इतच्—विश्रान्त, खोला हुआ
- **शिथिलित**—वि°———शिथिल + इतच्—धुला हुआ, प्रविलीन
- **शिनिः**—पुं°———शी + निः ह्रस्वश्च—यादवों के पक्ष का एक योद्धा
- **शिनिः**—पुं°———शी + निः ह्रस्वश्च—सात्यकि
- **शिपिः**—पुं°———शी + क्विप्, शी + पा + क, पृषो° ह्रस्तः इत्वं च—प्रकाश की एक किरण
- **शिपिः**—स्त्री°—————त्वचा, चमड़ा
- **शिपिः**—नपुं°—————जल
- **शिपिविष्ट**—वि°—शिपिः-विष्ट———किरणों से व्याप्त
- **शिपिविष्ट**—वि°—शिपिः-विष्ट———गंजा, गंजेसिर वाला
- **शिपिविष्ट**—वि°—शिपिः-विष्ट———कोढ़ी
- **शिपिविष्टः**—पुं°—शिपिः-विष्टः———विष्णु
- **शिपिविष्टः**—पुं°—शिपिः-विष्टः———शिव

- **शिपिविष्टः**—पुं॰—शिपिः-विष्टः—-—गंजी खोपड़ी वाला
- **शिपिविष्टः**—पुं॰—शिपिः-विष्टः—-—शिश्नाग्रच्छदविहीन
- **शिपिविष्टः**—पुं॰—शिपिः-विष्टः—-—कोढ़ी
- **शिप्रः**—पुं॰—-—शि + रक् , पुक्—हिमालय पर्वत पर स्थित एक सरोवर
- **शिप्रा**—स्त्री॰—-—शिप्र + टाप्— शिप्र सरोवर से निकली एक नदी का नाम जिसके तट पर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है
- **शिफः**—पुं॰—-—-—रेशेदार जड़
- **शिफः**—पुं॰—-—-—कमल की जड़
- **शिफः**—पुं॰—-—-—जड़
- **शिफः**—पुं॰—-—-—कोड़े की मार
- **शिफः**—पुं॰—-—-—माँ
- **शिफः**—पुं॰—-—-—एक नदी
- **शिफा**—स्त्री॰—-—-—रेशेदार जड़
- **शिफा**—स्त्री॰—-—-—कमल की जड़
- **शिफा**—स्त्री॰—-—-—जड़
- **शिफा**—स्त्री॰—-—-—कोड़े की मार
- **शिफा**—स्त्री॰—-—-—माँ
- **शिफा**—स्त्री॰—-—-—एक नदी
- **शिफाधरः**—पुं॰—शिफा-धरः—-—शाखा
- **शिफारुहः**—पुं॰—शिफा-रुहः—-—वटवृक्ष
- **शिफाकः**—पुं॰—-—शिफा + कन्—कमल की जड़
- **शिबिः**—पुं॰—-—-—शिकारी जानवर
- **शिबिः**—पुं॰—-—-—भूर्जवृक्ष
- **शिबिः**—पुं॰ब॰ व॰—-—-—एक देश का नाम
- **शिबिः**—पुं॰—-—-—एक राजा का नाम
- **शिविः**—पुं॰—-—शि + वि—शिकारी जानवर
- **शिविः**—पुं॰—-—शि + वि—भूर्जवृक्ष
- **शिविः**—पुं॰ब॰ व॰—-—-—एक देश का नाम

- **शिविः**—पुं°———–—एक राजा का नाम
- **शिबिका**—स्त्री°——– शिवं करोति-शिव + णिच् + ण्वुल्—पालकी, डोली
- **शिबिका**—स्त्री°——– शिवं करोति-शिव + णिच् + ण्वुल्—अरथी
- **शिविका**—स्त्री°——– शिवं करोति-शिव + णिच् + ण्वुल्—पालकी, डोली
- **शिविका**—स्त्री°—-— शिवं करोति-शिव + णिच् + ण्वुल्—अरथी
- **शिबिरम्**—नपुं°—-—शेरते राजबलानि अत्र - शी + किरच्—तंबू
- **शिबिरम्**—नपुं°——शेरते राजबलानि अत्र - शी + किरच्—राजकीय तंबू, या ख़ेमा
- **शिबिरम्**—नपुं°——शेरते राजबलानि अत्र - शी + किरच्—सेना की रक्षा के लिए अकाट्य निवेश
- **शिबिरम्**—नपुं°——शेरते राजबलानि अत्र - शी + किरच्—एक प्रकार का अन्न
- **शिविरम्**—नपुं°——शेरते राजबलानि अत्र - शी + किरच्, बुकागमः, ह्रस्वः—तंबू
- **शिविरम्**—नपुं°——शेरते राजबलानि अत्र - शी + किरच्, बुकागमः, ह्रस्वः—राजकीय तंबू, या ख़ेमा
- **शिविरम्**—नपुं°——शेरते राजबलानि अत्र - शी + किरच्, बुकागमः, ह्रस्वः—सेना की रक्षा के लिए अकाट्य निवेश
- **शिविरम्**—नपुं°——शेरते राजबलानि अत्र - शी + किरच्, बुकागमः, ह्रस्वः—एक प्रकार का अन्न
- **शिबिरथः**—पुं°—-—शिवेः भूर्जवृक्षस्य ईः शोभा यत्र तादृशो रथः—पालकी, डोली
- **शिविरथः**—पुं°———–—पालकी, डोली
- **शिम्बा**—स्त्री°——शम् + इम्बच्, पृषो°—फली, छीमी, सेम
- **शिम्बिका**—स्त्री°—-—शिम्बा + कन् + टाप् , इत्वम्—फली, सेम
- **शिम्बिका**—स्त्री°—-—शिम्बा + कन् + टाप् , इत्वम्—एक प्रकार के काले उड़द
- **शिम्बी**—स्त्री°———–—फली, सेम
- **शिम्बी**—स्त्री°———–—एक प्रकार का पौधा
- **शिरम्**—नपुं°——शृ + क—सिर
- **शिरम्**—नपुं°——शृ + क—पिप्परामूल
- **शिरः**—पुं°———–—शय्या
- **शिरः**—पुं°———–—अजगर
- **शिरज**—वि°—शिरः-ज——बाल
- **शिरस्**—नपुं°——शृ + असुन्, निपातः—सिर
- **शिरस्**—नपुं°——शृ + असुन्, निपातः—खोपड़ी

- **शिरस्**—नपुं°—-—शृ + असुन्, निपातः—शृङ्ग, चोटी, शिखर (पहाड़ आदि का)
- **शिरस्**—नपुं°—-—शृ + असुन्, निपातः—वृक्ष की चोटी
- **शिरस्**—नपुं°—-—शृ + असुन्, निपातः—किसी चीज़ का सिर या शिरोबिन्दु
- **शिरस्**—नपुं°—-—शृ + असुन्, निपातः—कंगूरा, कलश, उच्चतम बिन्दु
- **शिरस्**—नपुं°—-—शृ + असुन्, निपातः—अग्रभाग, अगला भाग, सेना का अगला भाग
- **शिरस्**—नपुं°—-—शृ + असुन्, निपातः—मुख्य, प्रधान, मुखिया
- **शिरोऽस्थि**—नपुं°—शिरस्-अस्थि—-—खोपड़ी
- **शिरःकपालिन्**—पुं°—शिरस्-कपालिन्—-—मनुष्य-खोपड़ी रखने वाला संन्यासी
- **शिरोगृहम्**—नपुं°—शिरस्-गृहम्—-—सबसे ऊपर का घर, चन्द्रशाला, अट्टालिका
- **शिरोग्रहः**—पुं°—शिरस्-ग्रहः—-—सिर पीड़ा, सिर दर्द
- **शिरोच्छेदः**—पुं°—शिरस्-छेदः—-—सिर काट देना, सिर कलम कर देना
- **शिरोच्छेदनम्**—नपुं°—शिरस्-छेदनम्—-—सिर काट देना, सिर कलम कर देना
- **शिरोतापिन्**—पुं°—शिरस्-तापिन्—-—हाथी
- **शिरस्त्रम्**—नपुं°—शिरस्-त्रम्—-—लोहे को टोप
- **शिरस्त्रम्**—नपुं°—शिरस्-त्रम्—-—सिर की टोपी, पागड़ी
- **शिरस्त्राणम्**—नपुं°—शिरस्-त्राणम्—-—लोहे को टोप
- **शिरस्त्राणम्**—नपुं°—शिरस्-त्राणम्—-—सिर की टोपी, पागड़ी
- **शिरोधरा**—स्त्री°—शिरस्-धरा—-—ग्रीवा, गरदन
- **शिरोधिः**—पुं°—शिरस्-धिः—-—ग्रीवा, गरदन
- **शिरोपीड़ा**—स्त्री°—शिरस्-पीड़ा—-—सिर दर्द
- **शिरोफलः**—पुं°—शिरस्-फलः—-—नारियल का पेड़
- **शिरोभूषणम्**—नपुं°—शिरस्-भूषणम्—-—सिर पर पहनने का आभूषण
- **शिरोमणि**—पुं°—शिरस्-मणि—-—मस्तक पर धारण करने का रत्न
- **शिरोमणि**—पुं°—शिरस्-मणि—-—चूड़ामणि
- **शिरोमणि**—पुं°—शिरस्-मणि—-—विद्वान् पुरुषों के लिए सम्मानद्योतक उपाधि
- **शिरोमर्मन्**—पुं°—शिरस्-मर्मन्—-—सूअर
- **शिरोमालिन्**—पुं°—शिरस्-मालिन्—-—शिव का विशेषण

- **शिरोरत्नम्**—नपुं°—शिरस्-रत्नम्—-—शिरोमणि
- **शिरोरुजा**—स्त्री°—शिरस्-रुजा—-—सिरदर्द
- **शिरोरुह्**—पुं°—शिरस्-रुह्—-—सिर के बाल
- **शिरोरुहः**—पुं°—शिरस्-रुहः—-—सिर के बाल
- **शिरोवर्तिन्**—वि°—शिरस्-वर्तिन्—-—मुखिया
- **शिरोवर्तिन्**—पुं°—शिरस्-वर्तिन्—-—मुख्य, प्रधान के रूप में रहने वाला
- **शिरोवृत्तम्**—नपुं°—शिरस्-वृत्तम्—-—मिरच
- **शिरोवेष्टः**—पुं°—शिरस्-वेष्टः—-—सिर पर पहनने का वस्त्र, पागड़ी
- **शिरोवेष्टनम्**—नपुं°—शिरस्-वेष्टनम्—-—सिर पर पहनने का वस्त्र, पागड़ी
- **शिरःशूलम्**—नपुं°—शिरस्-शूलम्—-—सिरदर्द
- **शिरोहारिन्**—पुं°—शिरस्-हारिन्—-—शिव का विशेषण
- **शिरसिजः**—पुं°—-—शिरसि जन् + ड सप्तम्या अलुक्—सिर के बाल
- **शिरस्कम्**—नपुं°—-—शिरस् + कन्—लोहे का टोप
- **शिरस्कम्**—नपुं°—-—शिरस् + कन्—पगड़ी, टोपी
- **शिरस्का**—स्त्री°—-—शिरस्क + टाप्—पालकी
- **शिरस्तस्**—अव्य°—-—शिरस् + तस्—सिर से
- **शिरस्य**—वि°—-—शिरसि भव यत्—सिर संबंधी या सिर पर स्थित
- **शिरस्यः**—पुं°—-—-—स्वच्छ केश
- **शिरा**—स्त्री°—-—शॄ + क + टाप्—नलिका के आकार की शरीर की वाहिका, नाड़ी, खून की नाड़ी, रक्तवाहिनी नाड़ी
- **शिरापत्रः**—पुं°—शिरा-पत्रः—-—कपित्थ, कैथवृक्ष
- **शिरावृत्तम्**—नपुं°—शिरा-वृत्तम्—-—सीसा
- **शिराल**—वि° —-—शिरा + लच्—स्नायवी, शिरायुक्त, शिराबहुल
- **शिरिः**—पुं°—-—शॄ + कि—तलवार
- **शिरिः**—पुं°—-—शॄ + कि—वध करने वाला, क़तल करने वाला
- **शिरिः**—पुं°—-—शॄ + कि—बाण
- **शिरिः**—पुं°—-—शॄ + कि—टिड्डी
- **शिरीषः**—पुं°—-—शॄ + ईषन्, किच्च—सिरस का पेड़

- **शिरीषम्**—नपुं०———सिरस का फूल
- **शिल्**—तुदा० पर० <शिलति>————शिलोंछन, सिला चुगना, बालें इकट्ठा करना
- **शिलः**—पुं०——शिल् + क—शिलोंछन, बालें चुनना
- **शिलम्**—पुं०——शिल् + क—शिलोंछन, बालें चुनना
- **शिलोञ्छः**—पुं०—शिलः-उञ्छः——शिलावृत्ति
- **शिलोञ्छः**—पुं०—शिलः-उञ्छः——अनियमित वृत्ति
- **शिला**—स्त्री०——शिल + टाप्—पत्थर चट्टान
- **शिला**—स्त्री०——शिल + टाप्—चक्की
- **शिला**—स्त्री०——शिल + टाप्—चौखट की नीचे की लकड़ी
- **शिला**—स्त्री०——शिल + टाप्—खंबे की चोटी
- **शिला**—स्त्री०——शिल + टाप्—कंडरा, रक्तवाहिका
- **शिला**—स्त्री०——शिल + टाप्—मनः शिला, मैनसिल
- **शिला**—स्त्री०——शिल + टाप्—कपूर
- **शिलाष्टकः**—पुं०—शिला-अष्टकः——छिद्र
- **शिलाष्टकः**—पुं०—शिला-अष्टकः——बाड़, बाड़ा
- **शिलाष्टकः**—पुं०—शिला-अष्टकः——चौबारा, अटारी
- **शिलात्मजम्**—नपुं०—शिला-आत्मजम्——लोहा
- **शिलात्मिका**—स्त्री०—शिला-आत्मिका——कुठाली, घरिया
- **शिलारम्भा**—स्त्री०—शिला-आरम्भा——काष्ठकदली, जंगली केला
- **शिलासनम्**—नपुं०—शिला-आसनम्——पत्थर का आसन, चौकी आदि
- **शिलासनम्**—नपुं०—शिला-आसनम्——शैलेय गन्धद्रव्य, गुग्गल
- **शिलाह्वम्**—नपुं०—शिला-आह्वम्——शिलाजतु
- **शिलोच्चयः**—पुं०—शिला-उच्चयः——पहाड़, विशाल चट्टान
- **शिलोत्थम्**—नपुं०—शिला-उत्थम्——शैलेयगन्धद्रव्य, गुग्गुल
- **शिलोद्भवम्**—नपुं०—शिला-उद्भवम्——शैलेयगन्धद्रव्य
- **शिलोद्भवम्**—नपुं०—शिला-उद्भवम्——बढ़िया क़िस्म की चन्दन की लकड़ी
- **शिलौकस्**—पुं०—शिला-ओकस्——गरुड़ का विशेषण

- **शिलाकुट्टकः**—पुं°—शिला-कुट्टकः—-—पत्थर तोड़ने की छेनी, टाँकी
- **शिलापुष्पम्**—नपुं°—शिला-पुष्पम्—-—शैलेयगन्धद्रव्य
- **शिलाज**—वि°—शिला-ज—-—शिलाजीत, खनिजद्रव्य
- **शिलाजम्**—नपुं°—शिला-जम्—-—शिलाजीत
- **शिलाजम्**—नपुं°—शिला-जम्—-—शैलेयगन्धद्रव्य
- **शिलाजम्**—नपुं°—शिला-जम्—-—पेट्रोल
- **शिलाजम्**—नपुं°—शिला-जम्—-—लोहा
- **शिलाजम्**—नपुं°—शिला-जम्—-—कोई भी शिलीभूत पदार्थ
- **शिलाजतु**—नपुं°—शिला-जतु—-—शिलाजीत
- **शिलाजतु**—नपुं°—शिला-जतु—-—गेरु
- **शिलाजित्**—स्त्री°—शिला-जित्—-—शिलाजीत
- **शिलाददुः**—पुं°—शिला-ददुः—-—शिलाजीत
- **शिलाधातुः**—पुं°—शिला-धातुः—-—खड़िया मिट्टी
- **शिलाधातुः**—पुं°—शिला-धातुः—-—गेरु
- **शिलाधातुः**—पुं°—शिला-धातुः—-—सफेद शिलीभूत पदार्थ
- **शिलापट्टः**—पुं°—शिला-पट्टः—-—पत्थर की शिला जिस पर बैठा जाय, शिलासन
- **शिलापुत्रः**—पुं°—शिला-पुत्रः—-—मशाला पीसने की छोटी शिला, सिल
- **शिलापुत्रकः**—पुं°—शिला-पुत्रकः—-—मशाला पीसने की छोटी शिला, सिल
- **शिलाप्रतिकृतिः**—स्त्री°—शिला-प्रतिकृतिः—-—प्रस्तर मूर्ति
- **शिकाफलकम्**—नपुं°—शिला-फलकम्—-—पत्थर की सिल
- **शिलाभवम्**—नपुं°—शिला-भवम्—-—शैलेयगन्धद्रव्य
- **शिलाभेदः**—पुं°—शिला-भेदः—-—संगतराश की छेनी, टांकी
- **शिलारसः**—पुं°—शिला-रसः—-—शैलेयगन्धद्रव्य
- **शिलारसः**—पुं°—शिला-रसः—-—धूप
- **शिलावल्कलम्**—नपुं°—शिला-वल्कलम्—-—एक प्रकार की काई जो पत्थर पर जम जाती है
- **शिलावृष्टिः**—स्त्री°—शिला-वृष्टिः—-—पत्थरों की वर्षा
- **शिलावृष्टिः**—स्त्री°—शिला-वृष्टिः—-—ओलों की बारिश

- **शिलावेश्मन्**—नपुं°—शिला-वेश्मन्—-—गुफा, पत्थर की दरार
- **शिलाव्याधिः**—पुं°—शिला-व्याधिः—-—शिलाजीत
- **शिलिः**—पुं°—-—शिल् + कि—भूर्जवृक्ष
- **शिलिः**—स्त्री°—-—-—चौखट की नीचे की लकड़ी
- **शिलिन्दः**—पुं°—-—शिलि + दा + क, पृषो° मुम्—एक प्रकार की मछली
- **शिली**—स्त्री°—-—शिलि + ङीष्—दरवाज़े की चौखट की नीचे की लकड़ी
- **शिली**—स्त्री°—-—शिलि + ङीष्—एक प्रकार का भूकीट, केंचुआ
- **शिली**—स्त्री°—-—शिलि + ङीष्—खंभे की चोटी
- **शिली**—स्त्री°—-—शिलि + ङीष्—भाला
- **शिली**—स्त्री°—-—शिलि + ङीष्—बाण
- **शिली**—स्त्री°—-—शिलि + ङीष्—गण्डूपद
- **शिली**—स्त्री°—-—शिलि + ङीष्—मेंढकी
- **शिलीमुखः**—पुं°—शिली-मुखः—-—भौंरा
- **शिलीमुखः**—पुं°—शिली-मुखः—-—बाण
- **शिलीमुखः**—पुं°—शिली-मुखः—-—मूर्ख
- **शिलीन्ध्रः**—पुं°—-—शिलीं धरति - धृ + क पृषो° मुम्—एक प्रकार की मछली
- **शिलीन्ध्रः**—पुं°—-—शिलीं धरति - धृ + क पृषो° मुम्—एक वृक्ष
- **शिलीन्ध्रम्**—नपुं°—-—-—कुकुरमुत्ता साँप की छतरी
- **शिलीन्ध्रम्**—नपुं°—-—-—केले के वृक्ष का फूल
- **शिलीन्ध्रम्**—नपुं°—-—-—ओला
- **शिलीन्ध्रकम्**—नपुं°—-—शिलीन्ध्र + कन—कुकुरमुत्ता, खुंब, साँप की छतरी
- **शिलीन्ध्री**—स्त्री°—-—शिलीन्ध्र + ङीष्—मृत्तिका, मिट्टी
- **शिलीन्ध्री**—स्त्री°—-—शिलीन्ध्र + ङीष्—केंचुआ
- **शिल्पम्**—नपुं°—-—शिल् + पक्—कला, ललितकला, यान्त्रिक कला
- **शिल्पम्**—नपुं°—-—-—(किसी भी कला में) कुशलता, कारीगरी
- **शिल्पम्**—नपुं°—-—-—विदग्धता, पटुता
- **शिल्पम्**—नपुं°—-—-—कार्य, शारीरिक श्रम या कार्य

- **शिल्पम्**—नपुं०———–—कृत्य, अनुष्ठान
- **शिल्पम्**—नपुं०———–—यज्ञीय चमचा, स्रुवा
- **शिल्पकर्मन्**—नपुं०—शिल्पम्-कर्मन्—–—कोई भी शारीरिक श्रम, दस्तकारी
- **शिल्पक्रिया**—स्त्री०—शिल्पम्-क्रिया—–—कोई भी शारीरिक श्रम, दस्तकारी
- **शिल्पकारः**—पुं०—शिल्पम्-कारः—–—दस्तकार, कारीगर
- **शिल्पकारकः**—पुं०—शिल्पम्-कारकः—–—दस्तकार, कारीगर
- **शिल्पकारिन्**—पुं०—शिल्पम्-कारिन्—–—दस्तकार, कारीगर
- **शिल्पशालम्**—नपुं०—शिल्पम्-शालम्—–—कारखाना, निर्माणी, शिल्पविद्यालय, शिल्पगृह
- **शिल्पशाला**—स्त्री०—शिल्पम्-शाला—–—कारखाना, निर्माणी, शिल्पविद्यालय, शिल्पगृह
- **शिल्पशास्त्रम्**—नपुं०—शिल्पम्-शास्त्रम्—–—कला विषय पर (चाहे ललित हो या यान्त्रिक) लिखा गया ग्रंथ
- **शिल्पशास्त्रम्**—नपुं०—शिल्पम्-शास्त्रम्—–—शिल्पविज्ञान
- **शिल्पिन्**—वि०—–—शिल्प + इनि—ललित या यांत्रिककला संबंधी
- **शिल्पिन्**—वि०—–—शिल्प + इनि—यांत्रिक, यंत्रवत्
- **शिल्पिन्**—पुं०———–—दस्तकर, कलाकार, कारिगर
- **शिल्पिन्**—पुं०———–—जो किसी भी कला में प्रवीण हो
- **शिव**—वि०—–—श्यति पापम् -शो + वन्, पृषो०—शुभ, मांगलिक, सौभाग्यशाली
- **शिव**—वि०—–—श्यति पापम् -शो + वन्, पृषो०—स्वस्थ, प्रसन्न, समृद्ध , सौभाग्यशाली
- **शिवः**—पुं०———–—हिन्दुओं के तीन प्रधान देवताओं (त्रिमूर्ति) में से तीसरा देव जिसका कार्य सृष्टि का संहार करना है
- **शिवः**—पुं०———–—पुरुष की जननेन्द्रिय, शिश्न
- **शिवः**—पुं०———–—शुभ ग्रहों का योग
- **शिवः**—पुं०———–—वेद
- **शिवः**—पुं०———–—मोक्ष
- **शिवः**—पुं०———–—पशुओं का बाँधने का खूँटा
- **शिवः**—पुं०———–—सुर, देवता
- **शिवः**—पुं०———–—पारा
- **शिवः**—पुं०———–—गुग्गल
- **शिवः**—पुं०———–—काला धतूरा

- **शिवौ**—पुं°, द्वि व°———-—शिव और पार्वती
- **शिवम्**—नपुं°—–——समृद्धि , कल्याण, मंगल, आनन्द
- **शिवम्**—नपुं°—–——परमानन्द, मांगलिकता
- **शिवम्**—नपुं°—–——मोक्ष
- **शिवम्**—नपुं°—-—-—जल
- **शिवम्**—नपुं°—-—-—समुद्री नमक
- **शिवम्**—नपुं°—–——सेंधा नमक
- **शिवम्**—नपुं°—–——शुद्ध सोहागा
- **शिवाक्षम्**—नपुं°—शिव-अक्षम्—–—एक प्रकार का वृक्ष
- **शिवात्मकम्**—नपुं°—शिव-आत्मकम्—-—सेंधा नमक
- **शिवादेशकः**—पुं°—शिव-आदेशकः—-—शुभ समाचार लाने वाला
- **शिवादेशकः**—पुं°—शिव-आदेशकः—–—भविष्यवक्ता
- **शिवालयः**—पुं°—शिव-आलयः—-—शिव का आवास
- **शिवालयः**—पुं°—शिव-आलयः—-—लाल तुलसी
- **शिवालयम्**—नपुं°—शिव-आलयम्—–—शिव मन्दिर
- **शिवालयम्**—नपुं°—शिव-आलयम्—–—श्मशान
- **शिवेतर**—वि°—शिव-इतर—-—अशुभ, दुर्भाग्यपूर्ण
- **शिवकर**—वि°—शिव-कर—-—आनन्दप्रदायक, मंगलप्रद
- **शिवकीर्तनः**—पुं°—शिव-कीर्तनः———भृंगी का नाम
- **शिवगति**—वि°—शिव-गति—–—समृद्ध, आनन्दित
- **शिवधर्मजः**—पुं°—शिव-धर्मजः———मंगलग्रह
- **शिवताति**—वि°—शिव-ताति—–—जिसका अन्त कल्याणकारी हो, आनन्ददायक, मंगलप्रद
- **शिवताति**—वि°—शिव-ताति—–—मृदु, जो राक्षसी न हो
- **शिवतातिः**—पुं°—शिव-तातिः—-—मांगलिकता, आनन्द
- **शिवदत्तम्**—नपुं°—शिव-दत्तम्—-—विष्णु का चक्र
- **शिवदारु**—नपुं°—शिव-दारु———देवदारु का पेड़
- **शिवद्रुमः**—पुं°—शिव-द्रुमः———बल का पेड़

- **शिवद्विष्टा**—स्त्री°—शिव-द्विष्टा—-—केतकी का पेड़
- **शिवधातुः**—पुं°—शिव-धातुः—-—पारा
- **शिवपुरम्**—नपुं°—शिव-पुरम्—-—बनारस, वाराणसी
- **शिवपुरी**—स्त्री°—शिव-पुरी—-—बनारस, वाराणसी
- **शिवपुराणम्**—नपुं°—शिव-पुराणम्—-—अठारह पुराणों में से एक
- **शिवप्रियः**—पुं°—शिव-प्रियः—-—स्फटिक
- **शिवप्रियः**—पुं°—शिव-प्रियः—-—बक नाम का पेड़
- **शिवप्रियः**—पुं°—शिव-प्रियः—-—धतूरा
- **शिवमल्लकः**—पुं°—शिव-मल्लकः—-—अर्जुनवृक्ष
- **शिवराजधानी**—स्त्री°—शिव-राजधानी—-—वाराणसी
- **शिवरात्रिः**—स्त्री°—शिव-रात्रिः—-—फाल्गुनकृष्ण चतुर्दशी
- **शिवलिङ्गम्**—नपुं°—शिव-लिङ्गम्—-—शिव जिसकी पिंडी या लिंग के रूप में पूजा होती है
- **शिवलोकः**—पुं°—शिव-लोकः—-—शिव का संसार
- **शिववल्लभः**—पुं°—शिव-वल्लभः—-—आम का वृक्ष
- **शिववल्लभा**—स्त्री°—शिव-वल्लभा—-—पार्वती
- **शिववाहनः**—पुं°—शिव-वाहनः—-—साँड़
- **शिववीजम्**—नपुं°—शिव-वीजम्—-—पारा
- **शिवशेखरः**—पुं°—शिव-शेखरः—-—चाँद
- **शिवशेखरः**—पुं°—शिव-शेखरः—-—धतूरा
- **शिवसुन्दरी**—स्त्री°—शिव-सुन्दरी—-—दुर्गा का विशेषण
- **शिवकः**—पुं°—-—शिव + कन्—वह खूँटा जिसके साथ प्रायः गौ आदि पशु बाधे जाते हैं
- **शिवकः**—पुं°—-—शिव + कन्—वह खंबा जिससे पशु अपना शरीर रगड़ता है, पशुओं के शरीर को खुजलाने के लिए खूँटा
- **शिवा**—स्त्री°—-—शिव + टाप्—पार्वती
- **शिवा**—स्त्री°—-—शिव + टाप्—गीदड़ी
- **शिवा**—स्त्री°—-—शिव + टाप्—मोक्ष
- **शिवा**—स्त्री°—-—शिव + टाप्—शमी (जैंडी) का वृक्ष
- **शिवा**—स्त्री°—-—शिव + टाप्—आंवला

- **शिवा**—स्त्री॰—-—शिव + टाप्—दुर्वाघास, दूब
- **शिवा**—स्त्री॰—-—शिव + टाप्—पीला रंग
- **शिवा**—स्त्री॰—-—शिव + टाप्—हल्दी
- **शिवारातिः**—पुं॰—शिवा-अरातिः—-—कुत्ता
- **शिवाप्रियः**—पुं॰—शिवा-प्रियः—-—बकरा
- **शिवाफला**—स्त्री॰—शिवा-फला—-—शमी (जैंडी) का वृक्ष
- **शिवारुतम्**—नपुं॰—शिवा-रुतम्—-—गीदड़ का रोना
- **शिवानी**—स्त्री॰—-—शिव + ङीप्, आनुक्—शिव की पत्नी पार्वती
- **शिवालुः**—पुं॰—-—शिव + आलुच्—गीदड़
- **शिशिर**—वि॰—-—शश् + किरच् -नि—ठंडा, शीतल, सर्द जमा हुआ
- **शिशिरः**—पुं॰—-—-—ओस, तुषार या पाला
- **शिशिरः**—पुं॰—-—-—जाड़े का मौसम, (माघ और फाल्गुन की) सर्दी
- **शिशिरः**—पुं॰—-—-—ठंडक, शीतलता
- **शिशिरांशुः**—पुं॰—शिशिर-अंशुः—-—चन्द्रमा
- **शिशिरकरः**—पुं॰—शिशिर-करः—-—चन्द्रमा
- **शिशिरकिरणः**—पुं॰—शिशिर-किरणः—-—चन्द्रमा
- **शिशिरदीधितिः**—पुं॰—शिशिर-दीधितिः—-—चन्द्रमा
- **शिशिराश्मिः**—पुं॰—शिशिर-रश्मिः—-—चन्द्रमा
- **शिशिरात्ययः**—पुं॰—शिशिर-अत्ययः—-—जाड़े का अन्त, वसन्त ऋतु
- **शिशिरापगमः**—पुं॰—शिशिर-अपगमः—-—जाड़े का अन्त, वसन्त ऋतु
- **शिशिरकालः**—पुं॰—शिशिर-कालः—-—जाड़े की ऋतु
- **शिशिरसमयः**—पुं॰—शिशिर-समयः—-—जाड़े की ऋतु
- **शिशिरघ्नः**—पुं॰—शिशिर-घ्नः—-—अग्नि का विशेषण
- **शिशुः**—पुं॰—-—शो + कु, सन्वद्भावः, द्वित्वम्—बालक, बच्चा
- **शिशुः**—पुं॰—-—शो + कु, सन्वद्भावः, द्वित्वम्—किसी भी जानवर का बच्चा (बछड़ा, पिल्ला, छौना आदि)
- **शिशुः**—पुं॰—-—शो + कु, सन्वद्भावः, द्वित्वम्—आठ या सोलह वर्ष से कम आयु का बालक
- **शिशुक्रन्दः**—पुं॰—शिशुः-क्रन्दः—-—बच्चे का रोना

- **शिशुक्रन्दनम्**—नपुं०—शिशुः-क्रन्दनम्—-—बच्चे का रोना
- **शिशुगन्धा**—स्त्री०—शिशुः-गन्धा—-—एक प्रकार की मल्लिका
- **शिशुपालः**—पुं०—शिशुः-पालः—-—दमघोष का पुत्र तथा चेदि देश का राजा
- **शिशुहन्**—पुं०—शिशुः-हन्—-—कृष्ण का विशेषण
- **शिशुमारः**—पुं०—शिशुः-मारः—-—सूँस नाम का जलजन्तु
- **शिशुवाहकः**—पुं०—शिशुः-वाहकः—-—जंगली बकरा
- **शिशुवाह्यकः**—पुं०—शिशुः-वाह्यकः—-—जंगली बकरा
- **शिशुकः**—पुं०—-—शिशु + कन्—बालक, बच्चा
- **शिशुकः**—पुं०—-—शिशु + कन्—किसी भी जानवर का बच्चा
- **शिशुकः**—पुं०—-—शिशु + कन्—वृक्ष
- **शिशुकः**—पुं०—-—शिशु + कन्—सूँस
- **शिश्नम्**—नपुं०—-—शश् + नक् इत्वम्—पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग
- **शिस्नम्**—नपुं०—-—-—पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्ग
- **शिश्विदान**—वि०—-—श्वित् + सन् + आनच्, सनो लुक्, द्वित्वम्, रकारस्य दकारः—पवित्र आचरण वाला, सद्गुणी, पुण्यात्मा
- **शिश्विदान**—वि०—-—श्वित् + सन् + आनच्, सनो लुक्, द्वित्वम्, रकारस्य दकारः—दुष्ट, पापी
- **शिष्**—भ्वा० पर० <शेषति>—-—-—चोट पहुँचाना, मार डालना
- **शिष्**—भ्वा० पर० <शेषति>, चुरा० उभ० <शेषयति>, <शेषयते>—-—-—अवशिष्ट छोड़ देना, बचा देना
- **शिष्**—रुधा० पर०<शिनष्टि>, <शिष्ट>—-—-—बाक़ी छोड़ना, बचा रखना, अवशिष्ट छोड़ना
- **शिष्**—रुधा० पर०<शिनष्टि>, <शिष्ट>—-—-—दूसरों से भिन्नता करना
- **शिष्**—रुधा० उभ०, प्रेर० <शेषयति>, <शेषयते>—-—-—छोड़ना
- **अवशिष्**—रुधा० पर०—अव-शिष्—-—बाकी छोड़ना, पीछे छोड़ना
- **उच्छिष्**—रुधा० पर०—उद्-शिष्—-—बाक़ी छोड़ना
- **परिशिष्**—रुधा० उभ०, प्रेर०—परि-शिष्—-—अवशिष्ट छोड़ना
- **विशिष्**—रुधा० पर०—वि-शिष्—-—विशिष्ट करना, विशेषता देना, विशेष रूप से कहना, परिभाषा करना
- **विशिष्**—रुधा० पर०—वि-शिष्—-—भेद करना, विवेचन करना
- **विशिष्**—रुधा० पर०—वि-शिष्—-—बढ़ाना, ऊँचा करना, वृद्धि करना, गहरा करना
- **विशिष्**—रुधा० कर्मवा०—वि-शिष्—-—भिन्न होना

- **विशिष्**—रुधा० कर्मवा०—वि-शिष्———अपेक्षाकृत अच्छा या ऊँचे दर्जे का होना, आगे बढ़ जाना, श्रेष्ठ होना,
- **विशिष्**—रुधा० अपा०—वि-शिष्———अपेक्षाकृत बढ़िया और दूसरों से अच्छा होना
- **विशिष्**—रुधा० उभ०, प्रेर०—वि-शिष्———आगे बढ़ जाना श्रेष्ठ होना
- **शिष्ट**—भू० क०कृ०———शास् + क्त, शिष् + क्त वा—छोड़ा हुआ, बचा हुआ, अवशिष्ट, बाक़ी
- **शिष्ट**—भू० क०कृ०———शास् + क्त, शिष् + क्त वा—आदिष्ट, समादिष्ट
- **शिष्ट**—भू० क०कृ०———शास् + क्त, शिष् + क्त वा—प्रशिक्षित, शिक्षित, अनुशिष्ट
- **शिष्ट**—भू० क०कृ०———शास् + क्त, शिष् + क्त वा—सधाया हुआ, पालतू, वश्य
- **शिष्ट**—भू० क०कृ०———शास् + क्त, शिष् + क्त वा—बुद्धिमान्, विद्वान्
- **शिष्ट**—भू० क०कृ०———शास् + क्त, शिष् + क्त वा—सद्गुणसंपन्न, माननीय
- **शिष्ट**—भू० क०कृ०———शास् + क्त, शिष् + क्त वा—शिष्ट, नम्र
- **शिष्ट**—भू० क०कृ०———शास् + क्त, शिष् + क्त वा—मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य, प्रमुख
- **शिष्टः**—पुं०—————प्रमुख या पूज्य व्यक्ति
- **शिष्टः**—पुं०—————बुद्धिमान् पुरुष
- **शिष्टः**—पुं०—————परामर्शदाता
- **शिष्टाचारः**—पुं०—शिष्टः-आचारः———बुद्धिमान् मनुष्यों का आचरण शिष्टाचरण, सच्चरित्र
- **शिष्टसभा**—स्त्री०—शिष्टः-सभा———विद्वान् या श्रेष्ठ पुरुषों की सभा, राज्यसभा
- **शिष्टिः**—स्त्री०———शास् + क्तिन्—राज्य, शासन
- **शिष्टिः**—स्त्री०———शास् + क्तिन्—आज्ञा, आदेश
- **शिष्टिः**—स्त्री०———शास् + क्तिन्—सजा, दण्ड
- **शिष्यः**—पुं०———शास् + क्यप्—छात्र, चेला, विद्यार्थी
- **शिष्यः**—पुं०———शास् + क्यप्—क्रोध, आवेश
- **शिष्यपरम्परा**—स्त्री०—शिष्यः-परम्परा———चेलों का अनुक्रम, किसी गुरु-संप्रदाय की परंपरित शिष्यमंडली
- **शिष्टिः**—स्त्री०—————छात्र का शोधन, भर्त्सना
- **शिह्लः**—पुं०———सिह् + लक्—शैलेय गन्धद्रव्य
- **शिह्लकः**—पुं०———सिह् + लक्, नि० सस्य शः—शैलेय गन्धद्रव्य
- **शी**—अदा० आ० <शेते>, <शायित>,कर्मवा० <शय्यते>, इच्छा० <शिशयिषते>—————लेटना, लेट जाना, विश्राम करना, आराम करना
- **शी**—अदा० आ० <शेते>, <शायित>,कर्मवा० <शय्यते>, इच्छा० <शिशयिषते>—————सोना

- **शी**—अदा° उभ°, प्रेर°<शाययति>, <शाययते>————सुलाना, लिटाना
- **अतिशी**—अदा° आ°—अति-शी———सोने में पहल करना
- **अतिशी**—अदा° आ°—अति-शी———बाद में सोना-अपेक्षाकृत देर तक सोना
- **अधिशी**—अदा° आ°—अधि-शी———लेटना, सोना, आराम करना
- **अधिशी**—अदा° आ°—अधि-शी———वसना, रहना
- **उपशी**—अदा° आ°—उप-शी———सोना, निकट लेटना
- **संशी**—अदा° आ°—सम-शी———संदेह में होना
- **शी**—स्त्री°———शी + क्विप्—निद्रा, विश्राम
- **शी**—स्त्री°———शी + क्विप्—शान्ति
- **शीक्**—भ्वा° आ° <शीकते>————तर करना, छिड़कना
- **शीक्**—भ्वा° आ° <शीकते>————शनैः शनैः जाना, हिलना-जुलना
- **शीक्**—भ्वा° पर° <शीकते>,चुरा° उभ°<शीकयति>, <शीकयते>————क्रोध करना
- **शीक्**—भ्वा° पर° <शीकते>,चुरा° उभ°<शीकयति>, <शीकयते>————आर्द्र करना, गीला करना
- **शीकरः**—पुं°———शीक् + अरन्—वायुप्रेरित छींटे, सूक्ष्मवृष्टि, बौछार, तुषार
- **शीकरः**—पुं°———शीक् + अरन्—जलकण, वृष्टिकण
- **शीकरम्**—नपुं°————सरलवृक्ष
- **शीकरम्**—नपुं°————सरलवृक्ष की राल
- **शीघ्र**—वि°———शिङ्घ् + रक्, नि°—फुर्तीला, त्वरित, सत्वर
- **शीघ्रः**—पुं°————ग्रहयोग
- **शीघ्रम्**—अव्य°————फुर्ती से, तेज़ी से, जल्दी से
- **शीघ्रोच्चः**—पुं°—शीघ्र-उच्चः———ग्रहयोग
- **शीघ्रकारिन्**—वि°—शीघ्र-कारिन्———फुर्तीला, चुस्त
- **शीघ्रकोपिन्**—वि°—शीघ्र-कोपिन्———चिड़चिड़ा, क्रोधी
- **शीघ्रचेतनः**—पुं°—शीघ्र-चेतनः———कुत्ता
- **शीघ्रबुद्धि**—वि°—शीघ्र-बुद्धि———तीक्ष्णबुद्धि वाला, तेज़ बुद्धिवाला
- **शीघ्रलङ्घन**—वि°—शीघ्र-लङ्घन———तेज़ जाने वाला, पैर फुर्ती से रखने वाला
- **शीघ्रवेधिन्**—पुं°—शीघ्र-वेधिन्———तेज़ धनुर्धर

- **शीघ्रिन्**—वि०—-—शीघ्र + इनि—सत्वर, फुर्तीला
- **शीघ्रिय**—वि०—-—शीघ्र + घ—चुस्त
- **शीघ्रियः**—पुं०—-—-—विष्णु
- **शीघ्रियः**—पुं०—-—-—शिव
- **शीघ्रियः**—पुं०—-—-—बिल्लियों की लड़ाई
- **शीघ्र्यम्**—नपुं०—-—शीघ्र + घ—चुस्ती, शीघ्रता
- **शीत्**—अव्य०—-—-—आकस्मिक पीड़ा या आनन्द को अभिव्यक्त करने वाली ध्वनि
- **शीत्कारः**—पुं०—शीत्-कारः—-—उपर्युक्तध्वनि, सिसकारी
- **शीत्कृत्**—पुं०—शीत्-कृत्—-—उपर्युक्तध्वनि, सिसकारी
- **शीत**—वि०—-—श्यै + क्त—ठण्डा, शीतल, जमा हुआ
- **शीत**—वि०—-—श्यै + क्त—मन्द, सुस्त, उदासीन, आलसी
- **शीत**—वि०—-—श्यै + क्त—अलस, सुस्त, जड़
- **शीतः**—पुं०—-—-—एक प्रकार का नरकुल
- **शीतः**—पुं०—-—-—नील का वृक्ष
- **शीतः**—नपुं०—-—-—जाड़े की ऋतु
- **शीतः**—नपुं०—-—-—कपूर
- **शीतम्**—नपुं०—-—-—ठण्डक, शीतलता, सर्दी
- **शीतम्**—नपुं०—-—-—जल
- **शीतम्**—नपुं०—-—-—दारचीनी
- **शीतांशुः**—पुं०—शीत-अंशुः—-—चाँद
- **शीतांशुः**—पुं०—शीत-अंशुः—-—कपूर
- **शीतादः**—पुं०—शीत-अदः—-—मसूड़ों के पकजाने या उनमें ब्रण हो जाने का रोग,पायरिया
- **शीताद्रिः**—पुं०—शीत-अद्रिः—-—हिमालय पहाड़
- **शीतश्मन्**—पुं०—शीत-अश्मन्—-—चन्द्रकान्तमणि
- **शीतार्त**—वि०—शीत-आर्त—-—ठंड से व्याकुल, जाड़े से ठिठुरा हुआ
- **शीतोत्तमम्**—नपुं०—शीत-उत्तमम्—-—पानी
- **शीतकालः**—पुं०—शीत-कालः—-—जाड़े का ऋतु, सर्दी का मौसम

- **शीतकालीन**—वि°—शीत-कालीन—-—जाड़े में होने वाला
- **शीतकृच्छ्रः**—पुं°—शीत-कृच्छ्रः—-—एक प्रकार की धार्मिक साधना
- **शीतगन्धम्**—नपुं°—शीत-गन्धम्—-—सफेद चन्दन
- **शीतगुः**—पुं°—शीत-गुः—-—चाँद
- **शीतगुः**—पुं°—शीत-गुः—-—कपूर
- **शीतचम्पकः**—पुं°—शीत-चम्पकः—-—दीपक
- **शीतचम्पकः**—पुं°—शीत-चम्पकः—-—दर्पण
- **शीतदीधितिः**—पुं°—शीत-दीधितिः—-—चाँद
- **शीतपुष्पः**—पुं°—शीत-पुष्पः—-—शिरीष का वृक्ष, शिरस का पेड़
- **शीतपुष्पकम्**—नपुं°—शीत-पुष्पकम्—-—शैलेय गन्धद्रव्य
- **शीतप्रभः**—पुं°—शीत-प्रभः—-—कपूर
- **शीतभानुः**—पुं°—शीत-भानुः—-—चाँद
- **शीतभीरुः**—पुं°—शीत-भीरुः—-—एक प्रकार की मल्लिका
- **शीतमयूखः**—पुं°—शीत-मयूखः—-—चाँद
- **शीतमयूखः**—पुं°—शीत-मयूखः—-—कपूर
- **शीतमरीचिः**—पुं°—शीत-मरीचिः—-—चाँद
- **शीतमरीचिः**—पुं°—शीत-मरीचिः—-—कपूर
- **शीररश्मिः**—पुं°—शीत-रश्मिः—-—चाँद
- **शीररश्मिः**—पुं°—शीत-रश्मिः—-—कपूर
- **शीतरम्यः**—पुं°—शीत-रम्यः—-—दीपक
- **शीतरुच्**—पुं°—शीत-रुच्—-—चाँद
- **शीतवल्कः**—पुं°—शीत-वल्कः—-—गूलर का पेड़
- **शीतवीर्यकः**—पुं°—शीत-वीर्यकः—-—बड़ का पेड़
- **शीतशिव**—पुं°—शीत-शिवः—-—शमीवृक्ष, जैंडी का पेड़
- **शीतशिवम्**—नपुं°—शीत-शिवम्—-—सेंधा नमक
- **शीतशिवम्**—नपुं°—शीत-शिवम्—-—सुहागा
- **शीतशूकः**—पुं°—शीत-शूकः—-—जौ

- **शीतस्पर्श**—वि॰—शीत-स्पर्श—-—ठंडक पहुँचाने वाला
- **शीतक**—वि॰—-—शीत + कन्—ठण्डा
- **शीतकः**—पुं॰—-—-—कोई ठण्डी वस्तु
- **शीतकः**—पुं॰—-—-—जाड़े का ऋतु, सर्दी का मौसम
- **शीतकः**—पुं॰—-—-—मन्थर, दीर्घसूत्री
- **शीतकः**—पुं॰—-—-—आनन्दित, निश्चिन्त
- **शीतकः**—पुं॰—-—-—बिच्छू
- **शीतल**—वि॰—-—शीतं लाति-ला + क, शीतमस्त्यस्य लच् वा—ठण्डा, शीतलगुण युक्त, सर्द, (ठण्ड के कारण) जमा हुआ
- **शीतलः**—पुं॰—-—-—चाँद
- **शीतलः**—पुं॰—-—-—एक प्रकार का कर्पूर
- **शीतलः**—पुं॰—-—-—एक प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान
- **शीतलम्**—नपुं॰—-—-—ठण्डक, ठण्डापन
- **शीतलम्**—नपुं॰—-—-—जाड़े की ऋतु
- **शीतलम्**—नपुं॰—-—-—शैलेयगन्धद्रव्य
- **शीतलम्**—नपुं॰—-—-—सफेद चन्दन, या चन्दन
- **शीतलम्**—नपुं॰—-—-—मोती
- **शीतलम्**—नपुं॰—-—-—तूतिया
- **शीतलम्**—नपुं॰—-—-—कमल
- **शीतलम्**—नपुं॰—-—-—वीरण नामक मूल
- **शीतलच्छदः**—पुं॰—शीतल-छदः—-—चम्पक वृक्ष
- **शीतलजलम्**—नपुं॰—शीतल-जलम्—-—कमल
- **शीतलप्रदः**—पुं॰—शीतल-प्रदः—-—चन्दन
- **शीतलप्रदम्**—नपुं॰—शीतल-प्रदम्—-—चन्दन
- **शीतलषष्ठी**—स्त्री॰—शीतल-षष्ठी—-—माघ शुक्ला छठ
- **शीतलकन्**—नपुं॰—-—शीतल + कन्—सफेद कमल
- **शीतला**—स्त्री॰—-—शीतल + टाप्—चेचक
- **शीतला**—स्त्री॰—-—-—चेचक (शीतला) की अधिष्ठात्री देवता

- **शीतलापूजा**—स्त्री॰—शीतला-पूजा—-—शीतला देवी की पूजा
- **शीतली**—स्त्री॰—-—शीतल + ङीष्—चेचक
- **शीता**—स्त्री॰—-—-—हल के चलाने से खेत में बनी हुई रेखा, खूड, हल की फाल से खुदी हुई रेखा
- **शीता**—स्त्री॰—-—-—जुती हुई या खूडवाली भूमी, हल से जोती हुई भूमि
- **शीता**—स्त्री॰—-—-—कृषि, खेंती
- **शीता**—स्त्री॰—-—-—एक देवी का नाम, इन्द्र की पत्नी
- **शीता**—स्त्री॰—-—-—उमा का नाम
- **शीता**—स्त्री॰—-—-—लक्ष्मी का नाम
- **शीता**—स्त्री॰—-—-—गंगा की चार धाराओं में से एक
- **शीता**—स्त्री॰—-—-—मदिरा
- **शीतालु**—वि॰—-—शीतं न सहते- शीत + आलुच्—सर्दी से ठिठुरता हुआ, जिसे सर्दी लग गई है, जाड़े के कारण कष्ट पाता हुआ
- **शीत्य**—नपुं॰—-—-—चावल, धान्य, अन्न
- **शीधु**—पुं॰—-—शी + धुक्—कोई भी प्रासुत मदिरा, अंगूरी शराब
- **शीधु**—पुं॰—-—शी + धुक्—शराब
- **शीधु**—नपुं॰—-—शी + धुक्—कोई भी प्रासुत मदिरा, अंगूरी शराब
- **शीधु**—नपुं॰—-—शी + धुक्—शराब
- **शीधुगन्धः**—पुं॰—शीधु-गन्धः—-—बकुल वृक्ष, मौलसिरी का पेड़
- **शीधुपः**—पुं॰—शीधु-पः—-—शराबी
- **शीन**—वि॰—-—श्यै + क्त—जमा हुआ, घनीभूत
- **शीनः**—पुं॰—-—-—जड़, बुद्धू
- **शीनः**—पुं॰—-—-—अजगर
- **शीभ्**—भ्वा॰ आ॰ <शीभते>—-—-—शेख़ी बघारना
- **शीभ्**—भ्वा॰ आ॰ <शीभते>—-—-—बतलाना, कहना, बोलना
- **शीभ्यः**—पुं॰—-—शीभ् + ण्यत्—साँड
- **शीभ्यः**—पुं॰—-—शीभ् + ण्यत्—शिव
- **शीरः**—पुं॰—-—शीङ् + रक्—अजगर
- **शीर्ण**—भू॰ क॰ कृ॰ —-—शॄ + क्त—कुम्हलाया हुआ, मुर्झाया हुआ, सड़ा हुआ

- **शीर्ण**—भू० क० कृ० —–—शृ + क्त—सूखा, शुष्क
- **शीर्ण**—भू० क० कृ० —–—शृ + क्त—टूटा फूटा, चूर चूर हुआ
- **शीर्ण**—भू० क० कृ० —–—शृ + क्त—दुबला-पतला, कृश
- **शीर्णम्**—नपुं०—–—–—एक प्रकार का गन्ध द्रव्य
- **शीर्णाङ्घ्रिः**—पुं०—शीर्ण-अङ्घ्रिः—–—यम का विशेषण
- **शीर्णाङ्घ्रिः**—पुं०—शीर्ण-अङ्घ्रिः—–—शनिग्रह का विशेषण
- **शीर्णपादः**—पुं०—शीर्ण-पादः—–—यम का विशेषण
- **शीर्णपादः**—पुं०—शीर्ण-पादः—–—शनिग्रह का विशेषण
- **शीर्णपर्णम्**—नपुं०—शीर्ण-पर्णम्—–—कुम्हलाया हुआ पत्ता
- **शीर्णपर्णः**—पुं०—शीर्ण-पर्णः—–—नीम का पेड़
- **शीर्णवृन्तम्**—नपुं०—शीर्ण-वृन्तम्—–—तरबूज़
- **शीर्वि**—वि०—–—शृ + क्विन्—विनाशकारी, आघातयुक्त, अनिष्टकर, क्षतिकर
- **शीर्षम्**—नपुं०—–—शिरस् पृषो० शीर्षदिशः, शृ + क सुक् च वा—सिर
- **शीर्षम्**—नपुं०—–—शिरस् पृषो० शीर्षदिशः, शृ + क सुक् च वा—काला अगर
- **शीर्षावशेषः**—पुं०—शीर्षम्-अवशेषः—–—केवल सिर ही बचा हुआ
- **शीर्षामयः**—पुं०—शीर्षम्-आमयः—–—सिर का कोई भी रोग
- **शीर्षच्छेदः**—पुं०—शीर्षम्-छेदः—–—सिर काट डालना
- **शीर्षच्छेद्यः**—वि०—शीर्षम्-छेद्य—–—जिसका सिर काट डालना चाहिए, सिर काट कर मारे जाने के योग्य
- **शीर्षरक्षकम्**—नपुं०—शीर्षम्-रक्षकम्—–—लोहे का टोप
- **शीर्षकः**—पुं०—–—शीर्ष + कन्—राहु का विशेषण
- **शीर्षकम्**—नपुं०—–—–—सिर
- **शीर्षकम्**—नपुं०—–—–—खोपड़ी
- **शीर्षकम्**—नपुं०—–—–—लोहे का टोप
- **शीर्षकम्**—नपुं०—–—–—सिर का वस्त्र, (टोपी, टोप आदि)
- **शीर्षण्यः**—पुं०—–—शीर्षन् + यत्—साफ़ तथा सुलझे हुए सिर के बाल
- **शीर्षण्यम्**—नपुं०—–—–—लोहे का टोप
- **शीर्षण्यम्**—नपुं०—–—–—टोप, टोपी

- **शीर्षन्**—नपुं°—-—शिरस् शब्दस्य पृषो° शीर्षन् आदेशः—सिर
- **शील्**—भ्वा° पर° <शीलति>—-—-—मध्यस्थता करना, भली भांति सोचना
- **शील्**—भ्वा° पर° <शीलति>—-—-—सेवा करना, सम्मान करना, पूजा करना
- **शील्**—भ्वा° पर° <शीलति>—-—-—सम्पन्न करना, अभ्यास करना
- **शील्**—चुरा° उभ° <शीलयति>, <शीलयते>—-—-—सम्मान करना, पूजा करना
- **शील्**—चुरा° उभ° <शीलयति>, <शीलयते>—-—-—बार बार अभ्यास करना, प्रयोग करना, अध्ययन करना, चिन्तन करना, ध्यान करना
- **शील्**—चुरा° उभ° <शीलयति>, <शीलयते>—-—-—धारण करना, पहनना
- **शील्**—चुरा° उभ° <शीलयति>, <शीलयते>—-—-—जाना, दर्शन करना, बार बार जाना
- **अनुशील्**—चुरा° उभ°—अनु-शील्—-—बार बार अभ्यास करना, सुधारना, चिन्तन करना
- **परिशील्**—चुरा° उभ°—परि-शील्—-—बार बार अभ्यास करना, सुधारना, चिन्तन करना
- **शीलः**—पुं°—-—शील् + अच्—अजगर
- **शीलम्**—नपुं°—-—-—स्वभाव, प्रकृति, चरित्र, प्रवृत्ति, रुचि, आदत
- **कलहशील**—वि°—-—-—कलह करने के स्वभाव वाला , झगड़ालू
- **भावनाशील**—वि°—-—-—चिन्तनशील
- **शीलम्**—नपुं°—-—-—आचरण, व्यवहार
- **शीलम्**—नपुं°—-—-—अच्छा स्वभाव, अच्छी प्रकृति
- **शीलम्**—नपुं°—-—-—सद्गुण, नैतिकता, सदाचरण, सज्जीवन, शुचिता, ईमानदारी
- **शीलम्**—नपुं°—-—-—सौन्दर्य, सुन्दर रूप
- **शीलखण्डनम्**—नपुं°—शीलम्-खण्डनम्—-—शुचिता या नैतिकता का उल्लंघन @ पंच° १
- **शीलधारिन्**—पुं°—शीलम्-धारिन्—-—शिव का विशेषण
- **शीलवंचना**—स्त्री°—शीलम्-वंचना—-—शुचिता का उल्लंघन
- **शीलनम्**—नपुं°—-—शील् + ल्युट्—बार बार अभ्यास, प्रयोग, अध्ययन, संवर्धन
- **शीलनम्**—नपुं°—-—शील् + ल्युट्—निरन्तर प्रयोग
- **शीलनम्**—नपुं°—-—शील् + ल्युट्—सम्मान करना, सेवा करना
- **शीलनम्**—नपुं°—-—शील् + ल्युट्—वस्त्र पहनना
- **शीलित**—भू° क° कृ°—-—शील् + क्त—अभ्यस्त, प्रयुक्त
- **शीलित**—भू° क° कृ°—-—शील् + क्त—धारण किया हुआ

- **शीलित**—भू० क० कृ०—-—शील् + क्त—बार-बार किया हुआ, देखा हुआ
- **शीलित**—भू० क० कृ०—-—शील् + क्त—कुशल
- **शीलित**—भू० क० कृ०—-—शील् + क्त—युक्त, सहित, सम्पन्न
- **शीवन्**—पुं०—-—शीङ् + क्वनिप्—अजगर
- **शुंशुमारः**—पुं०—-—शिशुमार का भ्रष्ट रूप—सूँस नामक जल जन्तु
- **शुक्**—भ्वा० पर० <शोकति>—-—-—जाना, हिलना-जुलना
- **शुकः**—पुं०—-—शुक् + क—तोता
- **शुकः**—पुं०—-—शुक् + क—सिरस का पेड़
- **शुकः**—पुं०—-—शुक् + क—व्यास का एक पुत्र
- **शुकम्**—नपुं०—-—-—कपड़ा, वस्त्र
- **शुकम्**—नपुं०—-—-—लोहे का टोप
- **शुकम्**—नपुं०—-—-—पगड़ी
- **शुकम्**—नपुं०—-—-—वस्त्र की किनारी या मगजी
- **शुकादनः**—पुं०—शुकः-अदनः—-—अनार का पेड़
- **शुकद्रुमः**—पुं०—शुकः-द्रुमः—-—सिरस का पेड़
- **शुकनास**—वि०—शुकः-नास—-—तोते जैसी नाक वाला
- **शुकनासिका**—स्त्री०—शुकः-नासिका—-—तोते की नाक जैसी नाक
- **शुकपुच्छः**—पुं०—शुकः-पुच्छः—-—गन्धक
- **शुकपुष्पः**—पुं०—शुकः-पुष्पः—-—सिरस का पेड़
- **शुकप्रियः**—पुं०—शुकः-प्रियः—-—सिरस का पेड़
- **शुकपुष्पा**—स्त्री०—शुकः-पुष्पा—-—जामुन का पेड़
- **शुकवल्लभः**—पुं०—शुकः-वल्लभः—-—अनार का पेड़
- **शुकवाहः**—पुं०—शुकः-वाहः—-—कामदेव का विशेषण
- **शुक्त**—भू० क० कृ०—-—शुच् + क्त—उज्ज्वल, विशुद्ध, स्वच्छ
- **शुक्त**—भू० क० कृ०—-—शुच् + क्त—अम्ल, खट्टा
- **शुक्त**—भू० क० कृ०—-—शुच् + क्त—कर्कश, खरखरा, कड़ा, कठोर
- **शुक्त**—भू० क० कृ०—-—शुच् + क्त—संयुक्त, जुड़ा हुआ

- **शुक्त**—भू० क० कृ०—-—शुच् + क्त—परित्यक्त, एकाकी
- **शुक्तम्**—नपुं०—-—-—मांस
- **शुक्तम्**—नपुं०—-—-—कांजी
- **शुक्तम्**—नपुं०—-—-—एक प्रकार का खट्टा तरल पदार्थ, (सिरका आदि)
- **शक्तिः**—स्त्री०—-—शुच् + क्तिन्—सीप का खोल, मोती की सीप
- **शक्तिः**—स्त्री०—-—शुच् + क्तिन्—शंख
- **शक्तिः**—स्त्री०—-—शुच् + क्तिन्—छोटी सीप, पुट्ठा
- **शक्तिः**—स्त्री०—-—शुच् + क्तिन्—खोंपड़ी का एक भाग
- **शक्तिः**—स्त्री०—-—शुच् + क्तिन्—घोड़े की छाती (या गर्दन पर) पर बालों का घूंघर
- **शक्तिः**—स्त्री०—-—शुच् + क्तिन्—एक प्रकार का गंधद्रव्य
- **शक्तिः**—स्त्री०—-—शुच् + क्तिन्—दो कर्ष के समान विशेष तोल
- **शक्त्युद्भवम्**—नपुं०—शक्तिः-उद्भवम्—-—मोती
- **शक्तिजम्**—नपुं०—शक्तिः-जम्—-—मोती
- **शक्तिपुटम्**—नपुं०—शक्तिः-पुटम्—-—मोती की सीप का खोल
- **शक्तिपेशी**—स्त्री०—शक्तिः-पेशी—-—मोती की सीप का खोल
- **शक्तिवधूः**—स्त्री०—शक्तिः-वधूः—-—मोती का सीप
- **शक्तिवीजम्**—नपुं०—शक्तिः-वीजम्—-—मोती
- **शुक्तिका**—स्त्री०—-—शुक्ति + कन् + टाप्—मोती का सीप, सीपी
- **शुक्रः**—पुं०—-—शुच् + रक्, नि० कुत्वम्—शुक्रग्रह
- **शुक्रः**—पुं०—-—शुच् + रक्, नि० कुत्वम्—राक्षसों के गुरु जिसने अपने जादू के मंत्रों से युद्ध में मरे हुए राक्षसों को पुनर्जीवित कर दिया था
- **शुक्रः**—पुं०—-—शुच् + रक्, नि० कुत्वम्—ज्येष्ठमास
- **शुक्रः**—पुं०—-—शुच् + रक्, नि० कुत्वम्—अग्नि
- **शुक्रम्**—नपुं०—-—-—वीर्य
- **शुक्रम्**—नपुं०—-—-—किसी भी वस्तु का सत्
- **शुक्राङ्गः**—पुं०—शुक्रः-अङ्गः—-—मोर
- **शुक्रकर**—वि०—शुक्रः-कर—-—शुक्र या वीर्य सम्बन्धी
- **शुक्रकरः**—पुं०—शुक्रः-करः—-—हड्डियों में रहने वाली मज्जा

- **शुक्रवारः**—पुं°—शुक्रः-वारः—-—भृगुवार, जुमा
- **शुक्रवासरः**—पुं°—शुक्रः-वासरः—-—भृगुवार, जुमा
- **शुक्रशिष्यः**—पुं°—शुक्रः-शिष्यः—-—राक्षस
- **शुक्रल**—वि°—-—शुक्र + ला + क—वीर्यसम्बन्धी
- **शुक्रल**—वि°—-—शुक्र + ला + क—शुक्र या वीर्य को बढ़ाने वाला
- **शुक्रिय**—वि°—-—शुक्र + घ—वीर्यसम्बन्धी
- **शुक्रिय**—वि°—-—शुक्र + घ—शुक्र या वीर्य को बढ़ाने वाला
- **शुक्ल**—वि°—-—शुच् + लुक्, कुत्वम्—सफेद, विशुद्ध, उज्ज्वल
- **शुक्लः**—पुं°—-—-—सफेद रंग
- **शुक्लः**—पुं°—-—-—चांद्रमास का उज्ज्वल या सुदी पक्ष
- **शुक्लः**—पुं°—-—-—शिव
- **शुक्लम्**—नपुं°—-—-—चाँदी
- **शुक्लम्**—नपुं°—-—-—आँखों की सफेदी में होने वाला रोग विशेष
- **शुक्लम्**—नपुं°—-—-—ताजा मक्खन
- **शुक्लम्**—नपुं°—-—-—(खट्टी) कांजी
- **शुक्लाङ्गः**—पुं°—शुक्ल-अङ्गः—-—मोर (आँखो के श्वेत कोण होने के कारण)
- **शुक्लापाङ्गः**—पुं°—शुक्ल-अपाङ्गः—-—मोर (आँखो के श्वेत कोण होने के कारण)
- **शुक्लाम्लम्**—नपुं°—शुक्ल-अम्लम्—-—एक प्रकार का खट्टा साग, चूक
- **शुक्लोपला**—स्त्री°—शुक्ल-उपला—-—रवेदार चीनी
- **शुक्लकण्ठकः**—पुं°—शुक्ल-कण्ठकः—-—एक प्रकार का जल कुक्कुट
- **शुक्लकर्मन्**—वि°—शुक्ल-कर्मन्—-—शुद्धाचारी, सद्गुणी
- **शुक्लकुण्ठम्**—नपुं°—शुक्ल-कुण्ठम्—-—सफ़ेद कोढ़
- **शुक्लधातुः**—पुं°—शुक्ल-धातुः—-—खड़िया मिट्टी
- **शुक्लपक्षः**—पुं°—शुक्ल-पक्षः—-—मास का सुदी पक्ष
- **शुक्लवस्त्र**—वि°—शुक्ल-वस्त्र—-—श्वेत वस्त्रधारी
- **शुक्लवायसः**—पुं°—शुक्ल-वायसः—-—सारस
- **शुक्लक**—वि°—-—शुक्ल + कन्—सफ़ेद

- **शुक्लकः**—पुं॰—-—-—चान्द्र मास का सुदी पक्ष
- **शुक्लल**—वि॰—-—शुक्ल + ला + क—सफ़ेद
- **शुक्ला**—स्त्री॰—-—शुक्ल + टाप्—सरस्वती
- **शुक्ला**—स्त्री॰—-—शुक्ल + टाप्—रवेदार चीनी
- **शुक्ला**—स्त्री॰—-—शुक्ल + टाप्—श्वेतवर्ण वाली स्त्री
- **शुक्ला**—स्त्री॰—-—शुक्ल + टाप्—काकोली नाम का पौधा
- **शुक्लिमन्**—पुं॰—-—शुक्ल + इमनिच्—श्वेतता, सफेदी
- **शुक्षिः**—पुं॰—-—शुस् + क्सिः—वायु, हवा
- **शुक्षिः**—पुं॰—-—शुस् + क्सिः—प्रकाश, कान्ति
- **शुक्षिः**—पुं॰—-—शुस् + क्सिः—अग्नि
- **शुङ्गः**—पुं॰—-—शुम् + ग, नि॰ साधुः—बड़ का पेड़
- **शुङ्गः**—पुं॰—-—शुम् + ग, नि॰ साधुः—पेंवदी बेर का पेड़
- **शुङ्गः**—पुं॰—-—शुम् + ग, नि॰ साधुः—अनाज का टूँड़, किंशारु
- **शुङ्गा**—स्त्री॰—-—शुङ्ग + टाप्—नूतन कली का कोष
- **शुङ्गा**—स्त्री॰—-—-—जौ या अनाज की बाल, किंशारु
- **शुङ्गिन्**—पुं॰—-—शुङ्गा + इनि—बड़ का पेड़, वटवृक्ष
- **शुच्**—भ्वा॰ पर॰ <शोचति>—-—-—खिन्न होना, दुःखी होना, शोक करना, विलाप करना
- **शुच्**—भ्वा॰ पर॰—-—-—खेद प्रकट करना, पछताना
- **अनुशुच्**—भ्वा॰ पर॰—अनु-शुच्—-—शोक मनाना, विलाप करना, खेद प्रकट करना
- **परिशुच्**—भ्वा॰ पर॰—परि-शुच्—-—विलाप करना, शोक मनाना
- **शुच्**—दिवा॰ उभ॰ <शुच्यति>, <शुच्यते>—-—-—खिन्न होना, दुःखी होना
- **शुच्**—दिवा॰ उभ॰ <शुच्यति>, <शुच्यते>—-—-—आर्द्र होना
- **शुच्**—दिवा॰ उभ॰ <शुच्यति>, <शुच्यते>—-—-—चमकना
- **शुच्**—दिवा॰ उभ॰ <शुच्यति>, <शुच्यते>—-—-—स्वच्छ या निर्मल होना
- **शुच्**—दिवा॰ उभ॰ <शुच्यति>, <शुच्यते>—-—-—कुम्हलाना, मुर्झाना
- **शुच्**—स्त्री॰—-—शुच् + क्विप्—रंज, शोक, कष्ट, दुःख
- **शुचा**—स्त्री॰—-—शुच् + टाप्—रंज, शोक, कष्ट, दुःख

- **शुचि**—वि०—–—शुच् + कि—विमल, विशुद्ध, स्वच्छ
- **शुचि**—वि०—–—शुच् + कि—श्वेत
- **शुचि**—वि०—–—शुच् + कि—उज्ज्वल, चमकदार
- **शुचि**—वि०—–—शुच् + कि—सद्गुणी, पवित्रात्मा, पुण्यात्मा, निष्पाप, निष्कलंक
- **शुचि**—वि०—–—शुच् + कि—पवित्रीकृत, निर्मल किया हुआ, पुनीत बनाया हुआ
- **शुचि**—वि०—–—शुच् + कि—ईमानदार, खरा, निष्ठावान्, सच्चा, निश्छल
- **शुचि**—वि०—–—शुच् + कि—सही यथार्थ
- **शुचिः**—पुं०—–—–—श्वेत वर्ण
- **शुचिः**—पुं०—–—–—पवित्रता, पवित्रीकरण
- **शुचिः**—पुं०—–—–—भोलापन, सद्गुण, भद्रता, खरापन
- **शुचिः**—पुं०—–—–—शुद्धता, यथार्थता
- **शुचिः**—पुं०—–—–—ब्रह्मचारी की दशा
- **शुचिः**—पुं०—–—–—पवित्रात्मा
- **शुचिः**—पुं०—–—–—ब्राह्मण
- **शुचिः**—पुं०—–—–—ग्रीष्म ऋतु
- **शुचिः**—पुं०—–—–—ज्येष्ठ और आषाढ़ के महीने
- **शुचिः**—पुं०—–—–—निष्ठावान् या सच्चा मित्र
- **शुचिः**—पुं०—–—–—सूर्य
- **शुचिः**—पुं०—–—–—चन्द्रमा
- **शुचिः**—पुं०—–—–—अग्नि
- **शुचिः**—पुं०—–—–—शृंगार रस
- **शुचिः**—पुं०—–—–—शुक्रग्रह
- **शुचिः**—पुं०—–—–—चित्रक वृक्ष
- **शुचिद्रुमः**—पुं०—शुचि-द्रुमः—–—पवित्र वटचमेली, नवमल्लिका
- **शुचिरोचिस्**—पुं०—शुचि-रोचिस्—–—चन्द्रमा
- **शुचिव्रत**—वि०—शुचि-व्रत—–—पुण्यात्मा, सद्गुणी
- **शुचिस्मित**—वि०—शुचि-स्मित—–—मधुर मुस्कान वाला

- **शुचिस्**—नपुं°——शुच् + इसुन्—प्रकाश, कान्ति
- **शुच्य्**—भ्वा° पर° <शुच्यति>————स्नान करना, नहानाधोना
- **शुच्य्**—भ्वा° पर° <शुच्यति>————निचोड़ना, (रस) निकालना
- **शुच्य्**—भ्वा° पर° <शुच्यति>————अर्क खींचना
- **शुच्य्**—भ्वा° पर° <शुच्यति>————बिलोना
- **शुटीरः**—पुं°——शौटीरः, पृषो°—वीर, नायक
- **शुठ्**—भ्वा° पर°<शोठति>————बाधा डाला जाना, रुकावट डाली जानी
- **शुठ्**—भ्वा° पर°<शोठति>————लड़खड़ाना, लंगड़ा होना
- **शुठ्**—भ्वा° पर°<शोठति>————मुक़ाबला करना
- **शुठ्**—चुरा° उभ° <शोठयति>, <शोठयते>————सुस्त होना, आलसी होना, मन्द होना
- **शुण्ठ्**—भ्वा° पर° <शुण्ठति>, चुरा° उभ° <शुण्ठति>, <शुण्ठते>————पवित्र करना
- **शुण्ठ्**—भ्वा° पर° <शुण्ठति>, चुरा° उभ° <शुण्ठति>, <शुण्ठते>————सूखना
- **शुण्ठिः**—स्त्री°——शुण्ठ् + इन्—सोंठ, सूखा अदरक
- **शुण्ठी**—स्त्री°——शुंठि + ङीष्—सोंठ, सूखा अदरक
- **शुण्ठयम्**—नपुं°——शुण्ठ् +यत्—सोंठ, सूखा अदरक
- **शुण्डः**—पुं°——शुण्ड्+ अच्—मदमाते हाथी के गण्डस्थल से निकलने वाला रस
- **शुण्डः**—पुं°——शुण्ड्+ अच्—हाथी की सूँड़
- **शुण्डकः**—पुं°——शुण्ड्+ कन्—शराब खींचने वाला, कलाल
- **शुण्डकः**—पुं°——शुण्ड्+ कन्—एक प्रकार का सैनिक संगीत या वाद्ययन्त्र
- **शुण्डा**—स्त्री°——शुण्ड + टाप्—हाथी की सूँड़
- **शुण्डा**—स्त्री°——शुण्ड + टाप्—खींची हुई शराब
- **शुण्डा**—स्त्री°——शुण्ड + टाप्—मद्यपानगृह, मधुशाला
- **शुण्डा**—स्त्री°——शुण्ड + टाप्—कमल डण्डी
- **शुण्डा**—स्त्री°——शुण्ड + टाप्—वेश्या, रंडी
- **शुण्डा**—स्त्री°——शुण्ड + टाप्—कुटनी, दूती
- **शुण्डापानम्**—नपुं°—शुण्डा-पानम्——मदिरालय, शराबखाना
- **शुण्डारः**—पुं°——शुण्ड + ऋ + अण्—शराब खींचने वाला

- **शुण्डारः**—पुं॰—-—शुण्ड + ऋ + अण्—हाथी की सूँड़ या नासावृद्धि
- **शुण्डालः**—पुं॰—-—शुण्डारः, रलयोरभेदः—हाथी
- **शुण्डिका**—स्त्री॰—-—शुण्डा + कन् + टाप्, इत्वम्—
- **शुण्डिन्**—पुं॰—-—शुण्ड + णिनि—शराब खींचने वाला, कलाल
- **शुण्डिन्**—पुं॰—-—शुण्ड + णिनि—हाथी
- **शुण्डिभूषिका**—स्त्री॰—शुण्डिन्-भूषिका—-—छछून्दर
- **शुतुद्रिः**—स्त्री॰—-—-—सतलुज नदी
- **शुतुद्रुः**—स्त्री॰—-—-—सतलुज नदी
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—विशुद्ध, विमल, पवित्रीकृत
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—पुनीत, अकलुषित, शुचि, निर्दोष
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—श्वेत, उज्ज्वल
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—निष्कलंक, वेदाग
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—भोला-भाला, सीधा-सादा, निर्दोष
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—ईमानदार, खरा
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—सही, अशुद्धिरहित, यथार्थ
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—ऋण चुकाया गया, क़र्ज़ अदा किया गया
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—केवल, मात्र
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—सरल, विशुद्ध, अनमिश्रित
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—अद्वितीय
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—अधिकृत
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—पैनाया हुआ, तेज़ किया हुआ
- **शुद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + क्त—अननुनासिक
- **शुद्धः**—पुं॰—-—-—शिव का विशेषण
- **शुद्धम्**—नपुं॰—-—-—कोई भी विशुद्ध वस्तु
- **शुद्धम्**—नपुं॰—-—-—विशुद्ध वस्तु
- **शुद्धम्**—नपुं॰—-—-—विशुद्ध सुरा
- **शुद्धम्**—नपुं॰—-—-—सेंधा नमक

- **शुद्धम्**—नपुं॰————काली मिर्च
- **शुद्धान्तः**—पुं॰—शुद्ध-अन्तः———राजा का अन्तःपुर, रनवास, अन्दर महल
- **शुद्धचारिन्**—पुं॰—शुद्ध-चारिन्———अन्तःपुर का सेवक, कंचुकी
- **शुद्धपालकः**—पुं॰—शुद्ध-पालकः———अन्तःपुर का रखवाला
- **शुद्धरक्षक**—पुं॰—शुद्ध-रक्षक———अन्तःपुर का रखवाला
- **शुद्धात्मन्**—वि॰—शुद्ध-आत्मन्———शुद्धात्मा, ईमानदार
- **शुद्धोदनः**—पुं॰—शुद्ध-ओदनः———विख्यात बुद्ध का पिता
- **शुद्धसुतः**—पुं॰—शुद्ध-सुतः———बुद्ध
- **शुद्धचैतन्यम्**—नपुं॰—शुद्ध-चैतन्यम्———विशुद्ध, प्रतिभा, प्रज्ञा
- **शुद्धजंघः**—पुं॰—शुद्ध-जंघः———गधा
- **शुद्धधी**—वि॰—शुद्ध-धी———विशुद्धमना, निर्दोष, ईमानदार
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—विशुद्धता, स्वच्छता
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—चमक, कान्ति
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—पवित्रता, पुण्यशीलता
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—पवित्रीकरण, प्रायश्चित्त, परिशोधन, प्रायश्चित परक कृत्य
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—पवित्रीकरणमूलक या प्रायश्चित्त परक संस्कार
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—(ऋण) परिशोध
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—प्रतिहिंसा, प्रतिशोध
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—छुटकारा, (जांच द्वारा सिद्ध) निर्दोषता
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—सचाई, यथार्थता, याथातथ्यता
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—समाधान, संशोधन
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—व्यवकलन
- **शुद्धिः**—स्त्री॰———शुध् + क्तिन्—दुर्गा
- **शुद्धिपत्रम्**—नपुं॰—शुद्धिः-पत्रम्———ऐसी सूची जिसमें अशुद्ध शब्द शुद्ध रूपों सहित लिखे गये हों
- **शुद्धिपत्रम्**—नपुं॰—शुद्धिः-पत्रम्———प्रायश्चित्त के द्वारा हुई शुद्धि का प्रमाणपत्र
- **शुध्**—दिवा॰ पर॰ <शुध्यति>, <शुद्ध>————शुद्ध या पवित्र होना,
- **शुध्**—दिवा॰ पर॰ <शुध्यति>, <शुद्ध>————शुभ होना, अनुकूल होना, पात्र होना

- **शुध्**—दिवा° पर° <शुध्यति>, <शुद्ध>————स्पष्ट किया जाना, संदेह दूर करना
- **शुध्**—दिवा° पर° <शुध्यति>, <शुद्ध>————व्यय किया जाना, (खर्च) चुकाया जाना
- **शुध्**—दिवा° उभ°, प्रेर°<शोधयति>, <शोधयते>————पवित्र करना, निर्मल करना धो डालना
- **शुध्**—दिवा° उभ°, प्रेर°<शोधयति>, <शोधयते>————(ऋण) परिशोध करना, चुकाना
- **परिशुध्**—दिवा° पर°—परि-शुध्——पवित्र किया जाना
- **विशुध्**—दिवा° पर°—वि-शुध्——पवित्र किया जाना
- **संशुध्**—दिवा° पर°—सम्-शुध्——पवित्र किया जाना
- **शुन्**—तुदा° पर° <शुनति>————जाना, हिलना-जुलना
- **शुनःशेपः**—पुं°————एक वैदिक ऋषि, अजीगर्त का पुत्र
- **शुनःशेफः**—पुं°——शुन इव शेफः यस्य-अलुक् स°—एक वैदिक ऋषि, अजीगर्त का पुत्र
- **शुनकः**—पुं°——शुन् + क=शुन् + कन्—भृगुवंश में उत्पन्न एक ऋषि का नाम
- **शुनकः**—पुं°——शुन् + क=शुन् + कन्—कुत्ता
- **शुनाशीरः**—पुं°——शुनाशीरौ वायुसूर्ये अस्य स्तः इति अच्—इन्द्र का विशेषण
- **शुनाशीरः**—पुं°——शुनाशीरौ वायुसूर्ये अस्य स्तः इति अच्—उल्लू
- **शुनासीरः**—पुं°————इन्द्र का विशेषण
- **शुनासीरः**—पुं°————उल्लू
- **शुनिः**—पुं°——शुन् + इन्—कुत्ता
- **शुनी**—स्त्री°——श्वन् + ङीष्—कुतिया, कुक्कुरी
- **शुनीरः**—पुं°——शुनी + र—कुतियों का समूह
- **शुन्ध्**—भ्वा° <शुन्धति>, <शुन्धते>, चुरा° उभ° <शुन्धयति>, <शुन्धयते>————पवित्र या विमल होना
- **शुन्ध्**—भ्वा° <शुन्धति>, <शुन्धते>, चुरा° उभ° <शुन्धयति>, <शुन्धयते>————निर्मल करना, पवित्र करना
- **शुन्ध्युः**—पुं°——शुन्ध् + युः—हवा, वायु
- **शुभ्**—भ्वा° आ° <शोभते>————चमकना, शानदार होना, सुन्दर या मनोहर दिखाई देना
- **शुभ्**—भ्वा° आ° <शोभते>————लाभकर प्रतीत होना
- **शुभ्**—भ्वा° आ° <शोभते>————उपयुक्त होना, शोभा देना, योग्य होना
- **शुभ्**—भ्वा° उभ°, प्रेर° <शोभयति>, <शोभयते>————सजाना, संवारना, अलंकृत करना
- **परिशुभ्**—भ्वा° आ°—परि-शुभ्——चमकना, शानदार दिखाई देना

- **विशुभ्**—भ्वा° आ°—वि-शुभ्——चमकना, शानदार दिखाई देना
- **शुभ**—वि°——शुभ् + क—चमकीला, उज्ज्वल
- **शुभ**—वि°——शुभ् + क—सुन्दर, मनोहर
- **शुभ**—वि°——शुभ् + क—मांगलिक, सौभाग्यशाली, प्रसन्न, समृद्धि शाली
- **शुभ**—वि°——शुभ् + क—प्रमुख, भद्र, सद्गुणी
- **शुभम्**—नपुं°————मांगलिकता, कल्याण, अच्छा भाग्य, प्रसन्नता, समृद्धि
- **शुभम्**—नपुं°————अलंकार
- **शुभम्**—नपुं°————जल
- **शुभम्**—नपुं°————एक प्रकार की सुगंधित लकड़ी
- **शुभाक्षः**—पुं°—शुभ-अक्षः——शिव का विशेषण
- **शुभाङ्ग**—वि°—शुभ-अङ्ग——सुन्दर
- **शुभाङ्गी**—स्त्री°—शुभ-अङ्गी——सुन्दर स्त्री
- **शुभाङ्गी**—स्त्री°—शुभ-अङ्गी——कामदेव की पत्नी रति
- **शुभापाङ्गा**—स्त्री°—शुभ-अपाङ्गा——सुन्दर स्त्री
- **शुभाशुभम्**—नपुं°—शुभ-अशुभम्——सुख-दुःख, भला-बुरा
- **शुभाचार**—वि°—शुभ-आचार——पवित्र आचरण वाला, सदाचारी
- **शुभानना**—स्त्री°—शुभ-आनना——मनोरम स्त्री
- **शुभेतर**—वि°—शुभ-इतर——बुरा, खराब
- **शुभेतर**—वि°—शुभ-इतर——अशुभ, आमांगलिक
- **शुभोदर्क**—वि°—शुभ-उदर्क——जिसका अन्त आनन्ददायक हो
- **शुभकर**—वि°—शुभ-कर——कल्याणकर, मंगलप्रद
- **शुभकर्मन्**—नपुं°—शुभ-कर्मन्——पुण्यकार्य
- **शुभगन्धकम्**—नपुं°—शुभ-गन्धकम्——एक गन्धद्रव्य, बोल
- **शुभग्रहः**—पुं°—शुभ-ग्रहः——अनुकूल ग्रह
- **शुभदः**—पुं°—शुभ-दः——बटवृक्ष
- **शुभदन्ती**—स्त्री°—शुभ-दन्ती——सुन्दर दाँतों वाली
- **शुभलग्नः**—पुं°—शुभ-लग्नः——शुभ मुहूर्त, मंगल घड़ी

- **शुभवार्ता**—स्त्री॰—शुभ-वार्ता—-—शुभ समाचार
- **शुभवासनः**—पुं॰—शुभ-वासनः—-—मुंह को सुभाषित करने वाला गंधद्रव्य
- **शुभशंसिन्**—वि॰—शुभ-शंसिन्—-—शुभसूचक, मंगल की सूचना देने वाला
- **शुभस्थली**—स्त्री॰—शुभ-स्थली—-—वह भवन जहाँ यज्ञों का अनुष्ठान होता हो, यज्ञभूमि
- **शुभस्थली**—स्त्री॰—शुभ-स्थली—-—मंगलभूमि
- **शुभंयु**—वि॰—-—शुभमस्यास्ति-युस्—मंगलमय, सौभाग्यसूचक, भाग्यशाली, मंगलन्वित
- **शुभम्भावुक**—वि॰—-—शुभम् + भू + णिच् + उकञ्—सजाया हुआ, सूभूषित, अलंकृत, उज्ज्वल
- **शुभा**—स्त्री॰—-—शुभ + टाप्—कान्ति, प्रकाश
- **शुभा**—स्त्री॰—-—शुभ + टाप्—सौन्दर्य
- **शुभा**—स्त्री॰—-—शुभ + टाप्—इच्छा
- **शुभा**—स्त्री॰—-—शुभ + टाप्—पीलारंग, गोरोचना
- **शुभा**—स्त्री॰—-—शुभ + टाप्—शमी वृक्ष
- **शुभा**—स्त्री॰—-—शुभ + टाप्—देवसभा
- **शुभा**—स्त्री॰—-—शुभ + टाप्—दूब
- **शुभा**—स्त्री॰—-—शुभ + टाप्—प्रियगुं लता
- **शुभ्र**—वि॰—-—शुभ् + रक्—चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान
- **शुभ्र**—वि॰—-—शुभ् + रक्—श्वेत
- **शुभ्रः**—पुं॰—-—-—श्वेत रंग
- **शुभ्रः**—नपुं॰—-—-—चन्दन
- **शुभ्रम्**—नपुं॰—-—-—चाँदी
- **शुभ्रम्**—नपुं॰—-—-—अभ्रक
- **शुभ्रम्**—नपुं॰—-—-—सेंधा नमक
- **शुभ्रम्**—नपुं॰—-—-—कसीस
- **शुभ्रांशुः**—पुं॰—शुभ्र-अंशुः—-—चन्द्रमा
- **शुभ्रांशुः**—पुं॰—शुभ्र-अंशुः—-—कपूर
- **शुभ्रकरः**—पुं॰—शुभ्र-करः—-—चन्द्रमा
- **शुभ्रकरः**—पुं॰—शुभ्र-करः—-—कपूर

- **शुभ्ररश्मिः**—पुं०—शुभ्र-रश्मिः—–—चन्द्रमा
- **शुभ्रा**—स्त्री०—–—शुभ्र + टाप्—गंगा
- **शुभ्रा**—स्त्री०—–—शुभ्र + टाप्—स्फटिक
- **शुभ्रा**—स्त्री०—–—शुभ्र + टाप्—वंशलोचन
- **शुभ्रिः**—पुं०—–—शुभ् + क्रिन्—ब्रह्मा का विशेषण
- **शुम्भ्**—भ्वा० पर० <शुम्भति>—–—–—चमकना
- **शुम्भ्**—भ्वा० पर० <शुम्भति>—–—–—बोलना
- **शुम्भ्**—भ्वा० पर० <शुम्भति>—–—–—आघात पहुँचाना, क्षति पहुँचाना
- **शुम्भ**—पुं०—–—शुम्भ् + अच्—एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मार डाला था
- **शुम्भघातिनी**—स्त्री०—शुम्भ-घातिनी—–—दुर्गा का विशेषण
- **शुम्भमर्दिनी**—स्त्री०—शुम्भ-मर्दिनी—–—दुर्गा का विशेषण
- **शुर्**—–—–—–—चोट पहुँचाना, मार डालना
- **शुर्**—–—–—–—दृढ़ करना, स्थिर करना, ठहराना
- **शूर्**—दिवा० आ० <शूर्यते>—–—–—चोट पहुँचाना, मार डालना
- **शूर्**—दिवा० आ० <शूर्यते>—–—–—दृढ़ करना, स्थिर करना, ठहराना
- **शुल्क्**—चुरा० उभ० <शुल्कयति>, <शुल्कयते>—–—–—लाभ उठाना
- **शुल्क्**—चुरा० उभ० <शुल्कयति>, <शुल्कयते>—–—–—अदा करना, देना
- **शुल्क्**—चुरा० उभ० <शुल्कयति>, <शुल्कयते>—–—–—रचना करना
- **शुल्क्**—चुरा० उभ० <शुल्कयति>, <शुल्कयते>—–—–—कहना, वर्णन करना
- **शुल्क्**—चुरा० उभ० <शुल्कयति>, <शुल्कयते>—–—–—छोड़ना, त्यागना, परित्यक्त करना
- **शुल्कः**—पुं०—–—शुल्क् + घञ्—चुंगी, कर, महसूल, सीमाशुल्क, विशेषतः वह कर जो राज्य द्वारा घाट या मार्ग आदि पर लिया जाता है
- **शुल्कः**—पुं०—–—शुल्क् + घञ्—किसी सौदे को पक्का करने के लिये दिया गया अगाऊ धन
- **शुल्कः**—पुं०—–—शुल्क् + घञ्—(कन्या का) विक्रय मूल्य, कन्या के पिता को कन्या के बदले दिया गया धन
- **शुल्कः**—पुं०—–—शुल्क् + घञ्—विवाहोपहार
- **शुल्कः**—पुं०—–—शुल्क् + घञ्—विवाह निश्चित करने के लिए दिया गया धन, दहेज
- **शुल्कः**—पुं०—–—शुल्क् + घञ्—वर पक्ष की ओर से दुलहिन को दिया गया उपहार
- **शुल्कम्**—नपुं०—–—शुल्क् + घञ्—चुंगी, कर, महसूल, सीमाशुल्क, विशेषतः वह कर जो राज्य द्वारा घाट या मार्ग आदि पर लिया जाता है

- **शुल्कम्**—नपुं°—-—शुल्क् + घञ्—किसी सौदे को पक्का करने के लिये दिया गया अगाऊ धन
- **शुल्कम्**—नपुं°—-—शुल्क् + घञ्—(कन्या का) विक्रय मूल्य, कन्या के पिता को कन्या के बदले दिया गया धन
- **शुल्कम्**—नपुं°—-—शुल्क् + घञ्—विवाहोपहार
- **शुल्कम्**—नपुं°—-—शुल्क् + घञ्—विवाह निश्चित करने के लिए दिया गया धन, दहेज
- **शुल्कम्**—नपुं°—-—शुल्क् + घञ्—वर पक्ष की ओर से दुलहिन को दिया गया उपहार
- **शुल्कग्राहक**—वि°—शुल्कः-ग्राहक—-—शुल्कसंग्रहकर्ता
- **शुल्कग्राहिन्**—वि°—शुल्कः-ग्राहिन्—-—शुल्कसंग्रहकर्ता
- **शुल्कदः**—पुं°—शुल्कः-दः—-—विवाहोपहार देने वाला
- **शुल्कदः**—पुं°—शुल्कः-दः—-—वाग्दत्त विवाहार्थी
- **शुल्कशाला**—स्त्री°—शुल्कः-शाला—-—शुल्क जमा करने की जगह, चुंगीघर
- **शुल्कस्थानम्**—नपुं°—शुल्कः-स्थानम्—-—शुल्क जमा करने की जगह, चुंगीघर
- **शुल्लम्**—नपुं°—-—शुल्व् + अच्, पृषो°—सुतली, रस्सी, डोरी
- **शुल्व्**—चुरा° उभ° <शुल्वयति>, <शुल्वयते>—-—-—देना, प्रदान करना
- **शुल्व्**—चुरा° उभ° <शुल्वयति>, <शुल्वयते>—-—-—भेजना, तितर बितर करना
- **शुल्व्**—चुरा° उभ° <शुल्वयति>, <शुल्वयते>—-—-—मापना
- **शुल्ब्**—चुरा° उभ° <शुल्बयति>, <शुल्बयते>—-—-—देना, प्रदान करना
- **शुल्ब्**—चुरा° उभ° <शुल्बयति>, <शुल्बयते>—-—-—भेजना, तितर बितर करना
- **शुल्ब्**—चुरा° उभ° <शुल्बयति>, <शुल्बयते>—-—-—मापना
- **शुल्वम्**—नपुं°—-—शुल्व् + अच्—रस्सी, डोरी
- **शुल्वम्**—नपुं°—-—शुल्व् + अच्—तांबा
- **शुल्वम्**—नपुं°—-—शुल्व् + अच्—यज्ञीय कर्म
- **शुल्वम्**—नपुं°—-—शुल्व् + अच्—जल का सामीप्य, जल का निकटवर्ती स्थान
- **शुल्वम्**—नपुं°—-—शुल्व् + अच्—नियम, क़ानून, विधिसार
- **शुल्बम्**—नपुं°—-—-—रस्सी, डोरी
- **शुल्बम्**—नपुं°—-—-—तांबा
- **शुल्बम्**—नपुं°—-—-—यज्ञीय कर्म
- **शुल्बम्**—नपुं°—-—-—जल का सामीप्य, जल का निकटवर्ती स्थान

- **शुल्बम्**—नपुं°———-—नियम, क़ानून, विधिसार
- **शुल्वा**—स्त्री°———-—
- **शुल्वी**—स्त्री°———-—
- **शुश्रू**—स्त्री°—-—श्रु + यङ् लुक्, द्वित्वादि + क्विप्—माता
- **शुश्रूषक**—वि°—-—श्रु + सन्, द्वित्वादि + ण्वुल्—सावधान, आज्ञाकारी
- **शुश्रूषकः**—पुं°———-—सेवक, टहलुआ
- **शश्रूषणम्**—नपुं°—-—श्रु + सन् + इत्वादि + ल्युट्—सुनने की इच्छा
- **शश्रूषणम्**—नपुं°—-—श्रु + सन् + इत्वादि + ल्युट्—सेवा, टहल
- **शश्रूषणम्**—नपुं°—-—श्रु + सन् + इत्वादि + ल्युट्—आज्ञाकारिता, कर्त्तव्यपरायणता
- **शश्रूषणा**—स्त्री°———-—सुनने की इच्छा
- **शश्रूषणा**—स्त्री°———-—सेवा, टहल
- **शश्रूषणा**—स्त्री°———-—आज्ञाकारिता, कर्त्तव्यपरायणता
- **शुश्रूषा**—स्त्री°—-—श्रु + सन्, द्वित्वादि + अ + टाप्—सुनने की इच्छा
- **शुश्रूषा**—स्त्री°—-—श्रु + सन्, द्वित्वादि + अ + टाप्—सेवा, टहल
- **शुश्रूषा**—स्त्री°—-—श्रु + सन्, द्वित्वादि + अ + टाप्—कर्तव्यपरायणता, आज्ञाकारिता
- **शुश्रूषा**—स्त्री°—-—श्रु + सन्, द्वित्वादि + अ + टाप्—सम्मान
- **शुश्रूषा**—स्त्री°—-—श्रु + सन्, द्वित्वादि + अ + टाप्—बोलना, कहना
- **शुश्रूषु**—वि°—-—श्रु + सन्, द्वित्वादि + उ—सुनने का इच्छुक
- **शुश्रूषु**—वि°—-—श्रु + सन्, द्वित्वादि + उ—सेवा या टहल करने की इच्छा वाला
- **शुश्रूषु**—वि°—-—श्रु + सन्, द्वित्वादि + उ—आज्ञाकारी, सावधान
- **शुष्**—दिवा° पर° <शुष्यति>, <शुष्क>———-—सूखना, शुष्क होना, खुश्क होना
- **शुष्**—दिवा° पर° <शुष्यति>, <शुष्क>———-—मुर्झा जाना
- **शुष्**—दिवा° उभ°, प्रेर° <शोषयति>, <शोषयते>———-—सुखाना, मुर्झाना, खुश्क होना
- **शुष्**—प्रेर° <शोषयति>, <शोषयते>———-—कृश करना
- **उच्छुष्**—दिवा° पर°—उद्-शुष्—-—सुखाया जाना, सुखाना
- **उच्छुष्**—दिवा° पर°—उद्-शुष्—-—म्लान होना, कुम्हलाना, मुर्झाना
- **परिशुष्**—दिवा° पर°—परि-शुष्—-—सुखाया जाना, सुखाना

- **परिशुष्**—दिवा° पर°—परि-शुष्—-—म्लान होना, कुम्हलाना, मुर्झाना
- **विशुष्**—दिवा° पर°—वि-शुष्——सुखाया जाना
- **संशुष्**—दिवा° पर°—सम्-शुष्—-—सुखाया जाना
- **शुषः**—पुं°—-—शुष् + क—सूखना, सुखाना
- **शुषः**—पुं°—-—शुष् + क—बिल, भूरन्ध्र
- **शुषी**—स्त्री°—-—शुष् + ङीष्—सूखना, सुखाना
- **शुषी**—स्त्री°—-—शुष् + ङीष्—बिल, भूरन्ध्र
- **शुषिः**—पुं°——शुष् + कि—सुखाना
- **शुषिः**—पुं°——शुष् + कि—रन्ध्र, छिद्र
- **शुषिः**—पुं°——शुष् + कि—साँप के विषैले दांत का पोला भाग
- **शुषिर**—वि°—-—शुष् + किरच्—छिद्रयुक्त, रन्ध्रमय
- **शुषिरः**—पुं°————आग
- **शुषिरः**—पुं°————चूहा
- **शुषिरम्**—नपुं°————छिद्र
- **शुषिरम्**—नपुं°————अन्तरिक्ष
- **शुषिरम्**—नपुं°————हवा या फूँक से बजने वाला बाजा
- **शुषिरा**—स्त्री°—-—शुषिर + टाप्—नदी
- **शुषिरा**—स्त्री°—-—शुषिर + टाप्—एक प्रकार का गन्धद्रव्य
- **शुषिलः**—पुं°——शुष् + इलच्, स च कित्—हवा, वायु
- **शुष्क**—भू° क° कृ°——शुष् + क्त—सूखा, सुखाया हुआ
- **शुष्क**—भू° क° कृ°————भुना हुआ, म्लान
- **शुष्क**—भू° क° कृ°————झुर्रीदार, सिकुड़न वाला, कृश
- **शुष्क**—भू° क° कृ°————झूठ मूठ, व्याजमुक्त, नक़ली
- **शुष्क**—भू° क° कृ°————रिक्त, व्यर्थ, अनुपयोगी, अनुत्पादक
- **शुष्क**—भू° क° कृ°————निराधार, निष्कारण
- **शुष्क**—भू° क° कृ°————बुरा लगने वाला, कठोर
- **शुष्काङ्ग**—वि°—शुष्क-अङ्ग——कृशकाय

- **शुष्काङ्गी**—स्त्री°—शुष्क-अङ्गी—-—छिपकली
- **शुष्कान्नम्**—नपुं°—शुष्क-अन्नम्—-—वह अनाज जिसमें से भूसा अलग नहीं किया गया
- **शुष्ककलहः**—पुं°—शुष्क-कलहः—-—व्यर्थ या निराधार झगड़ा
- **शुष्ककलहः**—पुं°—शुष्क-कलहः—-—बनावटी झगड़ा
- **शुष्कवैरम्**—नपुं°—शुष्क-वैरम्—-—निराधार वैर
- **शुष्कव्रण**—पुं°/नपुं°—शुष्क-व्रण—-—वह घाव जो अच्छा हो गया है, घाव का चिह्न
- **शुष्कलः**—पुं°—-—शुष्क + ला + क—सूखा मांस
- **शुष्कलः**—पुं°—-—शुष्क + ला + क—मांस
- **शुष्कलम्**—नपुं°—-—शुष्क + ला + क—सूखा मांस
- **शुष्कलम्**—नपुं°—-—शुष्क + ला + क—मांस
- **शुष्मः**—पुं°—-—शुष् + मन्, किच्च—सूर्य
- **शुष्मः**—पुं°—-—शुष् + मन्, किच्च—आग
- **शुष्मः**—पुं°—-—शुष् + मन्, किच्च—वायु, हवा
- **शुष्मः**—पुं°—-—शुष् + मन्, किच्च—पक्षी
- **शुष्मम्**—नपुं°—-—-—पराक्रम, सामर्थ्य
- **शुष्मम्**—नपुं°—-—-—प्रकाश, कान्ति
- **शुष्मन्**—पुं°—-—शुष् + ङ्, मनिप्—अग्नि
- **शुष्मन्**—नपुं°—-—-—सामर्थ्य, पराक्रम
- **शुष्मन्**—नपुं°—-—-—प्रकाश, कान्ति
- **शूकः**—पुं°—-—श्वि + कक्—जौ की बाल, दाढ़ी
- **शूकः**—पुं°—-—श्वि + कक्—पौधों के कड़े रोएँ
- **शूकः**—पुं°—-—श्वि + कक्—नोक, सिरा, तेज़ किनारा
- **शूकः**—पुं°—-—श्वि + कक्—सुकोमलता, करुणा
- **शूकः**—पुं°—-—श्वि + कक्—एक प्रकार का विषैला कीड़ा
- **शूकम्**—नपुं°—-—-—जौ की बाल, दाढ़ी
- **शूकम्**—नपुं°—-—-—पौधों के कड़े रोएँ
- **शूकम्**—नपुं°—-—-—नोक, सिरा, तेज़ किनारा

- **शूकम्**—नपुं°—-—-—सुकोमलता, करुणा
- **शूकम्**—नपुं°—-—-—एक प्रकार का विषैला कीड़ा
- **शूककीटः**—पुं°—शूकः-कीटः—-—एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रोएँ खड़े हों
- **शूककीटकः**—पुं°—शूकः-कीटकः—-—एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रोएँ खड़े हों
- **शूकधान्यम्**—नपुं°—शूकः-धान्यम्—-—कोई भी ऐसा अन्न जो बालों टूंड़ो में से निकलता है (जौ आदि)
- **शूकपिण्डिः**—पुं°—शूकः-पिण्डिः—-—केवाँच, कपिकच्छु
- **शूकडी**—स्त्री°—शूकः-डी—-—केवाँच, कपिकच्छु
- **शूकशिम्बा**—स्त्री°—शूकः-शिम्बा—-—केवाँच, कपिकच्छु
- **शूकशिम्बिका**—स्त्री°—शूकः-शिम्बिका—-—केवाँच, कपिकच्छु
- **शूकशिम्बि** —स्त्री°—शूकः-शिम्बि —-—केवाँच, कपिकच्छु
- **शूककः**—पुं°—-—शूक + कन्—एकार का अन्न
- **शूककः**—पुं°—-—-—सुकोमलता, करुणा
- **शूकरः**—पुं°—-—शू इत्यव्यक्तं शब्दं करोति -शू + कृ + अच्—सूअर
- **शूकरेष्ट**—पुं°—शूकरः-इष्ट—-—एक प्रकार का घास, मोथा
- **शूकलः**—पुं°—-—शूकवत् क्लेशं ददाति-शूक + ला + क—अड़ियल घोड़ा
- **शूद्रः**—पुं°—-—शुच् + रक्, पृषो° चस्य दः, दीर्घः—चौथे वर्ण का पुरुष, हिन्दुओं के चार मुख्य वर्णों में से अन्तिम वर्ण का पुरुष
- **शूद्राह्निकम्**—नपुं°—शूद्रः-अह्निकम्—-—शूद्र का दैनिक अनुष्ठान
- **शूद्रोदकम्**—नपुं°—शूद्रः-उदकम्—-—शूद्र के स्पर्श से दूषित जल
- **शूद्रकृत्यम्**—नपुं°—शूद्रः-कृत्यम्—-—शूद्र का कर्तव्य
- **शूद्रधर्मः**—पुं°—शूद्रः-धर्मः—-—शूद्र का कर्तव्य
- **शूद्रप्रियः**—पुं°—शूद्रः-प्रियः—-—प्याज
- **शूद्रप्रेष्यः**—पुं°—शूद्रः-प्रेष्यः—-—तीनों उच्चवर्णों में से किसी एक वर्ण का पुरुष जो शूद्र का सेवक हो
- **शूद्रभूयिष्ठ**—वि°—शूद्रः-भूयिष्ठ—-—जहाँ अधिकांश शूद्र रहते हों
- **शूद्रयाजकः**—पुं°—शूद्रः-याजकः—-—जो शूद्र के लिए यज्ञ का संचालन करता है
- **शूद्रवर्गः**—पुं°—शूद्रः-वर्गः—-—शूद्रश्रेणी या सेवकवर्ग
- **शूद्रसेवनम्**—नपुं°—शूद्रः-सेवनम्—-—शूद्र की सेवा करना, शूद्र का सेवक वनना
- **शूद्रकः**—पुं°—-—शूद्र + कन्—एक राजा , मृच्छकटिक का प्रख्यात प्रणेता

- **शूद्रा**—स्त्री°—-—शूद्र + टाप्—शूद्र वर्ण की स्त्री
- **शूद्रभार्यः**—पुं°—शूद्रा-भार्यः—-—जिसकी पत्नी शूद्रवर्ण की हो
- **शूद्रावेदनम्**—नपुं°—शूद्रा-वेदनम्—-—शूद्रस्त्री से विवाह करना
- **शूद्रसुतः**—पुं°—शूद्रा-सुतः—-—(किसी भी जाति के पिता द्वारा) शूद्र माता का पुत्र
- **शूद्राणी**—स्त्री°—-—शूद्र + ङीप् पक्षे आनुक्—शूद्र की पत्नी
- **शूद्री**—स्त्री°—-—शूद्र + ङीप् पक्षे आनुक्—शूद्र की पत्नी
- **शून**—भू° क° कृ°—-—श्वि + क्त—सूजा हुआ
- **शून**—भू° क° कृ°—-—श्वि + क्त—वर्धित उगा हुआ, समृद्ध
- **शूना**—स्त्री°—-—श्वि अधिकरणे क्त, संप्र° दीर्घश्च— मृदु तालु, घंटी, उपजिह्विका
- **शूना**—स्त्री°—-—श्वि अधिकरणे क्त, संप्र° दीर्घश्च—बूचड़खाना
- **शूना**—स्त्री°—-—श्वि अधिकरणे क्त, संप्र° दीर्घश्च—कोई भी वस्तु (जैसे कि घर गृहस्थी का कुछ सामान) जिससे जीवहिंसा होती हो
- **शून्य**—वि°—-—शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्—रिक्त, खाली
- **शून्य**—वि°—-—शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्—सूना (हृदय, तथा चितवन आदि के लिए भी प्रयुक्त)
- **शून्य**—वि°—-—शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्—अविद्यमान
- **शून्य**—वि°—-—शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्—एकान्त, निर्जन, विविक्त, वीरान
- **शून्य**—वि°—-—शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्—खिन्न, उदास, उत्साहहीन
- **शून्य**—वि°—-—शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्—नितान्त रहित, वञ्चित, विहीन, अभावयुक्त
- **शून्य**—वि°—-—शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्—तटस्थ
- **शून्य**—वि°—-—शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्—निर्दोष
- **शून्य**—वि°—-—शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्—अर्थहीन, निरर्थक
- **शून्य**—वि°—-—शूनायै प्राणिवधाय हितं रहस्यस्थानत्वात् यत्—विवस्त्र, नंगा
- **शून्यम्**—नपुं°—-—-—निर्वातता, रिक्त, खोखलापन
- **शून्यम्**—नपुं°—-—-—आकाश, अन्तरिक्ष
- **शून्यम्**—नपुं°—-—-—सिफर, बिन्दु
- **शून्यम्**—नपुं°—-—-—अस्तित्वहीनता (पूर्ण, असीम)
- **शून्यमध्यः**—पुं°—शून्य-मध्यः—-—खोखला नरकुल
- **शून्यमनस्**—वि°—शून्य-मनस्—-—अन्यमनस्क, भग्नचेता

- **शून्यमनस्क**—वि॰—शून्य-मनस्क—-—अन्यमनस्क, भग्नचेता
- **शून्यमुख**—वि॰—शून्य-मुख—-—हक्का-बक्का, उदास, किंकर्तव्य विमूढ़
- **शून्यवदन**—वि॰—शून्य-वदन—-—हक्का-बक्का, उदास, किंकर्तव्य विमूढ़
- **शून्यवादः**—पुं॰—शून्य-वादः—-—वह दार्शनिक सिद्धांत ज़ो (जीव ईश्वर आदि) किसी भी पदार्थ की सत्ता स्वीकार नहीं करता, बौद्ध दर्शन
- **शून्यवादिन्**—पुं॰—शून्य-वादिन्—-—नास्तिक
- **शून्यवादिन्**—पुं॰—शून्य-वादिन्—-—बौद्ध
- **शून्यहृदय**—वि॰—शून्य-हृदय—-—अन्यमनस्क
- **शून्यहृदय**—वि॰—शून्य-हृदय—-—खुले दिल वाला, जो दूसरों पर किसी प्रकार का संदेह न करें
- **शून्या**—स्त्री॰—-—शून्य + टाप्—खोखला नरकुल
- **शून्या**—स्त्री॰—-—शून्य + टाप्—बांझ स्त्री
- **शूर**—चुरा॰ उभ॰ <शूरयति>, <शूरयते>—-—-—शौर्य के कार्य करना, शक्तिशाली होना
- **शूर**—चुरा॰ उभ॰ <शूरयति>, <शूरयते>—-—-—प्रबल उद्योग करना
- **शूर**—वि॰—-—शूर् + अच्—बहादुर, वीर, पराक्रमी, ताकतवर
- **शूरः**—पुं॰—-—-—सूरमा, योद्या, पराक्रमी
- **शूरः**—पुं॰—-—-—सिंह
- **शूरः**—पुं॰—-—-—सूअर
- **शूरः**—पुं॰—-—-—सूर्य
- **शूरः**—पुं॰—-—-—साल का पेड़
- **शूरः**—पुं॰—-—-—कृष्ण का दादा, एक यादव
- **शूरकीटः**—पुं॰—शूर-कीटः—-—तिरस्करणीय योद्धा
- **शूरमानम्**—नपुं॰—शूर-मानम्—-—अभिमान, अहंकार
- **शूरसेन**—पुं॰ ब॰ व॰—शूर-सेन—-—मथुरा के एक देश या उस देश के अधिवासी
- **शूरणः**—पुं॰—-—शूर् + ल्युट्—सूरन नामक एक खाद्यमूल, कंद
- **शूरंमन्य**—वि॰—-—आत्मानं शूरं मन्यते-शूर + मन् + खश्, मुम्—जो व्यक्ति अपने आपको पराक्रमी समझता है
- **शूर्पः**—पुं॰—-—शृ + पः ऊरच् नित्—छाज
- **शूर्पम्**—नपुं॰—-—शृ + पः ऊरच् नित्—छाज
- **शूर्पः**—पुं॰—-—-—दो द्रोण का तोल

- **शूर्पकर्णः**—पुं°—शूर्पः-कर्णः—-—हाथी
- **शूर्पणखा**—स्त्री°—शूर्पः-णखा—-—जिसके नख छाज जैसे लंबे चौड़े हों, रावण की बहन का नाम
- **शूर्पणखी**—स्त्री°—शूर्पः-णखी—-—जिसके नख छाज जैसे लंबे चौड़े हों, रावण की बहन का नाम
- **शूर्पवातः**—पुं°—शूर्पः-वातः—-—छाज को हिलाने से उत्पन्न हवा
- **शूर्पश्रुतिः**—पुं°—शूर्पः-श्रुतिः—-—हाथी
- **शूर्पो**—पुं°—-—शूर्प + ङीष्—छोटा छाज या पङ्खा
- **शूर्पो**—पुं°—-—शूर्प + ङीष्—शूर्पणखा
- **शूर्मः**—पुं°—-—सुष्ठु ऊर्मिः अस्ति अस्याः, पक्षे अच्—लोहे की बनी प्रतिमा
- **शूर्मः**—पुं°—-—सुष्ठु ऊर्मिः अस्ति अस्याः, पक्षे अच्—घन, निहाई
- **शूर्मिः**—पुं° —-—सुष्ठु ऊर्मिः अस्ति अस्य—लोहे की बनी प्रतिमा
- **शूर्मिः**—पुं°—-—सुष्ठु ऊर्मिः अस्ति अस्य—घन, निहाई
- **शूर्मिः**—स्त्री°—-—सुष्ठु ऊर्मिः अस्ति अस्याः—लोहे की बनी प्रतिमा
- **शूर्मिः**—स्त्री°—-—सुष्ठु ऊर्मिः अस्ति अस्याः—घन, निहाई
- **शूर्मिका**—स्त्री°—-—शूर्मि + कन् + टाप्—लोहे की बनी प्रतिमा
- **शूर्मिका**—स्त्री°—-—शूर्मि + कन् + टाप्—घन, निहाई
- **शूर्मी**—स्त्री°—-—शूर्मि + ङीष्—लोहे की बनी प्रतिमा
- **शूर्मी**—स्त्री°—-—शूर्मि + ङीष्—घन, निहाई
- **शूल्**—भ्वा° पर° <शूलति>—-—-—बीमार होना
- **शूल्**—भ्वा° पर° <शूलति>—-—-—कोलाहल करना
- **शूल्**—भ्वा° पर° <शूलति>—-—-—गड़बड़ करना, विगाड़ना
- **शूलः**—पुं°—-—शूल् + क—पैना या नोकदार हथियार, नुकीला काँटा, नेज़ा, बर्छी, भाला
- **शूलः**—पुं°—-—शूल् + क—शिव का त्रिशूल
- **शूलः**—पुं°—-—शूल् + क—लोहे की सलाख़ (जिस पर मांस भूना जाता है)
- **शूलः**—पुं°—-—शूल् + क—एक स्थूण जिसके सहारे अपराधियों को सूली दी जाती थी (बिभ्रत्)
- **शूलः**—पुं°—-—शूल् + क—तीव्र पीड़ा
- **शूलः**—पुं°—-—शूल् + क—उदरशूल
- **शूलः**—पुं°—-—शूल् + क—गठिया, जोड़ों में दर्द

- **शूलः**—पुं॰—-—शूल् + क—मृत्यु
- **शूलः**—पुं॰—-—शूल् + क—झण्डा, ध्वज
- **शूलम्**—नपुं॰—-—शूल् + क—पैना या नोकदार हथियार, नुकीला काँटा, नेज़ा, बर्छी, भाला
- **शूलम्**—नपुं॰—-—शूल् + क—शिव का त्रिशूल
- **शूलम्**—नपुं॰—-—शूल् + क—लोहे की सलाख़ (जिस पर मांस भूना जाता है)
- **शूलम्**—नपुं॰—-—शूल् + क—एक स्थूण जिसके सहारे अपराधियों को सूली दी जाती थी (बिभ्रत्)
- **शूलम्**—नपुं॰—-—शूल् + क—तीव्र पीड़ा
- **शूलम्**—नपुं॰—-—शूल् + क—उदरशूल
- **शूलम्**—नपुं॰—-—शूल् + क—गठिया, जोड़ों में दर्द
- **शूलम्**—नपुं॰—-—शूल् + क—मृत्यु
- **शूलम्**—नपुं॰—-—शूल् + क—झण्डा, ध्वज
- **शूलाकृ**—-—-—-—लोहे की सलाख़ पर रख कर भूनना
- **शूलाग्रम्**—नपुं॰—शूलः-अग्रम्—-—सलाख़ की नोक
- **शूलग्रन्थिः**—स्त्री॰ —शूलः-ग्रन्थिः—-—एक प्रकार का घास, दूब
- **शूलघातनम्**—नपुं॰—शूलः-घातनम्—-—लोहे का बुरादा, लोहे का चूरा जो लोहे को रेतने से निकलता है
- **शूलघ्न**—वि॰—शूलः-घ्न—-—शामक औषधि, वेदनाहर
- **शूलधन्वन्**—पुं॰—शूलः-धन्वन्—-—शिव के विशेषण
- **शूलधर**—पुं॰—शूलः-धर—-—शिव के विशेषण
- **शूलधारिन्**—पुं॰—शूलः-धारिन्—-—शिव के विशेषण
- **शूलधृक्**—पुं॰—शूलः-धृक्—-—शिव के विशेषण
- **शूलपाणि**—पुं॰—शूलः-पाणि—-—शिव के विशेषण
- **शूलभृत्**—पुं॰—शूलः-भृत्—-—शिव के विशेषण
- **शूलशत्रुः**—पुं॰—शूलः-शत्रुः—-—एरण्ड का पौधा
- **शूलस्थ**—वि॰—शूलः-स्थ—-—सूली पर चढ़ाया गया
- **शूलहन्त्री**—स्त्री॰—शूलः-हन्त्री—-—एक प्रकार का जौ
- **शूलहस्तः**—पुं॰—शूलः-हस्तः—-—भालाधारी
- **शूलकः**—पुं॰—-—शूल + कन्—अड़ियाल घोड़ा

- **शूला**—स्त्री°—-—शूल + टाप्—अपराधियों को सूली देने की स्थूणा
- **शूला**—स्त्री°—-—शूल + टाप्—वेश्या
- **शूलाकृतम्**—नपुं°—-—शूल + डाच् + कृ + क्त—भुना हुआ मांस
- **शूलिक**—वि°—-—शूल + ठन्—शूलधारी
- **शूलिक**—वि°—-—शूल + ठन्—सलाख़ पर भूना हुआ
- **शूलिकः**—पुं°—-—-—ख़रगोश
- **शूलिकम्**—नपुं°—-—-—भुना हुआ मांस
- **शूलिन्**—वि°—-—शूलमस्त्यस्य इनि—बर्छीधारी
- **शूलिन्**—वि°—-—शूलमस्त्यस्य इनि—उदरशूल से पीड़ित
- **शूलिन्**—पुं°—-—-—बर्छीधारी
- **शूलिन्**—पुं°—-—-—ख़रगोश
- **शूलिन्**—पुं°—-—-—शिव
- **शूलिनः**—पुं°—-—शूल + इनन्—बरगद का पेड़
- **शूल्य**—वि°—-—शूल + यत्—सलाख़ पर भूना हुआ
- **शूल्य**—वि°—-—-—सूली पाने के योग्य
- **शूल्यम्**—नपुं°—-—-—भुना हुआ मांस
- **शूष्**—भ्वा° पर° <शूषति>—-—-—पैदा करना, उत्पन्न करना
- **शूष्**—भ्वा° पर° <शूषति>—-—-—जन्म देना
- **शृकालः**—पुं°—-—-—गीदड़
- **शृगालः**—पुं°—-—असृजं लाति-ला + क, पृषो°—गीदड़
- **शृगालः**—पुं°—-—असृजं लाति-ला + क, पृषो°—ठग, धूर्त, उचक्का
- **शृगालः**—पुं°—-—असृजं लाति-ला + क, पृषो°—भीरु
- **शृगालः**—पुं°—-—असृजं लाति-ला + क, पृषो°—दुष्ट प्रकृति, कटुभाषी
- **शृगालः**—पुं°—-—असृजं लाति-ला + क, पृषो°—कृष्ण
- **शृगालकेलिः**—पुं°—शृगालः-केलिः—-—एक प्रकार का बेर
- **शृगालजम्बुः**—स्त्री°—शृगालः-जम्बुः—-—एक प्रकार की ककड़ी, खीरा
- **शृगालजम्बूः**—स्त्री°—शृगालः-जम्बूः—-—एक प्रकार की ककड़ी, खीरा

- **शृगालयोनिः**—पुं°/स्त्री°—शृगालः-योनिः—-—गीदड़ की योनि में जन्म लेना
- **शृगालरूपः**—पुं°—शृगालः-रूपः—-—शिव का विशेषण
- **शृगालिका**—स्त्री°—-—शृगाल + ङीष्—गीदड़ी
- **शृगालिका**—स्त्री°—-—शृगाल + ङीष्—लोमड़ी
- **शृगालिका**—स्त्री°—-—शृगाल + ङीष्—पलायन, प्रत्यावर्तन
- **शृगाली**—स्त्री°—-—शृगाल + ङीष्, पक्षे कन् + टाप् ह्रस्वः—गीदड़ी
- **शृगाली**—स्त्री°—-—शृगाल + ङीष्, पक्षे कन् + टाप् ह्रस्वः—लोमड़ी
- **शृगाली**—स्त्री°—-—शृगाल + ङीष्, पक्षे कन् + टाप् ह्रस्वः—पलायन, प्रत्यावर्तन
- **शृङ्खलः**—पुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—लोहे की जञ्जीर, बेड़ी
- **शृङ्खलः**—पुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—ज़ञ्जीर, हथकड़ी
- **शृङ्खलः**—पुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—हाथी के पैरों को बाँधने की ज़ञ्जीर
- **शृङ्खलः**—पुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—कमर की पेटी, करधनी
- **शृङ्खलः**—पुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—नापने की ज़ञ्जीर
- **शृङ्खलः**—पुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—ज़ञ्जीर, श्रेणी, परम्परा
- **शृङ्खला**—स्त्री°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—लोहे की जञ्जीर, बेड़ी
- **शृङ्खला**—स्त्री°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—ज़ञ्जीर, हथकड़ी
- **शृङ्खला**—स्त्री°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—हाथी के पैरों को बाँधने की ज़ञ्जीर
- **शृङ्खला**—स्त्री°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—कमर की पेटी, करधनी
- **शृङ्खला**—स्त्री°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—नापने की ज़ञ्जीर
- **शृङ्खला**—स्त्री°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—ज़ञ्जीर, श्रेणी, परम्परा
- **शृङ्खलम्**—नपुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—लोहे की जञ्जीर, बेड़ी
- **शृङ्खलम्**—नपुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—ज़ञ्जीर, हथकड़ी
- **शृङ्खलम्**—नपुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—हाथी के पैरों को बाँधने की ज़ञ्जीर
- **शृङ्खलम्**—नपुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—कमर की पेटी, करधनी
- **शृङ्खलम्**—नपुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—नापने की ज़ञ्जीर
- **शृङ्खलम्**—नपुं°—-—शृङ्गात् प्राधान्यात् स्खल्यते अनेन, पृषो°—ज़ञ्जीर, श्रेणी, परम्परा
- **शृङ्खलयमकम्**—नपुं°—शृङ्खलः-यमकम्—-—यमक अलङ्कार का एक भेद

- **शृङ्खलकः**—पुं°—-—शृङ्खल + कन्—ज़ञ्जीर
- **शृङ्खलकः**—पुं°—-—शृङ्खल + कन्—ऊँट
- **शृङ्खलित**—वि°—-—शृङ्खला + इतच्—ज़ञ्जीर में जकड़ा हुआ, बेड़ी पड़ा हुआ, बँधा हुआ
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—शृ + गन्, पृषो° मुम् ह्रस्वश्च—सींग
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—पहाड़ की चोटी
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—भवन की चोटी, बुर्जी
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—उत्तुंगता, ऊँचाई
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—प्रभुता, स्वामित्व, सर्वोपरिता, प्रमुखता
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—चन्द्रचूड़ा, चाँद की नोक
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—चोटी, नोक, अग्रभाग
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—(भैंस आदि का)) सींग जो फूंक मार कर बजाया जाता है
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—पिचकारी
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—कामोद्रेक, अभिलाषोदय
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—निशान, चिह्न
- **शृङ्गम्**—नपुं°—-—-—कमल
- **शृङ्गान्तरम्**—नपुं°—शृङ्गम्-अन्तरम्—-—(गौ आदि पशुओं के)सींगों का मध्यवर्ती स्थान
- **शृङ्गुच्चयः**—पुं°—शृङ्गम्-उच्चयः—-—ऊँची चोटी
- **शृङ्गजः**—पुं°—शृङ्गम्-जः—-—बाण
- **शृङ्गजम्**—नपुं°—शृङ्गम्-जम्—-—अगर की लकड़ी
- **शृङ्गप्रहारिन्**—वि°—शृङ्गम्-प्रहारिन्—-—सींग से मारने वाला
- **शृङ्गप्रियः**—पुं°—शृङ्गम्-प्रियः—-—शिव का विशेषण
- **शृङ्गमोहिन्**—पुं°—शृङ्गम्-मोहिन्—-—चम्पक वृक्ष
- **शृङ्गवेरम्**—नपुं°—शृङ्गम्-वेरम्—-—वर्तमान मिर्जापुर के निकट गंगा के किनारे बसा हुआ एक नगर
- **शृङ्गवेरम्**—नपुं°—शृङ्गम्-वेरम्—-—अदरक
- **शृङ्गकः**—पुं°—-—शृङ्ग + कन्—सींग
- **शृङ्गकः**—पुं°—-—शृङ्ग + कन्—चन्द्रमा की नोक, चन्द्रचूड़ा
- **शृङ्गकः**—पुं°—-—शृङ्ग + कन्—कोई भी नोकीली वस्तु

- **शृङ्गकः**—पुं०—-—शृङ्ग + कन्—पिचकारी
- **शृङ्गकम्**—नपुं०—-—शृङ्ग + कन्—सींग
- **शृङ्गकम्**—नपुं०—-—शृङ्ग + कन्—चन्द्रमा की नोक, चन्द्रचूड़ा
- **शृङ्गकम्**—नपुं०—-—शृङ्ग + कन्—कोई भी नोकीली वस्तु
- **शृङ्गकम्**—नपुं०—-—शृङ्ग + कन्—पिचकारी
- **शृङ्गवत्**—वि०—-—शृङ्ग + मतुप्—चोटीवाला
- **शृङ्गवत्**—पुं०—-—-—पहाड़
- **शृङ्गाटः**—पुं०—-—शृङ्गं प्रधान्यम् अटति-शृङ्ग + अट् + अण्—एक पहाड़
- **शृङ्गाटः**—पुं०—-—शृङ्गं प्रधान्यम् अटति-शृङ्ग + अट् + अण्—एक पौधा
- **शृङ्गाटम्**—नपुं०—-—-—चौराहा
- **शृङ्गाटकः**—पुं०—-—-—एक पहाड़
- **शृङ्गाटकः**—पुं०—-—-—एक पौधा
- **शृङ्गाटकम्**—नपुं०—-—-—चौराहा
- **शृङ्गारः**—पुं०—-—शृङ्गं कामोद्रेकमृच्छत्यनेन ऋ + अण्—प्रणयरस, कामोन्माद, रतिरस
- **शृङ्गारः**—पुं०—-—शृङ्गं कामोद्रेकमृच्छत्यनेन ऋ + अण्—प्रेम, प्रणयोन्माद संभोगेच्छा
- **शृङ्गारः**—पुं०—-—शृङ्गं कामोद्रेकमृच्छत्यनेन ऋ + अण्—शृङ्गारिक समालापों के उपयुक्त वेश, ललित वेशभूषा
- **शृङ्गारः**—पुं०—-—शृङ्गं कामोद्रेकमृच्छत्यनेन ऋ + अण्—मैथुन, संभोग
- **शृङ्गारः**—पुं०—-—शृङ्गं कामोद्रेकमृच्छत्यनेन ऋ + अण्—हाथी के शरीर पर बनाये गए सिंदूर के निशान
- **शृङ्गारः**—पुं०—-—शृङ्गं कामोद्रेकमृच्छत्यनेन ऋ + अण्—चिह्न
- **शृङ्गारम्**—नपुं०—-—-—लौगं
- **शृङ्गारम्**—नपुं०—-—-—सिंदूर
- **शृङ्गारम्**—नपुं०—-—-—अदरक
- **शृङ्गारम्**—नपुं०—-—-—शरीर या वस्त्रों के लिए सुगन्धित चूर्ण
- **शृङ्गारम्**—नपुं०—-—-—काला अगर
- **शृङ्गारचेष्टा**—स्त्री०—शृङ्गारः-चेष्टा—-—कामानुरक्ति का संकेत
- **शृङ्गारभाषितम्**—नपुं०—शृङ्गारः-भाषितम्—-—प्रेमालाप, प्रणयकथा
- **शृङ्गारभूषणम्**—नपुं०—शृङ्गारः-भूषणम्—-—सिंदूर

- **शृङ्गारयोनिः**—पुं°स्त्री°—शृङ्गारः-योनिः—–—कामदेव का विशेषण
- **शृङ्गाररसः**—पुं°—शृङ्गारः-रसः—–—साहित्यशास्त्र में वर्णित शृंगाररस, प्रणयरस
- **शृङ्गारविधिः**—पुं°—शृङ्गारः-विधिः—–—प्रेमालापों के उपयुक्त वेशभूषा (जिसे पहन कर प्रेमी अपने प्रिय से मिलता है)
- **शृङ्गारसहायः**—पुं°—शृङ्गारः-सहायः—–—प्रेमाव्यापार में सहायक व्यक्ति, नर्मसचिव
- **शृङ्गारकः**—पुं°—-—शृङ्गार + कन्—प्रेम
- **शृङ्गारकम्**—नपुं°—–—-—सिंदूर
- **शृङ्गारित**—वि°—-—शृङ्गार + इतच्—प्रेमाविष्ट, प्रणयोन्मत्त
- **शृङ्गारित**—वि°—-—शृङ्गार + इतच्—सिंदूर से लाल
- **शृङ्गारित**—वि°—-—शृङ्गार + इतच्—अलंकृत, सजा हुआ
- **शृङ्गारिन्**—वि°—-—शृङ्गार + इनि—शृङ्गारप्रिय, प्रेमासक्त, प्रणयोन्मत्त
- **शृङ्गारिन्**—पुं°—–—-—प्रणयोन्मत्त, प्रेमी
- **शृङ्गारिन्**—पुं°—–—-—लाल
- **शृङ्गारिन्**—पुं°—–—-—हाथी
- **शृङ्गारिन्**—पुं°—–—-—वेशभूषा, सजावट
- **शृङ्गारिन्**—पुं°—–—-—सुपारी का पेड़
- **शृङ्गारिन्**—पुं°—–—-—पान का बीड़ा
- **शृङ्गिः**—पुं°—-—-—आभूषणों के लिए सोना
- **शृङ्गिः**—स्त्री°—-—-—सिंगी मछली
- **शृङ्गिकम्**—नपुं°—–—शृङ्ग + ठन्—एक प्रकार का विष
- **शृङ्गिका**—स्त्री°—–—-—एक प्रकार का भूर्जवृक्ष
- **शृङ्गिणः**—पुं°—-—शृङ्ग + इनन्—भेड़ा, मेंढ़ा
- **शृङ्गिणी**—स्त्री°—-—शृङ्गिन् + ङीष्—गाय
- **शृङ्गिणी**—स्त्री°—-—शृङ्गिन् + ङीष्—एक प्रकार की मल्लिका, मोतिया
- **शृङ्गिन्**—वि°—–—शृङ्ग + इनि—सींगों वाला
- **शृङ्गिन्**—वि°—–—शृङ्ग + इनि—शिखाधारी, चोटी वाला
- **शृङ्गिन्**—पुं°—–—-—पहाड़
- **शृङ्गिन्**—पुं°—–—-—हाथी

- **शृङ्गिन्**—पुं°———–—वृक्ष
- **शृङ्गिन्**—पुं°———–—शिव के एक गण का नाम
- **शृङ्गी**—स्त्री°—–—शृङ्ग + ङीष्—आभूषणों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सोना
- **शृङ्गी**—स्त्री°—–—शृङ्ग + ङीष्—एक औषधि-मूल, काकड़ासिंगी, अतीस
- **शृङ्गी**—स्त्री°—–—शृङ्ग + ङीष्—एक प्रकार का विष
- **शृङ्गी**—स्त्री°—–—शृङ्ग + ङीष्—सिंगी मछली
- **शृङ्गीकनकम्**—नपुं°—शृङ्गी-कनकम्——गहना बनाने के लिए सोना
- **शृणिः**—स्त्री°—–—शृ + क्तिन्, पृषो° तस्य नः, हुस्वश्च—अंकुश, प्रतोद
- **शृत**—भू° क° कृ°——शृ+ क्त—पकाया हुआ
- **शृत**—भू° क° कृ°——शृ+ क्त—उबाला हुआ (पानी, दूध आदि)
- **शृध्**—भ्वा° आ° <शर्धते>———–—अपान वायु छोड़ना, पाद मारना
- **शृध्**—भ्वा° उभ° <शर्धति>, <शर्धते>———–—आर्द्र करना, गीला करना
- **शृध्**—भ्वा° उभ° <शर्धति>, <शर्धते>———–—काट डालना
- **शृध्**—चुरा° उभ° <शर्धयति>, <शर्धयते>———–—प्रयत्न करना
- **शृध्**—चुरा° उभ° <शर्धयति>, <शर्धयते>———–—लेना, ग्रहण करना
- **शृध्**—चुरा° उभ° <शर्धयति>, <शर्धयते>———–—अपमान करना (पाद मार कर) नकल करना, मजाक उड़ाना
- **शृधुः**—पुं°—–—शृध् + कु—बुद्धि
- **शृधुः**—पुं°—–—शृध् + कु—गुदा
- **शृ**—क्र्या° पर° <शृणाति>, <शीर्ण>———–—फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े कर डालना
- **शृ**—क्र्या° पर° <शृणाति>, <शीर्ण>———–—चोट पहुँचाना, क्षति ग्रस्त करना
- **शृ**—क्र्या° पर° <शृणाति>, <शीर्ण>———–—मार डालना, नष्ट करना
- **शृ**—क्र्या°, कर्मवा° <शीर्यते>———–—चिथड़े-चिथड़े होना, कुम्हलाना, मुरझाना, बर्बाद होना
- **अवशृ**—क्र्या° पर°—अव-शृ——जबरन लें भागना
- **अवशृ**—क्र्या°, कर्मवा°—अव-शृ——मुर्झाना, कुम्हलाना
- **शेखरः**—पुं°—–—शिख् + अरन्, पृषो°—चूड़ा, कलगीं, फूलों का गजरा, सिर पर लपेटी हुई माला
- **शेखरः**—पुं°—–—शिख् + अरन्, पृषो°—किरीट, मुकुट
- **शेखरः**—पुं°—–—शिख् + अरन्, पृषो°—चोटी, शृंग

- **शेखरः**—पुं°—-—शिख् + अरन्, पृषो°—किसी भी श्रेणी का सर्वोत्तम या प्रमुखतम
- **शेखरः**—पुं°—-—शिख् + अरन्, पृषो°—गीत का ध्रुव विशेष
- **शेखरम्**—नपुं°—-—-—लौंग
- **शेपः**—पुं°—-—शी + पन्—लिंग, पुरुषकी जननेन्द्रिय
- **शेपः**—पुं°—-—शी + पन्—अंडकोष
- **शेपः**—पुं°—-—शी + पन्—पूँछ
- **शेपस्**—नपुं°—-—शी + असुन्, पुट्—लिंग, पुरुषकी जननेन्द्रिय
- **शेपस्**—नपुं°—-—शी + असुन्, पुट्—अंडकोष
- **शेपस्**—नपुं°—-—शी + असुन्, पुट्—पूँछ
- **शेफः**—पुं°—-—शी + फन्—लिंग, पुरुषकी जननेन्द्रिय
- **शेफः**—पुं°—-—शी + फन्—अंडकोष
- **शेफः**—पुं°—-—शी + फन्—पूँछ
- **शेफम्**—नपुं°—-—शी + असुन् —लिंग, पुरुषकी जननेन्द्रिय
- **शेफम्**—नपुं°—-—शी + असुन् —अंडकोष
- **शेफम्**—नपुं°—-—शी + असुन् —पूँछ
- **शेफस्**—नपुं°—-—शी + असुन्, फुक्—लिंग, पुरुषकी जननेन्द्रिय
- **शेफस्**—नपुं°—-—शी + असुन्, फुक्—अंडकोष
- **शेफस्**—नपुं°—-—शी + असुन्, फुक्—पूँछ
- **शेफालिः**—स्त्री°—-—शेफाः शयनशालिनः अलयो यत्र-ब° स°—एक प्रकार का पौधा, निर्गुण्डी, नीलिका, नील सिधुवार का पौधा
- **शेफाली**—स्त्री°—-—शेफालि + ङीष्—एक प्रकार का पौधा, निर्गुण्डी, नीलिका, नील सिधुवार का पौधा
- **शेफालिका**—स्त्री°—-—शेफालि + कन् + टाप्—एक प्रकार का पौधा, निर्गुण्डी, नीलिका, नील सिधुवार का पौधा
- **शेमुषी**—स्त्री°—-—शी + क्वि=शेः मोहः तं मुष्णाति-शे + मुष् + क + ङीष्—बुद्धि, समझ
- **शेल्**—भ्वा° पर° <शेलति>—-—-—जाना, हिलना-जुलना
- **शेल्**—भ्वा° पर° <शेलति>—-—-—कांपना
- **शेवः**—पुं°—-—शुक्रपाते सति शेते-शी + वन्—साँप
- **शेवः**—पुं°—-—शुक्रपाते सति शेते-शी + वन्—लिंग
- **शेवः**—पुं°—-—शुक्रपाते सति शेते-शी + वन्—ऊचाई, उत्तुंगता

- **शेवः**—पुं°—-—शुक्रपाते सति शेते-शी + वन्—आनन्द
- **शेवः**—पुं°—-—शुक्रपाते सति शेते-शी + वन्—दौलत, खजाना
- **शेवम्**—नपुं°—-—-—लिंग
- **शेवम्**—नपुं°—-—-—आनन्द
- **शेवधिः**—पुं°—शेवः-धिः—-—मूल्यवान् कोष
- **शेवधिः**—पुं°—शेवः-धिः—-—कुबेर के नौ कोषों में से एक
- **शेवलम्**—नपुं°—-—शी + विच् तथा भूतः सन् वलते वल् + अच्—मोथे की भांति हरे रंग का पदार्थ जो पानी के ऊपर उग आता है, काई
- **शेवलम्**—नपुं°—-—शी + विच् तथा भूतः सन् वलते वल् + अच्—एक प्रकार का पौधा
- **शेवलिनी**—स्त्री°—-—शेवल + इनि + ङीप्—नदी
- **शेवालः**—पुं°—-—शी + विच् तथा भूतः सन् वलते वल् + अच्—मोथे की भांति हरे रंग का पदार्थ जो पानी के ऊपर उग आता है, काई
- **शेवालः**—पुं°—-—शी + विच् तथा भूतः सन् वलते वल् + अच्—एक प्रकार का पौधा
- **शेष**—वि°—-—शिष् + अच्—बचा हुआ, बाकी, अन्य सब
- **शेषः**—पुं°—-—-—बचा हुआ, बाकी, अवशिष्ट
- **शेषः**—पुं°—-—-—छोड़ी हुई कोई बात, या भूली हुई बात
- **शेषः**—पुं°—-—-—बचाव, मुक्ति, श्रान्ति
- **शेषम्**—नपुं°—-—-—बचा हुआ, बाकी, अवशिष्ट
- **शेषम्**—नपुं°—-—-—छोड़ी हुई कोई बात, या भूली हुई बात
- **शेषम्**—नपुं°—-—-—बचाव, मुक्ति, श्रान्ति
- **शेषः** —पुं°—-—-—परिणाम, प्रभाव
- **शेषः** —पुं°—-—-—अन्त, समाप्ति, उपसंहार
- **शेषः** —पुं°—-—-—मृत्यु, विनाश
- **शेषः** —पुं°—-—-—एक विख्यात नाग का नाम
- **शेषः** —पुं°—-—-—बलराम (जो शेष का अवतार माना जाता है)
- **शेषा**—स्त्री°—-—-—फूल तथा अन्य चढ़ावा जो मूर्ति के सामने प्रस्तुत किया जाता है और उसके पुण्य अवशेष के रूप में पूजा करने वालों में बाँट दिया जाता है
- **शेषम्**—नपुं°—-—-—उच्छिष्ट अन्न, चढ़ावे का अवशेष
- **शेषान्नम्**—नपुं°—शेष-अन्नम्—-—जूठन्

- **शेषावस्था**—स्त्री°—शेष-अवस्था———बुढ़ापा
- **शेषभागः**—पुं°—शेष-भागः———शेष, बाक़ी
- **शेषभोजनम्**—नपुं°—शेष-भोजनम्———जूठनखाना
- **शेषरात्रिः**—स्त्री°—शेष-रात्रिः———रात का चौथा पहर
- **शेषशयनः**—पुं°—शेष-शयनः———विष्णु के विशेषण
- **शैक्षः**—पुं°———शिक्षां वेत्त्यधीते अण् वा—शिक्षा अर्थात् उच्चारण शास्त्र को पढ़ने वाला विद्यार्थी, जिसने वेदाध्ययन अभी अभी आरम्भ किया है
- **शैक्षः**—पुं°———शिक्षां वेत्त्यधीते अण् वा—नौसिखिया, नवशिष्य
- **शैक्षिकः**—पुं°———शिक्षा + ठक्—शिक्षाशास्त्र में निष्णात
- **शैक्ष्यम्**—नपुं°———शिक्षा + यत्—अधिगम, प्रवीणता
- **शैघ्र्यम्**—नपुं°———शीघ्र + ष्यञ्—फुर्ती, सत्वरता
- **शैत्यम्**—नपुं°———शीत + ष्यञ्—ठंडक, शीतलता, जमाव
- **शैथिल्यम्**—नपुं°———शिथिल + ष्यञ्—ढीलापन, नरसी
- **शैथिल्यम्**—नपुं°———शिथिल + ष्यञ्—मन्थरता
- **शैथिल्यम्**—नपुं°———शिथिल + ष्यञ्—दीर्घसूत्रता, अनवधानता
- **शैथिल्यम्**—नपुं°———शिथिल + ष्यञ्—कमज़ोरी, भीरुता
- **शैनेयः**—पुं°———शिनि + ढक्—सात्यकि का नाम
- **शैन्याः**—पुं°, ब° व°———शिनि + यञ्—शिनि की सन्तान, शिनि के वंशज
- **शैब्य**—पुं°———शिबि + ञ्य—कृष्ण के चार घोड़ों में से एक
- **शैब्य**—पुं°———शिबि + ञ्य—पांडव सेना का एक योद्धा, एक राजा का नाम
- **शैब्य**—पुं°———शिबि + ञ्य—घोड़ा
- **शैलः**—पुं°———शिला + अण्—पर्वत, पहाड़
- **शैलः**—पुं°———शिला + अण्—चट्टान, बड़ा भारी पत्थर
- **शैलम्**—नपुं°————सुहागा, धूप, गुग्गुल
- **शैलम्**—नपुं°————शिलाजीत
- **शैलम्**—नपुं°————एक प्रकार का अंजन
- **शैलांशः**—पुं°—शैलः-अंशः———एक देश का नाम
- **शैलाग्रम्**—नपुं°—शैलः-अग्रम्———पहाड़ की चोटी

- **शैलाटः**—पुं°—शैलः-अटः—-—पहाड़ी, असभ्य
- **शैलाटः**—पुं°—शैलः-अटः—-—किसी देवमूर्ति का पुजारी
- **शैलाटः**—पुं°—शैलः-अटः—-—सिंह
- **शैलाटः**—पुं°—शैलः-अटः—-—स्फटिक
- **शैलाधिपः**—पुं°—शैलः-अधिपः—-—हिमालय पर्वत के विशेषण
- **शैलाधिराजः**—पुं°—शैलः-अधिराजः—-—हिमालय पर्वत के विशेषण
- **शैलेन्द्रः**—पुं°—शैलः-इन्द्रः—-—हिमालय पर्वत के विशेषण
- **शैलपतिः**—पुं°—शैलः-पतिः—-—हिमालय पर्वत के विशेषण
- **शैलराजः**—पुं°—शैलः-राजः—-—हिमालय पर्वत के विशेषण
- **शैलाख्यम्**—नपुं°—शैलः-आख्यम्—-—शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप
- **शैलकटकः**—पुं°—शैलः-कटकः—-—पहाड़ की ढलान
- **शैलगन्धम्**—नपुं°—शैलः-गन्धम्—-—एक प्रकार का चन्दन
- **शैलजम्**—नपुं°—शैलः-जम्—-—शैलेय गन्ध द्रव्य, धूप
- **शैलजम्**—नपुं°—शैलः-जम्—-—शिलाजीत
- **शैलजा**—स्त्री°—शैलः-जा—-—पार्वती के विशेषण
- **शैलधन्वन्**—पुं°—शैलः-धन्वन्—-—शिव का विशेषण
- **शैलधरः**—पुं°—शैलः-धरः—-—कृष्ण का विशेषण
- **शैलनिर्यासः**—पुं°—शैलः-निर्यासः—-—शैलेयगन्धद्रव्य, धूप
- **शैलपत्रः**—पुं°—शैलः-पत्रः—-—बेल का पेड़
- **शैलभित्तिः**—स्त्री°—शैलः-भित्तिः—-—पत्थर काटने का उपकरण, टांकी
- **शैलरन्ध्रम्**—नपुं°—शैलः-रन्ध्रम्—-—गुफा, कन्दरा
- **शैलशिविरम्**—नपुं°—शैलः-शिविरम्—-—समुद्र
- **शैलसार**—वि°—शैलः-सार—-—पत्थर की तरह सबल, चट्टान की तरह दृढ़
- **शैलकम्**—नपुं°—-—शैल + कन्—शैलेयगन्ध द्रव्य, धूप
- **शैलकम्**—नपुं°—-—शैल + कन्—शीलाजीत
- **शैलादिः**—पुं°—-—शिलादस्यापत्यम्-शिलाद + इञ्—शिव का गण, नन्दी
- **शैलालिन्**—पुं°—-—शिलालिना मुनिना प्रोक्तं नटसूत्रमधीयते-शिलालि + णिनि—अभिनेता,नर्तक

- **शैलिक्यः**—पुं॰—-—गर्हितं शीलमस्त्य-ठन्, शीलिक + ष्यञ्—पाखण्डी, दम्भी, ठग
- **शैली**—स्त्री॰—-—शीलमेव स्वार्थे ष्यञ् ङीपि यलोपः—व्याकरण सूत्र की संक्षिप्त वृत्ति
- **शैली**—स्त्री॰—-—शीलमेव स्वार्थे ष्यञ् ङीपि यलोपः—अभिव्यक्ति या अर्थकरण का एक प्रकार
- **शैली**—स्त्री॰—-—शीलमेव स्वार्थे ष्यञ् ङीपि यलोपः—व्यवाहार, काम करने का ढंग, आचरण, क्रम
- **शैलूषः**—पुं॰—-—शिलूषस्यापत्यम्-शिलूष + अण्—अभिनेता, नर्तक
- **शैलूषः**—पुं॰—-—शिलूषस्यापत्यम्-शिलूष + अण्—वादित्र-कुशल
- **शैलूषः**—पुं॰—-—शिलूषस्यापत्यम्-शिलूष + अण्—संगीत सभा में तालधारक
- **शैलूषः**—पुं॰—-—शिलूषस्यापत्यम्-शिलूष + अण्—धूर्त
- **शैलूषः**—पुं॰—-—शिलूषस्यापत्यम्-शिलूष + अण्—बेल का पेड़
- **शैलूषिकः**—पुं॰—-—शैलूषं तद्वृत्तिम् अन्वेष्टा-ठक्—जो अभिनेता का व्यवसाय करता हो
- **शैलेय**—वि॰—-—शिलायां भवः, शिला + ढक्—पहाड़ी
- **शैलेय**—वि॰—-—शिलायां भवः, शिला + ढक्—चट्टानों से उत्पन्न
- **शैलेय**—वि॰—-—शिलायां भवः, शिला + ढक्—पत्थर की तरह कड़ा, पथरीला
- **शैलेयः**—पुं॰—-—-—सिंह
- **शैलेयः**—पुं॰—-—-—भ्रमर
- **शैलेयम्**—नपुं॰—-—-—पर्वत गंधद्रव्य, धूप
- **शैलेयम्**—नपुं॰—-—-—सुगंधित राल
- **शैलेयम्**—नपुं॰—-—-—सेंधा नमक
- **शैल्य**—वि॰—-—शिला + ष्यञ्—पथरीला
- **शैल्यम्**—नपुं॰—-—-—चट्टान जैसी कठोरता, कड़ापन
- **शैव**—वि॰—-—शिवो देवताऽस्य-अण्—शिवसंबधी
- **शैवः**—पुं॰—-—-—हिन्दुओं के तीन मुख्य संप्रदायों में से एक
- **शैवः**—पुं॰—-—-—शैव संप्रदाय का पुरुष
- **शैवम्**—नपुं॰—-—-—अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम
- **शैवलः**—पुं॰—-—शी + वलच्—एक प्रकार का जलीय पौधा, पद्मकाष्ठ, सेवार, काई, मोथा
- **शैवलम्**—नपुं॰—-—-—एक प्रकार की सुगंधित लकड़ी
- **शैवलिनी**—स्त्री॰—-—शैवल + इनि + ङीष्—नदी

- **शैवाल**—वि॰—-—-—एक प्रकार की सुगंधित लकड़ी
- **शैव्यः**—पुं॰—-—शिवि + ञ्य—कृष्ण के चार घोड़ों में से एक
- **शैव्यः**—पुं॰—-—शिवि + ञ्य—पांडव सेना का एक योद्धा, एक राजा का नाम
- **शैव्यः**—पुं॰—-—शिवि + ञ्य—घोड़ा
- **शैशवम्**—नपुं॰—-—शिशोभविः अण्—बचपन, बाल्यावस्था (सोलह वर्ष से नीचे का समय)
- **शैशिर**—वि॰—-—शिशिर + अण्—जाड़े के मौसम से संबन्ध रखने वाला
- **शैशिरः**—पुं॰—-—-—काले रंग का चातकपक्षी
- **शैष्योपाध्यायिका**—स्त्री॰—-—शिष्योपाध्याय + वुञ्—किशोरावस्था के छात्रों को पढ़ाना
- **शो**—दिवा॰ पर॰ <श्यति>, <शात>, <शित> कर्मवा॰ <शायते>, प्रेर॰<शाययति>, इच्छा॰ <शिशासति>—-—-—पैनाना, तेज़ करना
- **शो**—दिवा॰ पर॰ <श्यति>, <शात>, <शित> कर्मवा॰ <शायते>, प्रेर॰<शाययति>, इच्छा॰ <शिशासति>—-—-—पतला करना, कृश करना
- **निशो**—दिवा॰ पर॰—नि-शो—-—तेज़ करना
- **शोकः**—पुं॰—-—शुच् + घञ्—अफसोस, रंज, दुःख, कष्ट, विलाप, रुदन, वेदना
- **शोकाग्निः**—पुं॰—शोकः-अग्निः—-—शोक रूपी आग
- **शोकानलः**—पुं॰—शोकः-अनलः—-—शोक रूपी आग
- **शोकापनोदः**—पुं॰—शोकः-अपनोदः—-—रंज को दूर करना
- **शोकाभिभूत**—वि॰—शोकः-अभिभूत—-—कष्टग्रस्त, वेदनाग्रस्त
- **शोकाकुल**—वि॰—शोकः-आकुल—-—कष्टग्रस्त, वेदनाग्रस्त
- **शोकाविष्ट**—वि॰—शोकः-आविष्ट—-—कष्टग्रस्त, वेदनाग्रस्त
- **शोकोपहत**—वि॰—शोकः-उपहत—-—कष्टग्रस्त, वेदनाग्रस्त
- **शोकविह्वल**—वि॰—शोकः-विह्वल—-—कष्टग्रस्त, वेदनाग्रस्त
- **शोकचर्चा**—स्त्री॰—शोकः-चर्चा—-—शोक में लीन
- **शोकनाशः**—पुं॰—शोकः-नाशः—-—अशोकवृक्ष
- **शोकपरायण**—वि॰—शोकः-परायण—-—शोक से ग्रस्त, पीडाभिभूत
- **शोकलासक**—वि॰—शोकः-लासक—-—शोक से ग्रस्त, पीडाभिभूत
- **शोकविकल**—वि॰—शोकः-विकल—-—शोकाकुल
- **शोकस्थानम्**—नपुं॰—शोकः-स्थानम्—-—शोक का कारण
- **शोचनम्**—नपुं॰—-—शुच् + ल्युट्—रंज, अफसोस, विलाप

- **शोचनीय**—वि°—-—शुच् + अनीयर्—विलाप करने योग्य, चिन्त्य, शोच्य, दुःखद
- **शोच्य**—वि°—-—शुच् + ण्यत्—शोचनीय, विलाप करने योग्य, चिन्तनीय, दयनीय
- **शोच्य**—वि°—-—शुच् + ण्यत्—कमीना, दुश्चरित्र
- **शोचिस्**—नपुं°—-—शुच् + इसि—प्रकाश, क्रान्ति, चमक
- **शोचिस्**—नपुं°—-—शुच् + इसि—ज्वाला
- **शोचिष्केशः**—पुं°—शोचिस्-केशः—-—अग्नि का विशेषण
- **शोटीर्यम्**—नपुं°—-—शुटीर + ष्यञ्, शौटीर्यम् इति साधुः —पराक्रम, शौर्य, शूरवीरता
- **शोठ**—वि°—-—शुठ् + अच्—मूर्ख
- **शोठ**—वि°—-—शुठ् + अच्—कमीना, अधम
- **शोठ**—वि°—-—शुठ् + अच्—आलसी, सुस्त
- **शोठः**—पुं°—-—-—मूर्ख
- **शोठः**—पुं°—-—-—निकम्मा, आलसी
- **शोठः**—पुं°—-—-—अधम या कमीना पुरुष
- **शोठः**—पुं°—-—-—धूर्त, ठग
- **शोण्**—भ्वा° पर° <शोणति>—-—-—जाना, हिलना-जुलना
- **शोण**—वि°—-—शोण् + अच्—लाल, गहरा लाल रंग, हल लालका रंग
- **शोण**—वि°—-—शोण् + अच्—लाख के रंग का, लालिमायुक्त भूरा
- **शोणः**—पुं°—-—-—लोहित वर्ण, लाल रंग
- **शोणः**—पुं°—-—-—आग
- **शोणः**—पुं°—-—-—एक प्रकार का लाल रंग का गन्ना, ईख
- **शोणः**—पुं°—-—-—कुम्मैत घोड़ा
- **शोणः**—पुं°—-—-—एक दरिया का नाम जो गोंडवाना से निकलकर पटना के निकट गंगा में गिरती है
- **शोणः**—पुं°—-—-—मंगलग्रह
- **शोणम्**—नपुं°—-—-—रुधिर
- **शोणम्**—नपुं°—-—-—सिंदूर
- **शोणाम्बुः**—पुं°—शोण-अम्बुः—-—एक प्रकार का बादल जो प्रलय के समय उठता है
- **शोणाश्मन्**—पुं°—शोण-अश्मन्—-—लाल पत्थर

- **शोणाश्मन्**—पुं°—शोण-अश्मन्—-—लाल, एक माणिक्य
- **शोणोपलः**—पुं°—शोण-उपलः—-—लाल पत्थर
- **शोणोपलः**—पुं°—शोण-उपलः—-—लाल, एक माणिक्य
- **शोणपद्मम्**—नपुं°—शोण-पद्मम्—-—लाल रंग का कमल
- **शोणरत्नम्**—नपुं°—शोण-रत्नम्—-—लाल नामक माणिक्य, पद्मरागमणि
- **शोणित**—वि°—-—शोण + इतच्—लाल, लोहित, रक्त वर्ण का
- **शोणितम्**—नपुं°—-—-—रुधिर
- **शोणितम्**—नपुं°—-—-—केसर, जाफ़रान
- **शोणिताह्वयम्**—नपुं°—शोणित-आह्वयम्—-—केसर, जाफ़रान
- **शोणितोक्षित**—वि°—शोणित-उक्षित—-—रक्तरंजित
- **शोणितोपलः**—पुं°—शोणित-उपलः—-—पद्मरागमणि
- **शोणितचन्दनम्**—नपुं°—शोणित-चन्दनम्—-—लाल चंदन
- **शोणितप**—वि°—शोणित-प—-—रुधिर पीने वाला
- **शोणितपुरम्**—नपुं°—शोणित-पुरम्—-—बाणासुर का नगर
- **शोणिमन्**—पुं°—-—शोण + इमनीच्—लालिमा, लाली
- **शोथः**—पुं°—-—शु + थन्—सूजन, स्फीति
- **शोथघ्न**—वि°—शोथः-घ्न—-—सूजन को दूर करने वाला, सूजन या स्फीति को हटाने वाली औषधि
- **शोथजिह्वाः**—पुं°—शोथः-जिह्वाः—-—पुनर्नवा
- **शोथरोगः**—पुं°—शोथः-रोगः—-—हाथ पाँव आदि में सूजन होने का रोग, जलोदर
- **शोथहृत्**—वि°—शोथः-हृत्—-—सूजन हटाने वाली दवा
- **शोथहृत्**—पुं°—शोथः-हृत्—-—भिलावाँ
- **शोधः**—पुं°—-—शुध् + घञ्—शुद्धिसंस्कार
- **शोधः**—पुं°—-—शुध् + घञ्—संशोधन, समाधान
- **शोधः**—पुं°—-—शुध् + घञ्—ऋणभुगतान, (ऋण) परिशोध
- **शोधः**—पुं°—-—शुध् + घञ्—प्रतिहिंसा, प्रतिदान, बदला
- **शोधक**—वि°—-—शुध् + णिच् + ण्वुल्—शुद्ध करने वाला
- **शोधक**—वि°—-—शुध् + णिच् + ण्वुल्—रेचक

- **शोधक**—वि॰—-—शुध् + णिच् + ण्वुल्—संशोधन करने वाला
- **शोधन**—वि॰—-—शुध् + णिच् + ल्युट्—शुद्ध करने वाला, स्वच्छ करने वाला
- **शोधनम्**—नपुं॰—-—-—शुद्ध करना, स्वच्छ करना
- **शोधनम्**—नपुं॰—-—-—संशोधन, (ऋण) परिशोधन करना
- **शोधनम्**—नपुं॰—-—-—यथार्थ निर्धारण
- **शोधनम्**—नपुं॰—-—-—अदायगी, बेबाकी, ऋण चुकाना
- **शोधनम्**—नपुं॰—-—-—प्रायश्चित, परिशोधन
- **शोधनम्**—नपुं॰—-—-—धातुओं को साफ़ करना
- **शोधनम्**—नपुं॰—-—-—प्रतिहिंसा, प्रतिदान, दण्ड
- **शोधनम्**—नपुं॰—-—-—व्यवकलन
- **शोधनम्**—नपुं॰—-—-—तूतिया
- **शोधनम्**—नपुं॰—-—-—मल, विष्ठा
- **शोधनकः**—पुं॰—-—शोधन + कन्—दंड-न्यायालय का एक अधिकारी
- **शोधनकः**—पुं॰—-—-—फ़ौजदारी अदालत का अफ़सर
- **शोधनी**—स्त्री॰—-—शोधन + ङीष्—झाड़ू, बुहारी
- **शोधित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—शुध् + णिच् + क्त—शुद्ध किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ
- **शोधित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—संस्कृत
- **शोधित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—छाना हुआ
- **शोधित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—संशोधित, समाहित
- **शोधित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—ऋण परिशोध किया हुआ, चुकाया हुआ
- **शोधित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—बदला लिया हुआ, प्रतिहिंसा की हुई
- **शोध्य**—वि॰—-—शुध् + णिच् + यत्—शुध्द किये जाने के योग्य, संस्कृत किये जाने के योग्य ऋण परिशोध किये जाने के योग्य
- **शोध्यः**—पुं॰—-—-—अभियुक्तव्यक्ति, वह पुरुष जिसने लगाये हुए आरोप से अपने आप को मुक्त करना है
- **शोफः**—पुं॰—-—शु + फन्—सूजन, अर्बुद, रसौली, शोथ
- **शोफजित्**—पुं॰—शोफः-जित्—-—भिलावे का पौधा
- **शोफहृत्**—पुं॰—शोफः-हृत्—-—भिलावे का पौधा
- **शोभन**—वि॰—-—शोभते-शुभ + ल्युट्—चमकीला, शानदार

- **शोभन**—वि०——शोभते-शुभ + ल्युट्—मनोहर, सुन्दर, लावण्यमय
- **शोभन**—वि०——शोभते-शुभ + ल्युट्—भद्र, शुभ, सौभाग्य शाली
- **शोभन**—वि०——शोभते-शुभ + ल्युट्—खूब सजाया हुआ
- **शोभन**—वि०——शोभते-शुभ + ल्युट्—सदाचारी, पुण्यात्मा
- **शोभनः**—पुं०————शिव
- **शोभनः**—पुं०————ग्रह
- **शोभनः**—पुं०————अच्छे परिणामों की प्राप्ति के लिए यज्ञाग्नि में दी गई आहुति
- **शोभना**—स्त्री०————हल्दी
- **शोभना**—स्त्री०————सुन्दर या सती स्त्री
- **शोभना**—स्त्री०————एक प्रकार का पीला रंग, गोरोचना
- **शोभनम्**—नपुं०————सौन्दर्य, कान्ति, दीप्ति
- **शोभनम्**—नपुं०————कमल
- **शोभा**—स्त्री०——शुभ् + अ + टाप्—प्रकाश, क्रान्ति, दीप्ति, चमक
- **शोभा**—स्त्री०——शुभ् + अ + टाप्—वैभव, सौन्दर्य, लालित्य, चारुता, लावण्य
- **शोभा**—स्त्री०——शुभ् + अ + टाप्—नैसर्गिक सौन्दर्य, (पर्वत आदि की) गरिमा
- **शोभा**—स्त्री०——शुभ् + अ + टाप्—अलंकार, ललित अभिव्यक्ति
- **शोभा**—स्त्री०——शुभ् + अ + टाप्—हल्दी
- **शोभा**—स्त्री०——शुभ् + अ + टाप्—एक प्रकार का रंग, गोरोचना
- **शोभाञ्जनः**—पुं०—शोभा-अञ्जनः——एक अत्यंत उपयोगी वृक्ष, सौहंजना
- **शोभित**—भू० क० कृ०——शुभ् + णिच् + क्त—अलंकृत, चारु, सजाया हुआ
- **शोभित**—भू० क० कृ०——शुभ् + णिच् + क्त—सुन्दर, प्रिय
- **शोषः**—पुं०——शुष् + घञ्—सूखना, सूखापन
- **शोषः**—पुं०——शुष् + घञ्—कृशता, कुम्हलान
- **शोषः**—पुं०——शुष् + घञ्—फुप्फुसीय क्षय, या क्षयरोग
- **शोषसम्भवम्**—नपुं०—शोषः-सम्भवम्——पिप्पलामूल
- **शोषण**—वि०——शुष् + ल्युट्, स्त्रियां ङीप् च—सूखना, शुष्क करना
- **शोषण**—वि०——शुष् + ल्युट्, स्त्रियां ङीप् च—सूखाना, कृश करना,

- **शोषणः**—पुं°————कामदेव का एक बाण
- **शोषणम्**—नपुं°————सूखना, शुष्क होना
- **शोषणम्**—नपुं°————चूसना, रसाकर्षण, अवशोषण
- **शोषणम्**—नपुं°————निःशेषण, क्लान्ति
- **शोषणम्**—नपुं°————कृशता, कुम्हलाहट
- **शोषणम्**—नपुं°————सोठं
- **शोषित**—भू° क° कृ°———शुष् + णिच् + क्त—सुखाया गया
- **शोषित**—भू° क° कृ°———शुष् + णिच् + क्त—कृश हुआ, कुम्हलाया हुआ
- **शोषित**—भू° क° कृ°———शुष् + णिच् + क्त—परिश्रान्त
- **शोषिन्**—वि°———शुष् + णिच् + णिनि—सुखाने वाला, कुम्हलाता हुआ, क्षीण होने वाला
- **शौकम्**—नपुं°———शुक + अण्—तोतों की लार, तोतों का झुण्ड
- **शौक्त**—वि°———शुक्ति + ठक्—मोती से सम्बन्ध रखने वाला
- **शौक्त**—वि°———शुक्ति + ठक्—खट्टा, सिरके का, तेज़ाबी
- **शौक्तिकेयम्**—नपुं°———शुक्तिका + ढक्—मोती
- **शौक्तेयम्**—नपुं°———शुक्ति + ढक्—मोती
- **शौक्तिकेयः**—पुं°———शुक्तिका + ढक्—एक प्रकार का विष
- **शौक्ल्यम्**—नपुं°———शुक्ल + ष्यञ्—श्वेतता, सफ़ेदी, स्वच्छता
- **शौचम्**—नपुं°———शुचेर्भावः अण्—पवित्रता, स्वच्छता
- **शौचम्**—नपुं°———शुचेर्भावः अण्—मलत्याग के कारण दूषित व्यक्तित्व का शुद्धीकरण, विशेषतः किसी निकट सम्बन्धीं की मृत्यु होने पर(लोक-व्यवहार के अनुसार निश्चित समय पर क्षौरकर्म आदि करा कर) शुद्ध होना
- **शौचम्**—नपुं°———शुचेर्भावः अण्—स्वच्छ होना, निर्मल होना
- **शौचम्**—नपुं°———शुचेर्भावः अण्—मलत्याग करना
- **शौचम्**—नपुं°———शुचेर्भावः अण्—खरापन, ईमानदारी
- **शौचाचारः**—नपुं°—शौचम्-आचारः———शुद्धि विषयक संस्कार
- **शौचकर्मन्**—नपुं°—शौचम्-कर्मन्———शुद्धि विषयक संस्कार
- **शौचकल्पः**—पुं°—शौचम्-कल्पः———शुद्धि विषयक संस्कार
- **शौचकूपः**—पुं°—शौचम्-कूपः———सण्डास, शौचालय

- **शौचेयः**—पुं॰—-—शुचि + ढक्—धोबी
- **शौट्**—भ्वा॰ पर॰ <शौटति>—-—-—घमण्डी या अहंकारी होना
- **शौटीर**—वि॰—-—शौटेः ईरन्—घमण्डी, अहंकारी
- **शौटीरः**—पुं॰—-—-—शूरवीर, मल्ल, योधा
- **शौटीरः**—पुं॰—-—-—घमण्डी मनुष्य
- **शौटीरः**—पुं॰—-—-—संन्यासी
- **शौटीर्यम्**—नपुं॰—-—शौटीर + ष्यञ्—घमण्ड, अभिमान, दर्प
- **शौण्डीर्यम्**—नपुं॰—-—शौण्डीर + ष्यञ्—घमण्ड, अभिमान, दर्प
- **शौडति**—भ्वा॰ पर॰ <शौडति>—-—-—घमण्डी या अहंकारी होना
- **शौण्ड**—वि॰—-—शुण्डायां सुरायामभिरतः अण्—शराबी, शराब पीने का शौक़ीन, मद्यप
- **शौण्ड**—वि॰—-—शुण्डायां सुरायामभिरतः अण्—उत्तेजित, मतवाला, नशे में चूर
- **शौण्ड**—वि॰—-—शुण्डायां सुरायामभिरतः अण्—अभिमान में चूर, घमण्डी
- **शौण्ड**—वि॰—-—शुण्डायां सुरायामभिरतः अण्—कुशल, दक्ष
- **शौण्डिक**—पुं॰—-—शुण्डा सुरा पण्यमस्य ठक्—शराब खींचने वाला, कलाल , शराब विक्रेता, सुराजीवी
- **शौण्डिन्**—पुं॰—-—शुण्डा सुरा पण्यमस्य इनि —शराब खींचने वाला, कलाल , शराब विक्रेता, सुराजीवी
- **शौण्डिकी**—स्त्री॰—-—-—कलाली, शराब विक्रेत्री
- **शौण्डिनी**—स्त्री॰—-—-—कलाली, शराब विक्रेत्री
- **शौण्डिकेयः**—पुं॰—-—शुण्डिका + ढक्—राक्षस
- **शौण्डी** —स्त्री॰—-—शुण्डा करिकरः तदाकारः अस्ति अस्याः - शुण्डा + अण् + ङीप्—गजपिप्पली, बड़ी पीपल
- **शौण्डीर**—वि॰—-—शुण्डा गर्वोऽस्ति अस्य-शुण्डा + ईरन् + अण्—घमण्डी, अभिमानी
- **शौण्डीर**—वि॰—-—शुण्डा गर्वोऽस्ति अस्य-शुण्डा + ईरन् + अण्—उत्तुङ्ग, उन्नत
- **शौद्धोदनिः**—पुं॰—-—शुद्धोदन + इञ्—बुद्ध का विशेषण, शुद्धोदन का पुत्र
- **शौद्र**—वि॰—-—शूद्र + अण्—शूद्र सम्बन्धी
- **शौद्रः**—पुं॰—-—-—शूद्रा स्त्री का पुत्र जिसका पिता (तीन वर्णो में से) किसी भी वर्ण का हो
- **शौनम्**—नपुं॰—-—शूना + अण्—क़साईखाने में रक्खा हुआ मांस
- **शौनकः**—पुं॰—-—शुनक + अण्—एक महर्षि, ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा अन्य अनेक वैदिक रचनाओं के प्रणेता
- **शौनिकः**—पुं॰—-—शूना प्राणिवधस्थानं प्रयोजनमस्य ठक्—क़साई

- **शौनिकः**—पुं°———शूना प्राणिवधस्थानं प्रयोजनमस्य ठक्—बहेलिया, चिड़ीमार
- **शौनिकः**—पुं°———शूना प्राणिवधस्थानं प्रयोजनमस्य ठक्—शिकार, आखेट
- **शौभः**—पुं°———शोभायै हितम्-शोभा + अण्—देवता, दिव्यता
- **शौभः**—पुं°———शोभायै हितम्-शोभा + अण्—सुपारी का पेड़
- **शौभाञ्जनः**—पुं°———शोभाञ्जन + अण्—एक वृक्ष का नाम
- **शौभिकः**—पुं°———शौभं व्योमपुरं शिल्पमस्य-शौभ + ठक्—मदारी, बाजीगर
- **शौभिकः**—पुं°———शौभं व्योमपुरं शिल्पमस्य-शौभ + ठक्—शिकारी, बहेलिया
- **शौरसेनी**—स्त्री°———शूरसेन + अण् + ङीप्—एक प्रकार की प्राकृत बोली का नाम
- **शौरिः**—पुं°———शूर + इञ्—कृष्ण या विष्णु
- **शौरिः**—पुं°———शूर + इञ्—बलराम
- **शौरिः**—पुं°———शूर + इञ्—शनिग्रह
- **शौर्यम्**—नपुं°———शूरस्य भावः ष्यञ्—पराक्रम, शूरता, वीरता
- **शौर्यम्**—नपुं°———शूरस्य भावः ष्यञ्—सामर्थ्य, शक्ति, ताक़त
- **शौर्यम्**—नपुं°———शूरस्य भावः ष्यञ्—युद्ध और अतिप्राकृतिक घटनाओं का रंगमंच पर अभिनय करना
- **शौल्कः**—पुं°———शुल्के तदादानेऽधिकृतः अण्—चुंगी का अधीक्षक, शुल्काधिकारी
- **शौल्किकः**—पुं°———शुल्के तदादानेऽधिकृतः ठक्—चुंगी का अधीक्षक, शुल्काधिकारी
- **शौल्विकः**—पुं°———शुल्व + ठक्—तांबें के बर्तन बनाने वाला, कसेरा
- **शौल्बिकः**—पुं°—————तांबें के बर्तन बनाने वाला, कसेरा
- **शौव**—वि°———श्वन् + अण्, टिलोपः—कुत्तों से संबन्ध रखने वाला, कुक्कुरसंबंधी
- **शौवम्**—नपुं°—————कुत्तों का झुंड
- **शौवम्**—नपुं°—————कुत्तों का स्वभाव
- **शौव**—वि°—————आगामी कल संबन्धी
- **शौवन**—वि°———श्वन् + अण् —कुक्कुर संबन्धी
- **शौवन**—वि°———श्वन् + अण् —कुत्ते के गुणों से युक्त
- **शौवनम्**—नपुं°—————कुत्ते का स्वभाव
- **शौवनम्**—नपुं°—————कुत्ते की संतति
- **शौवस्तिक**—वि°———श्वस् + ठक्, तुट् च—आगामी कल संबन्धी या आगामी कल तक ठहरने वाला, एकदिवसीय, अल्पजीवी

- **शौष्कलः**—पुं°—-—शुष्कल् + अण्—मांस विक्रेता
- **शौष्कलः**—पुं°—-—शुष्कल् + अण्—मांसभक्षी
- **शौष्कलम्**—नपुं°—-—-—शुष्क मांस का मूल्य
- **श्चुत्**—भ्वा° पर°—-—-—टपकना, रिसना, बहना, चूना
- **श्चुत्**—भ्वा° पर°—-—-—ढालना, उडेलना, फैलाना, बखेरना
- **श्च्युत्**—भ्वा° पर° <श्च्योतति>—-—-—टपकना, रिसना, बहना, चूना
- **श्च्युत्**—भ्वा° पर° <श्च्योतति>—-—-—ढालना, उडेलना, फैलाना, बखेरना
- **निश्च्युत्**—भ्वा° पर°—नि-श्च्युत्—-—बहना, रिसना, टपकना
- **श्च्योतः**—पुं°—-—श्च्युत् + घञ्—रिसना, बहना, स्रवित होना, चूना
- **श्चोतः**—पुं°—-—श्चुत् + घञ्—रिसना, बहना, स्रवित होना, चूना
- **श्च्योतम्**—नपुं°—-—श्च्युत् + ल्युट्—रिसना, बहना, स्रवित होना, चूना
- **श्चुतम्**—नपुं°—-—श्चुत् + ल्युट्—रिसना, बहना, स्रवित होना, चूना
- **श्मशानम्**—नपुं°—-—श्मानः शयाः शेरतेऽत्र-शी + आनच्, डिच्च अथवा श्मन् शब्देन शवः प्रोक्त तस्य शानं शयनम्—शवस्थान, क़ब्रिस्तान, शवदाह स्थान, मरघट
- **श्मशानाग्निः**—पुं°—श्मशानम्-अग्निः—-—मरघट की आग
- **श्मशानालयः**—पुं°—श्मशानम्-आलयः—-—क़ब्रिस्तान
- **श्मशानगोचर**—वि°—श्मशानम्-गोचर—-—मसान में घूमने वाला
- **श्मशाननिवासिन्**—पुं°—श्मशानम्-निवासिन्—-—भूत
- **श्मशानवर्तिन्**—पुं°—श्मशानम्-वर्तिन्—-—भूत
- **श्मशानभाज्**—पुं°—श्मशानम्-भाज्—-—शिव के विशेषण
- **श्मशानवासिन्**—पुं°—श्मशानम्-वासिन्—-—शिव के विशेषण
- **श्मशानवेश्मन्**—पुं°—श्मशानम्-वेश्मन्—-—शिव के विशेषण
- **श्मशानवेश्मन्**—पुं°—श्मशानम्-वेश्मन्—-—भूत-प्रेत
- **श्मशानवैराग्यम्**—नपुं°—श्मशानम्-वैराग्यम्—-—क्षणिक विरक्ति, श्मशान भूमि के दर्शन से उत्पन्न अस्थायी संसार त्याग की भावना
- **श्मशानशूलः**—पुं°—श्मशानम्-शूलः—-—श्मशान भूमि में स्थित लोहे या लकड़ी की सूली
- **श्मशानसाधनम्**—नपुं°—श्मशानम्-साधनम्—-—भूत-प्रेतों को वश में करने के लिए श्मशान में तांत्रिक मन्त्रों की साधना करना
- **श्मश्रु**—नपुं°—-—श्म पुं° मुखं श्रूयते लक्ष्यतेऽनेन-श्रु + डु—दाढ़ी-मूँछ

- **श्मश्रुप्रवृद्धिः**—पुं°—श्मश्रु-प्रवृद्धिः—-—दाढ़ी का बढ़ना
- **श्मश्रुमुखी**—स्त्री°—श्मश्रु-मुखी—-—दाढ़ीमूँछ वाली स्त्री
- **श्मश्रुवर्धकः**—पुं°—श्मश्रु-वर्धकः—-—नाई
- **श्मश्रुल**—वि°—-—श्मश्रु + लच्—दाढ़ी मूंछ वाला, श्मश्रुधारी
- **श्मील्**—भ्वा° पर° <श्मीलति>—-—-—आँख झपकना, पलक मारना, आँखे मटकना
- **श्मीलनम्**—नपुं°—-—श्मील् + ल्युट्—आँख मीचना, पलक झपकना
- **श्यान**—भू° क° कृ°—-—श्यै + क्त—गया हुआ
- **श्यान**—भू° क° कृ°—-—श्यै + क्त—जमा हुआ, पिंडीभूत
- **श्यान**—भू° क° कृ°—-—श्यै + क्त—घनीभूत, चिपकना, सांद्र
- **श्यान**—भू° क° कृ°—-—श्यै + क्त—सिकुड़ा हुआ, सूखा
- **श्यानम्**—नपुं°—-—-—धूआँ
- **श्याम**—वि°—-—श्यै + मक्—काला, गहरा नीला, काले रंग का
- **श्याम**—वि°—-—श्यै + मक्—भूरा
- **श्याम**—वि°—-—श्यै + मक्—गहरा-हरा
- **श्यामः**—पुं°—-—-—काला रंग
- **श्यामः**—पुं°—-—-—बादल
- **श्यामः**—पुं°—-—-—कोयल
- **श्यामः**—पुं°—-—-—प्रयाग में यमुना के किनारे स्थित बरगद का पेड़
- **श्यामम्**—नपुं°—-—-—समुद्री नमक
- **श्यामम्**—नपुं°—-—-—काली मिर्च
- **श्यामाङ्ग**—वि°—श्याम्-अङ्ग—-—काला
- **श्यामाङ्गः**—पुं°—श्याम्-अङ्गः—-—बुध ग्रह
- **श्यामकण्ठः**—पुं°—श्याम्-कण्ठः—-—शिव (नीलकंठ) का विशेषण
- **श्यामकण्ठः**—पुं°—श्याम्-कण्ठः—-—मोर
- **श्यामकर्णः**—पुं°—श्याम्-कर्णः—-—अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा
- **श्यामपत्रः**—पुं°—श्याम्-पत्रः—-—तमाल वृक्ष
- **श्यामभास्**—वि°—श्याम्-भास्—-—चमकीला काला

- **श्यामरुचि**—वि०—श्याम्-रुचि—-—चमकीला काला
- **श्यामसुन्दरः**—पुं०—श्याम्-सुन्दरः—-—कृष्ण का विशेषण
- **श्यामल**—वि०—-—श्याम + लच्, ला + क वा—काला, गहरीनीला, साँवला
- **श्यामलः**—पुं०—-—-—काला रंग
- **श्यामलः**—पुं०—-—-—काली मिर्च
- **श्यामलः**—पुं०—-—-—भौंरा
- **श्यामलः**—पुं०—-—-—बटवृक्ष
- **श्यामलिका**—स्त्री०—-—श्यामल + कन् + टाप्, इत्वम्—नील का पौधा
- **श्यामलिमन्**—पुं०—-—श्यामल + इमनिच्—कालिमा, कालापन
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—रात, विशेषतः काली रात
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—स्त्री विशेष
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—निस्सन्तान स्त्री
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—गाय
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—हल्दी
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—मादा कोयल
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—प्रियंगुलता
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—नील का पौधा
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—तुलसी का पौधा
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—कमल का बीज
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—युमना नदी
- **श्यामा**—स्त्री०—-—श्याम + टाप्—कई पौधों का नाम
- **श्यामाकः**—पुं०—-—श्याम + अक् + अण्—एक प्रकार का अन्न, धान्य, सावां चावल
- **श्यामिका**—स्त्री०—-—श्याम + ठन् भावे—कालिमा, श्यामता
- **श्यामिका**—स्त्री०—-—श्याम + ठन् भावे—मलिनता, ख़ोटापन (धातु आदिकों का)
- **श्यामित**—वि०—-—श्याम + इतच्—काला किया हुआ, कृष्ण रंग का किया हुआ, कलूटा
- **श्यालः**—पुं०—-—श्यै + कालन्—पत्नी का भाई, साला
- **श्यालकः**—पुं०—-—श्याल + कन्—पत्नी का भाई

- **श्यालकः**—पुं°—-—श्याल + कन्—साला
- **श्यालकी**—स्त्री°—-—श्यालक + ङीप् + टाप्—पत्नी की बहन, साली
- **श्यालिका**—स्त्री°—-—श्यालक + ङीप् + टाप् इत्वं —पत्नी की बहन, साली
- **श्याली**—स्त्री°—-—श्याल + ङीष्—पत्नी की बहन, साली
- **श्याव**—वि°—-—श्यै + वन्—कपिश, गहरा भूरे रंग का, काला, धूसर, धुमैला
- **श्याव**—वि°—-—श्यै + वन्—लाख के रंग का, भूरा
- **श्यावः**—पुं°—-—-—भूरा रंग
- **श्यावतैलः**—पुं°—श्याव-तैलः—-—आम का वृक्ष
- **श्येत**—वि°—-—श्यै + इतच्—सफेद
- **श्येतः**—पुं°—-—-—श्वेत रंग
- **श्येनः**—पुं°—-—श्यै + इनन्—सफेद रंग
- **श्येनः**—पुं°—-—श्यै + इनन्—सफेदी
- **श्येनः**—पुं°—-—श्यै + इनन्—बाज़, शिकरा
- **श्येनः**—पुं°—-—श्यै + इनन्—हिंसा, प्रचण्डता
- **श्येनकरणम्**—नपुं°—श्येनः-करणम्—-—अलग चिता पर दाह करना
- **श्येनकरणम्**—नपुं°—श्येनः-करणम्—-—बाज़ की भांति झपट कर शीघ्रता से किसी काम में लगना
- **श्येनकरणिका**—स्त्री°—श्येनः-करणिका—-—अलग चिता पर दाह करना
- **श्येनकरणिका**—स्त्री°—श्येनः-करणिका—-—बाज़ की भांति झपट कर शीघ्रता से किसी काम में लगना
- **श्येनचित्**—पुं°—श्येनः-चित्—-—बाज़ को पकड़ कर तथा उसे बेच कर ज़ीवन निर्वाह करने वाला
- **श्येनजीविन्**—पुं°—श्येनः-जीविन्—-—बाज़ को पकड़ कर तथा उसे बेच कर ज़ीवन निर्वाह करने वाला
- **श्यै**—भ्वा° आ° <श्यायते>, <श्यान>, <शीत>, <शीन>—-—-—जाना, हिलना-जुलना
- **श्यै**—भ्वा° आ° <श्यायते>, <श्यान>, <शीत>, <शीन>—-—-—जम जाना
- **श्यै**—भ्वा° आ° <श्यायते>, <श्यान>, <शीत>, <शीन>—-—-—सूख जाना, कुम्हलाना
- **आश्यै**—भ्वा° आ°—आ-श्यै—-—सूख जाना
- **श्यैनम्पाता**—स्त्री°—-—श्येनस्य पातोऽत्र अण्, मुम् च—बाज़ की भांति झपटना, शिकार, आखेट
- **श्योणाकः**—पुं°—-—श्यै + ओणाक—एक वृक्ष का नाम, सोना पाड़ा
- **श्योनाकः**—पुं°—-—श्यै + ओनाक—एक वृक्ष का नाम, सोना पाड़ा

- **श्रङ्क्**—भ्वा° आ° <श्रङ्कते>————जाना, रेंगना
- **श्रङ्ग्**—भ्वा° पर° <श्रङ्गति>————जाना, हिलना-जुलना, रेंगना
- **श्रण्**—भ्वा° आ° <श्रणति>, चुरा° उभ° <श्राणयति>, <श्राणयते>————देना, प्रदान करना, अर्पण करना
- **श्रत्**—अव्य°——श्री + डति—एक प्रकार का उपसर्ग जो ‘धा’ धातु के पूर्व में लगता है
- **अथ्**—भ्वा° पर° <श्रथति>, क्र्या° पर° <श्रथ्नाति>————चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, मार डालना
- **अथ्**—भ्वा° पर° <श्रथति>, चुरा° उभ° <श्राथयति>, <श्राथयते>————चोट पहुँचाना, मार डालना
- **अथ्**—भ्वा° पर° <श्रथति>, चुरा° उभ° <श्राथयति>, <श्राथयते>————खोलना, ढीला करना, स्वतन्त्र करना, मुक्त करना
- **अथ्**—चुरा° उभ° <श्रथयति>, <श्रथयते>————प्रयत्न करना, व्यस्त रहना
- **अथ्**—चुरा° उभ° <श्रथयति>, <श्रथयते>————निर्बल होना, कमजोर होना
- **अथ्**—चुरा° उभ° <श्रथयति>, <श्रथयते>————प्रसन्न होना
- **श्रथनम्**—नपुं°——श्रथ् + ल्युट्—मारना, विनाश करना
- **श्रथनम्**—नपुं°——श्रथ् + ल्युट्—खोलना, ढीला करना, मुक्त करना
- **श्रथनम्**—नपुं°——श्रथ् + ल्युट्—प्रयत्न, चेष्टा
- **श्रथनम्**—नपुं°——श्रथ् + ल्युट्—बांधना, बन्धन में डालना
- **श्रद्धा**—स्त्री°——श्रत् + धा + अङ् + टाप्—आस्था, निष्ठा, विश्वास, भरोसा
- **श्रद्धा**—स्त्री°——श्रत् + धा + अङ् + टाप्—दैवीसन्देशों में विश्वास, धार्मिक निष्ठा
- **श्रद्धा**—स्त्री°——श्रत् + धा + अङ् + टाप्—शान्ति, मन की स्वस्थता
- **श्रद्धा**—स्त्री°——श्रत् + धा + अङ् + टाप्—घनिष्ठता, परिचय
- **श्रद्धा**—स्त्री°——श्रत् + धा + अङ् + टाप्—आदर, सम्मान
- **श्रद्धा**—स्त्री°——श्रत् + धा + अङ् + टाप्—प्रबल या उत्कट इच्छा
- **श्रद्धा**—स्त्री°——श्रत् + धा + अङ् + टाप्—दोहद, गर्भवती स्त्री की इच्छा
- **श्रद्धालु**—वि°——श्रद्धा + आलुच्—विश्वास करने वाला, निष्ठावान्
- **श्रद्धालु**—वि°——श्रद्धा + आलुच्—इच्छुक, (किसी वस्तु का) अभिलाषी
- **श्रद्धालुः**—स्त्री°————दोहदवती, गर्भवती स्त्री जो किसी वस्तु की कामना करे
- **श्रन्थ्**—भ्वा° आ° <श्रन्थते>————दुर्बल होना
- **श्रन्थ्**—भ्वा° आ° <श्रन्थते>————निढाल या विश्रान्त होना
- **श्रन्थ्**—भ्वा° आ° <श्रन्थते>————ढीला करना, विश्राम करना

- **श्रन्थ्**—क्र्या° पर° <श्रथ्नाति>—-——–ढीला करना, स्वतन्त्र करना मुक्त करना
- **श्रन्थ्**—क्र्या° पर° <श्रथ्नाति>—-——–खूब प्रसन्न होना
- **श्रन्थः**—पुं°—–—श्रन्थ् + घञ्—ढीला करना, स्वतन्त्र करना
- **श्रन्थः**—पुं°—–—श्रन्थ् + घञ्—ढीलापन
- **श्रन्थः**—पुं°—–—श्रन्थ् + घञ्—विष्णु
- **श्रन्थनम्**—नपुं°—–—श्रथ् + ल्युट्—ढीला करना, खोलना
- **श्रन्थनम्**—नपुं°—–—श्रथ् + ल्युट्—चोट पहुँचाना, मार डालना, विनाश करना
- **श्रन्थनम्**—नपुं°—–—श्रथ् + ल्युट्—बाँधना, बन्धन में डालना
- **श्रपणम्**—नपुं°—–—श्रा + णिच् + ल्युट्—उबलवाना, गरम करना
- **श्रपित**—भू° क° कृ°—–—श्रा + णिच् + क्त—गरम किया गया या उबलाया गया
- **श्रपिता**—स्त्री°—-—-—माँड, कांजी
- **श्रम्**—दिवा° पर° <श्राम्यति>, <श्रान्त>—-——–चेष्टा करना, उद्योग करना, मेहनत करना, परिश्रम करना
- **श्रम्**—दिवा° पर° <श्राम्यति>, <श्रान्त>—-——–तपश्चर्या करना, (तपस्या के द्वारा) इन्द्रियदमन करना
- **श्रम्**—दिवा° पर° <श्राम्यति>, <श्रान्त>—-——–श्रान्त होना, थकना, परिश्रान्त होना
- **श्रम्**—दिवा° पर° <श्राम्यति>, <श्रान्त>—-——–कष्टग्रस्त होना, दुःखी होना
- **श्रम्**—दिवा°, प्रेर° <श्रमयति>, <श्रमयते>, <श्रामयति>, <श्रामयते>—-——–थकाना
- **परिश्रम्**—दिवा° पर°—परि-श्रम्—–—अत्यन्त थक जाना
- **विश्रम्**—दिवा° पर°—वि-श्रम्—–—विश्राम करना, आराम करना, ठहराना
- **विश्रम्**—दिवा° पर°—वि-श्रम्—–—थमना, अन्त होना
- **विश्रम्**—दिवा° पर°—वि-श्रम्—–—उतरवाना, बसाना
- **श्रमः**—पुं°—–—श्रम् + घञ्, न वृद्धिः—मेहनत, परिश्रम, चेष्टा, प्रयत्न
- **श्रमः**—पुं°—–—श्रम् + घञ्, न वृद्धिः—थकावट, थकान, परिश्रान्ति
- **श्रमः**—पुं°—–—श्रम् + घञ्, न वृद्धिः—कष्ट, दुःख
- **श्रमः**—पुं°—–—श्रम् + घञ्, न वृद्धिः—तपस्या, साधना, इन्द्रियदमन
- **श्रमः**—पुं°—–—श्रम् + घञ्, न वृद्धिः—व्यायाम, विशेषतः सैनिक व्यायाम, क़वायद
- **श्रमः**—पुं°—–—श्रम् + घञ्, न वृद्धिः—घोर अध्ययन
- **श्रमाम्बु**—नपुं°—श्रमः-अम्बु—–—पसीना

- **श्रमजलम्**—नपुं°—श्रमः-जलम्—-—पसीना
- **श्रमकर्षित**—वि°—श्रमः-कर्षित—-—थका-मांदा
- **श्रमसाध्य**—वि°—श्रमः-साध्य—-—परिश्रम द्वारा सम्पन्न होने योग्य, कष्टसाध्य
- **श्रमण**—वि°—-—श्रम् + युच्—परिश्रमी, मेहनती
- **श्रमण**—पुं°—-—श्रम् + युच्—बौद्धभिक्षु, जैन यति
- **श्रमणा**—स्त्री°—-—-—भक्तिनी, भिक्षुणी
- **श्रमणा**—स्त्री°—-—-—लावण्यमयी स्त्री
- **श्रमणा**—स्त्री°—-—-—नीच जाति की स्त्री
- **श्रमणा**—स्त्री°—-—-—बंगाली मजीठ
- **श्रमणा**—स्त्री°—-—-—जटामांसी, बालछड़
- **श्रमणी**—स्त्री°—-—-—भक्तिनी, भिक्षुणी
- **श्रमणी**—स्त्री°—-—-—लावण्यमयी स्त्री
- **श्रमणी**—स्त्री°—-—-—नीच जाति की स्त्री
- **श्रमणी**—स्त्री°—-—-—बंगाली मजीठ
- **श्रमणी**—स्त्री°—-—-—जटामांसी, बालछड़
- **श्रम्भ्**—भ्वा° आ° <श्रम्भते>, <श्रब्ध>—-—-—उपेक्षक होना, असावधान होना, लापरवाह होना
- **श्रम्भ्**—भ्वा° आ° <श्रम्भते>, <श्रब्ध>—-—-—गलती करना
- **विश्रम्भ्**—भ्वा° आ°—वि-श्रम्भ्—-—विश्वास करना, भरोसा करना
- **श्रयः**—पुं°—-—श्रि + अच्—शरण, पनाह, बचाव, आश्रय
- **श्रयणम्**—नपुं°—-—श्रि + ल्युट्—शरण, पनाह, बचाव, आश्रय
- **श्रवः**—पुं°—-—श्रु + अप्—सुनना
- **श्रवः**—पुं°—-—श्रु + अप्—कान
- **श्रवः**—पुं°—-—श्रु + अप्—किसी त्रिकोण का कर्ण
- **श्रवणः**—पुं°—-—श्रु + ल्युट्—कान
- **श्रवणः**—पुं°—-—श्रु + ल्युट्—किसी त्रिकोण का कर्ण
- **श्रवणः**—पुं°—-—श्रु + ल्युट्—श्रवण नाम का नक्षत्र (जिसमें तीन तारे सम्मिलित है)
- **श्रवणम्**—नपुं°—-—श्रु + ल्युट्—कान

- **श्रवणम्**—नपुं°—-—श्रु + ल्युट्—किसी त्रिकोण का कर्ण
- **श्रवणम्**—नपुं°—-—श्रु + ल्युट्—श्रवण नाम का नक्षत्र (जिसमें तीन तारे सम्मिलित है)
- **श्रवणा**—नपुं°—-—-—श्रवण नाम का नक्षत्र (जिसमें तीन तारे सम्मिलित है)
- **श्रवणम्**—नपुं°—-—-—सुनने की क्रिया
- **श्रवणम्**—नपुं°—-—-—अध्ययन
- **श्रवणम्**—नपुं°—-—-—ख्याति, कीर्ति
- **श्रवणम्**—नपुं°—-—-—जो सुना गया या प्रकट हुआ
- **श्रवणम्**—नपुं°—-—-—दौलत
- **श्रवणेन्द्रियम्**—नपुं°—श्रवणः-इन्द्रियम्—-—श्रोवेंन्द्रिय, कान
- **श्रवणोदरम्**—नपुं°—श्रवणः-उदरम्—-—कान का बाह्यविवर
- **श्रवणगोचर**—वि°—श्रवणः-गोचर—-—श्रवणपरास के अन्तर्गत
- **श्रवणगोचरः**—पुं°—श्रवणः-गोचरः—-—सुनाई देने की सीमा तक
- **श्रवणविषयः**—पुं°—श्रवणः-विषयः—-—कान की पहुँच, श्रवण परास
- **श्रवणपालिः**—स्त्री°—श्रवणः-पालिः—-—कान का सिरा
- **श्रवणपाली**—स्त्री°—श्रवणः-पाली—-—कान का सिरा
- **श्रवणसुभग**—वि°—श्रवणः-सुभग—-—कर्णसुखद
- **श्रवस्**—नपुं°—-—श्रु + असि—कान
- **श्रवस्**—नपुं°—-—श्रु + असि—ख्याति कीर्ति
- **श्रवस्**—नपुं°—-—श्रु + असि—दौलत
- **श्रवस्**—नपुं°—-—श्रु + असि—सूक्त
- **श्रवस्यम्**—नपुं°—-—श्रवस् + यत्—ख्याति, कीर्ति, विश्रुति
- **श्रवाप्यः**—पुं°—-—-—यज्ञ में बलि दिये जाने के योग्य पशु
- **श्रवाय्यः**—पुं°—-—श्रु + आय्य—यज्ञ में बलि दिये जाने के योग्य पशु
- **श्रविष्ठा**—स्त्री°—-—श्रवः ख्यातिः अस्ति अस्याः श्रव + मतुप्, इष्ठनि मतुबो लुक्—घनिष्ठा नाम का नक्षत्र
- **श्रविष्ठा**—स्त्री°—-—श्रवः ख्यातिः अस्ति अस्याः श्रव + मतुप्, इष्ठनि मतुबो लुक्—श्रवणा नाम का नक्षत्र
- **श्रविष्ठाजः**—पुं°—श्रविष्ठा-जः—-—बुधग्रह
- **श्रा**—अदा° पर° <श्राति>, <श्राण>, <शृत> प्रेर° <श्रपयति>, <श्रपयते>—-—-—पकाना, उबालना, भोजन बनाना, परिपक्व करना, पकना

- **श्राण**—वि०—–—श्रा + क्त—पकाया हुआ, भोजन बनाया हुआ, उबाला हुआ
- **श्राण**—वि०—–—श्रा + क्त—आर्द्र, गीला, तर
- **श्राणा**—स्त्री०—–—श्राण + टाप्—कांजी, यवागू
- **श्राद्ध**—वि०—–—श्रद्धा हेतुत्वेनास्त्यस्य अण्—निष्ठावान्, विश्वास करने वाला
- **श्राद्धम्**—नपुं०—–—–—मृतक सम्बन्धियों की दिवङ्गत आत्माओं के सम्मान में अनुष्ठेय संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कार
- **श्राद्धम्**—नपुं०—–—–—और्ध्वदैहिक आहुति, श्राद्ध के अवसर पर उपहार या भेंट
- **श्राद्धकर्मन्**—नपुं०—श्राद्ध-कर्मन्—–—अन्त्येष्टि संस्कार
- **श्राद्धक्रिया**—नपुं०—श्राद्ध-क्रिया—–—अन्त्येष्टि संस्कार
- **श्राद्धकृत्**—पुं०—श्राद्ध-कृत्—–—अन्त्येष्टि संस्कार करने वाला
- **श्राद्धदः**—पुं०—श्राद्ध-दः—–—अन्त्येष्टि संस्कार आहुति या श्राद्ध भेंट करने वाला
- **श्राद्धदिनः**—पुं०—श्राद्ध-दिनः—–—उस स्वर्गीय सम्बन्धी की बरसी जिसके सम्मान में श्राद्ध किया जाय
- **श्राद्धदिनम्**—नपुं०—श्राद्ध-दिनम्—–—उस स्वर्गीय सम्बन्धी की बरसी जिसके सम्मान में श्राद्ध किया जाय
- **श्राद्धदेवः**—पुं०—श्राद्ध-देवः—–—अन्त्येष्टि संस्कार की अधिष्ठात्री देवता
- **श्राद्धदेवः**—पुं०—श्राद्ध-देवः—–—यम का विशेषण
- **श्राद्धदेवः**—पुं०—श्राद्ध-देवः—–—विश्वदेव
- **श्राद्धदेवः**—पुं०—श्राद्ध-देवः—–—पिता, प्रजनक
- **श्राद्धदेवता**—स्त्री०—श्राद्ध-देवता—–—अन्त्येष्टि संस्कार की अधिष्ठात्री देवता
- **श्राद्धदेवता**—स्त्री०—श्राद्ध-देवता—–—यम का विशेषण
- **श्राद्धदेवता**—स्त्री०—श्राद्ध-देवता—–—विश्वदेव
- **श्राद्धदेवता**—स्त्री०—श्राद्ध-देवता—–—पिता, प्रजनक
- **श्राद्धभुज्**—पुं०—श्राद्ध-भुज्—–—दिवङ्गत, पूर्व पुरुष
- **श्राद्धभोक्तृ**—पुं०—श्राद्ध-भोक्तृ—–—दिवङ्गत, पूर्व पुरुष
- **श्राद्धिक**—वि०—–—श्राद्धेयं, श्राद्धं तद्द्रव्यं भक्ष्यत्वेनास्त्यस्य वा ठन्—श्राद्ध सम्बन्धी और्ध्व दैहिक भेंट को स्वीकार करने वाला
- **श्राद्धिकम्**—नपुं०—–—–—श्राद्ध के अवसर पर दिया गया उपहार
- **श्राद्धीय**—वि०—–—श्राद्ध + छ—श्राद्ध सम्बन्धी
- **श्रान्त**—भू० क० कृ०—–—श्रम् + क्त—थका हुआ, थकामांदा, क्लान्त, परिश्रांत
- **श्रान्त**—भू० क० कृ०—–—श्रम् + क्त—शान्त, सौम्य

- **श्रान्तः**—पुं°—————संन्यासी
- **श्रान्तिः**—स्त्री°———श्रम् + क्तिन्—क्लान्ति, परिश्रान्ति, थकावट
- **श्रामः**—पुं°———श्राम् + अच्—मास
- **श्रामः**—पुं°———श्राम् + अच्—समय
- **श्रामः**—पुं°———श्राम् + अच्—अस्थायी छाजन
- **श्रायः**—पुं°———श्रि + घञ्—आश्रय, बचाव, शरण, सहारा
- **श्रावः**—पुं°———श्रु + घञ्—सुनना, कान देना
- **श्रावकः**—पुं°———श्रु + ण्वुल्—श्रोता
- **श्रावकः**—पुं°———श्रु + ण्वुल्—छात्र, शिष्य
- **श्रावकः**—पुं°———श्रु + ण्वुल्—बौद्धभिक्षु, बौद्ध सन्त, महात्मा
- **श्रावकः**—पुं°———श्रु + ण्वुल्—बौद्ध भक्त
- **श्रावकः**—पुं°———श्रु + ण्वुल्—पाखण्डी
- **श्रावकः**—पुं°———श्रु + ण्वुल्—कौवा
- **श्रावण**—वि°———श्रवण + अण्—कान सम्बन्धी
- **श्रावण**—वि°———श्रवण + अण्—श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न
- **श्रावणः**—पुं°—————सावन का महीना, (जूलाई-अगस्त में आने वाला)
- **श्रावणः**—पुं°—————पाखण्डी
- **श्रावणः**—पुं°—————छद्मवेशी
- **श्रावणः**—पुं°—————एक वैश्य संन्यासी
- **श्रावणिक**—वि°———श्रावण + ठक्—श्रावण मास सम्बन्धी
- **श्रावणिकः**—पुं°—————सावन का महीना
- **श्रावणी**—स्त्री°———श्रावणेन नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी-श्रवण + अण् + ङीप्—श्रावण मास की पूर्णिमा
- **श्रावणी**—स्त्री°———श्रावणेन नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी-श्रवण + अण् + ङीप्—एक वार्षिक पर्व जिस दिन यज्ञोपवीत वदले जायँ, सलोनों , रक्षाबन्धन
- **श्रावस्तिः**—स्त्री° —————गंगा नदी के उत्तर में राजा श्रावस्त द्वारा स्थापित एक नगर
- **श्रावस्ती**—स्त्री° —————गंगा नदी के उत्तर में राजा श्रावस्त द्वारा स्थापित एक नगर
- **श्रावित**—वि°———श्रु + णिच् + क्त—कहा हुआ, सुनाया गया, वर्णन किया गया
- **श्राव्य**—वि°———श्रु + णिच् + यत्—सुने जाने के योग्य

- **श्राव्य**—वि०—-—श्रु + णिच् + यत्—जो सुना जा सके, स्पष्ट
- **श्रि**—भ्वा० उभ० <श्रयति>, <श्रयते>, <श्रितः>,प्रेर० <श्राययति>, <श्राययते> इच्छा० <शिश्रीषति>, <शिश्रीषते>, <शिश्रयिषति>, <शिश्रयिषते>—-—जाना, पहुँचाना, सहारा लेना, दौड़ होना, बचाव के लिए पहुँच होना
- **श्रि**—भ्वा० उभ० <श्रयति>, <श्रयते>, <श्रितः>,प्रेर० <श्राययति>, <श्राययते> इच्छा० <शिश्रीषति>, <शिश्रीषते>, <शिश्रयिषति>, <शिश्रयिषते>—-—जाना, पहुँचाना, भुगतना, (अवस्था)धारण करना
- **श्रि**—भ्वा० उभ० <श्रयति>, <श्रयते>, <श्रितः>,प्रेर० <श्राययति>, <श्राययते> इच्छा० <शिश्रीषति>, <शिश्रीषते>, <शिश्रयिषति>, <शिश्रयिषते>—-—चिपकना, झुकना, आश्रित होना, निर्भर रहना
- **श्रि**—भ्वा० उभ० <श्रयति>, <श्रयते>, <श्रितः>,प्रेर० <श्राययति>, <श्राययते> इच्छा० <शिश्रीषति>, <शिश्रीषते>, <शिश्रयिषति>, <शिश्रयिषते>—-—निवास करना, बसना
- **श्रि**—भ्वा० उभ० <श्रयति>, <श्रयते>, <श्रितः>,प्रेर० <श्राययति>, <श्राययते> इच्छा० <शिश्रीषति>, <शिश्रीषते>, <शिश्रयिषति>, <शिश्रयिषते>—-—सम्मान करना, सेवा करना, पूजा करना
- **श्रि**—भ्वा० उभ० <श्रयति>, <श्रयते>, <श्रितः>,प्रेर० <श्राययति>, <श्राययते> इच्छा० <शिश्रीषति>, <शिश्रीषते>, <शिश्रयिषति>, <शिश्रयिषते>—-—सेवन करना काम पर लगाना
- **श्रि**—भ्वा० उभ० <श्रयति>, <श्रयते>, <श्रितः>,प्रेर० <श्राययति>, <श्राययते> इच्छा० <शिश्रीषति>, <शिश्रीषते>, <शिश्रयिषति>, <शिश्रयिषते>—-—संलग्न करना, अनुषक्त होना
- **अभिश्रि**—भ्वा० उभ०—अभि-श्रि—-—निवास करना
- **अभिश्रि**—भ्वा० उभ०—अभि-श्रि—-—सवारी करना, चढ़ना
- **आश्रि**—भ्वा० उभ०—आ-श्रि—-—सहारा लेना, आश्रय लेना, अवलम्ब होना
- **आश्रि**—भ्वा० उभ०—आ-श्रि—-—अनुगमन करना
- **आश्रि**—भ्वा० उभ०—आ-श्रि—-—शरण लेना, निवास करना, बसना
- **आश्रि**—भ्वा० उभ०—आ-श्रि—-—आश्रित होना
- **आश्रि**—भ्वा० उभ०—आ-श्रि—-—पार जाना, अनुभव प्राप्त करना, भुगतना, धारण करना
- **आश्रि**—भ्वा० उभ०—आ-श्रि—-—जमे रहना, डटे रहना
- **आश्रि**—भ्वा० उभ०—आ-श्रि—-—चुनना, छांटना, पसन्द करना
- **आश्रि**—भ्वा० उभ०—आ-श्रि—-—सहायता करना, मदद करना
- **उच्छ्रि**—भ्वा० उभ०—उद्-श्रि—-—ऊपर उठाना, उन्नत करना, ऊँचा करना
- **उपाश्रि**—भ्वा० उभ०—उपा-श्रि—-—पहुँच या अवलम्ब होना
- **संश्रि**—भ्वा० उभ०—सम्-श्रि—-—पहुँच होना, सहारा होना, शरण में जाना, सहायता के लिए पहुँचना
- **संश्रि**—भ्वा० उभ०—सम्-श्रि—-—अवलम्बित होना, आश्रित होना

- **संश्रि**—भ्वा० उभ०—सम्-श्रि—-—हासिल करना, प्राप्त करना
- **संश्रि**—भ्वा० उभ०—सम्-श्रि—-—अभिगमन करना, संभोग के लिए पहुँचना
- **संश्रि**—भ्वा० उभ०—सम्-श्रि—-—सेवा करना
- **श्रित**—भू० क० कृ०—-—श्रि + क्त—गया हुआ, पहुँचा हुआ, शरण में पहुँचा हुआ
- **श्रित**—भू० क० कृ०—-—श्रि + क्त—चिपका हुआ, सहारा लिया हुआ, बैठा हुआ
- **श्रित**—भू० क० कृ०—-—श्रि + क्त—संयुक्त, सम्मिलित, संबद्ध
- **श्रित**—भू० क० कृ०—-—श्रि + क्त—बचाया हुआ
- **श्रित**—भू० क० कृ०—-—श्रि + क्त—सम्मानित, सेवित
- **श्रित**—भू० क० कृ०—-—श्रि + क्त—अनुसेवी, सहकारी
- **श्रित**—भू० क० कृ०—-—श्रि + क्त—आच्छादित, बिछाया हुआ
- **श्रित**—भू० क० कृ०—-—श्रि + क्त—युक्त, पूंरित
- **श्रित**—भू० क० कृ०—-—श्रि + क्त—समवेत, एकत्रित
- **श्रित**—भू० क० कृ०—-—श्रि + क्त—सहित, संपन्न
- **श्रितिः**—स्त्री०—-—श्रि + क्तिन्—अवलम्व, सहारा, पहुँच
- **श्रियम्मन्य**—वि०—-—-—अपने आप को योग्य मानने वाला
- **श्रियम्मन्य**—वि०—-—-—घमंडी
- **श्रियापतिः**—पुं०—-—-—शिव का विशेषण
- **श्रिष्**—भ्वा० पर० <श्रषति>—-—-—जलाना
- **श्री**—क्र्या० उभ० <श्रीणाति>, <श्रीणीते>—-—-—पकाना, भोजन बनाना, उबालना, तैयार करना
- **श्री**—स्त्री०—-—श्रि + क्विप्, नि०—धन, दौलत, प्राचुर्य, समृद्धि, पुष्कलता
- **श्री**—स्त्री०—-—श्रि + क्विप्, नि०—राजसत्ता, ऐश्वर्य, राजकीय धनदौलत
- **श्री**—स्त्री०—-—श्रि + क्विप्, नि०—गौरव महिमा, प्रतिष्ठा
- **श्री**—स्त्री०—-—श्रि + क्विप्, नि०—सौन्दर्य, चारुता, लालित्य
- **श्री**—स्त्री०—-—श्रि + क्विप्, नि०—रंग, रूप
- **श्री**—स्त्री०—-—श्रि + क्विप्, नि०—विष्णु की पत्नी लक्ष्मी जो धन की देवी है
- **श्री**—स्त्री०—-—-—गुण, श्रेष्ठता
- **श्री**—स्त्री०—-—-—सजावट

- **श्री**—स्त्री°—-—-—बुद्धि, समझ
- **श्री**—स्त्री°—-—-—अतिमानव शक्ति
- **श्री**—स्त्री°—-—-—मानवजीवन के तीन उद्देश्यों की समष्टि (धर्म, अर्थ और काम)
- **श्री**—स्त्री°—-—-—सरल वृक्ष
- **श्री**—स्त्री°—-—-—बेल का पेड़
- **श्री**—स्त्री°—-—-—हींग
- **श्री**—स्त्री°—-—-—कमल
- **श्रीह्वाम्**—नपुं°—श्री-आह्वम्—-—कमल
- **श्रीशः**—पुं°—श्री-ईशः—-—विष्णु का विशेषण
- **श्रीकण्ठः**—पुं°—श्री-कण्ठः—-—शिव का विशेषण
- **श्रीकण्ठः**—पुं°—श्री-कण्ठः—-—भवभूति कवि का विशेषण
- **श्रीसखः**—पुं°—श्री-सखः—-—कुबेर का विशेषण
- **श्रीकरः**—पुं°—श्री-करः—-—विष्णु का विशेषण
- **श्रीकरम्**—नपुं°—श्री-करम्—-—लाल कमल
- **श्रीकरणम्**—नपुं°—श्री-करणम्—-—लेखनी
- **श्रीकान्तः**—पुं°—श्री-कान्तः—-—विष्णु का विशेषण
- **श्रीकारिन्**—पुं°—श्री-कारिन्—-—एक प्रकार का बारहसिंगा
- **श्रीखण्डः**—पुं°—श्री-खण्डः—-—चन्दन की लकड़ी
- **श्रीगदितम्**—नपुं°—श्री-गदितम्—-—एक प्रकार का छोटा नाटक
- **श्रीगर्भः**—पुं°—श्री-गर्भः—-—विष्णु का विशेषण
- **श्रीगर्भः**—पुं°—श्री-गर्भः—-—तलवार
- **श्रीग्रहः**—पुं°—श्री-ग्रहः—-—पक्षियों को पानी पिलाने की कुण्डी
- **श्रीधनम्**—नपुं°—श्री-धनम्—-—खट्टी दही
- **श्रीधनः**—पुं°—श्री-धनः—-—बौद्ध महात्मा
- **श्रीचक्रम्**—नपुं°—श्री-चक्रम्—-—भूवृत्त, भूमण्डल
- **श्रीचक्रम्**—नपुं°—श्री-चक्रम्—-—इन्द्र के रथ का पहिया
- **श्रीजः**—पुं°—श्री-जः—-—काम का विशेषण

- **श्रीदः**—पुं°—श्री-दः—-—कुबेर का विशेषण
- **श्रीदयितः**—पुं°—श्री-दयितः—-—विष्णु के विशेषण
- **श्रीधरः**—पुं°—श्री-धरः—-—विष्णु के विशेषण
- **श्रीनगरम्**—नपुं°—श्री-नगरम्—-—एक नगर का नाम
- **श्रीनन्दनः**—पुं°—श्री-नन्दनः—-—राम का विशेषण
- **श्रीनिकेतन**—पुं°—श्री-निकेतनः—-—विष्णु के विशेषण
- **श्रीनिवासः**—पुं°—श्री-निवासः—-—विष्णु के विशेषण
- **श्रीपतिः**—पुं°—श्री-पतिः—-—विष्णु का विशेषण
- **श्रीपतिः**—पुं°—श्री-पतिः—-—राजा, प्रभु
- **श्रीपथः**—पुं°—श्री-पथः—-—मुख्य सड़क, राजमार्ग
- **श्रीपर्णम्**—नपुं°—श्री-पर्णम्—-—कमल
- **श्रीपर्वतः**—पुं°—श्री-पर्वतः—-—एक पहाड़ का नाम
- **श्रीपिष्टः**—पुं°—श्री-पिष्टः—-—तारपीन
- **श्रीपुष्पम्**—नपुं°—श्री-पुष्पम्—-—लौंग
- **श्रीफलः**—पुं°—श्री-फलः—-—बेल का पेड़
- **श्रीफलम्**—नपुं°—श्री-फलम्—-—बेल का फल
- **श्रीफला**—स्त्री°—श्री-फला—-—नील का पौधा
- **श्रीफला**—स्त्री°—श्री-फला—-—आमलकी, आँवला
- **श्रीभ्रातृ**—पुं°—श्री-भ्रातृ—-—चाँद
- **श्रीभ्रातृ**—पुं°—श्री-भ्रातृ—-—घोड़ा
- **श्रीमस्तकः**—पुं°—श्री-मस्तकः—-—लहसुन
- **श्रीमुद्रा**—स्त्री°—श्री-मुद्रा—-—वैष्णवों का विशेष तिलक जो मस्तक पर लगाया जाता है
- **श्रीमूर्तिः**—स्त्री°—श्री-मूर्तिः—-—विष्णु या लक्ष्मी की प्रतिमा
- **श्रीमूर्तिः**—स्त्री°—श्री-मूर्तिः—-—कोई भी प्रतिमा
- **श्रीयुक्त**—वि°—श्री-युक्त—-—सौभाग्यशाली, प्रसन्न
- **श्रीयुक्त**—वि°—श्री-युक्त—-—धनवान्, समृद्धिशाली
- **श्रीयुत**—वि°—श्री-युत—-—सौभाग्यशाली, प्रसन्न

- **श्रीयुत**—वि॰—श्री-युत—-—धनवान्, समृद्धिशाली
- **श्रीरङ्गः**—पुं॰—श्री-रङ्गः—-—विष्णु का विशेषण
- **श्रीरसः**—पुं॰—श्री-रसः—-—तारपीन
- **श्रीरसः**—पुं॰—श्री-रसः—-—राल
- **श्रीवत्सः**—पुं॰—श्री-वत्सः—-—विष्णु का विशेषण, विष्णु की छाती पर बालों का घूंघर या चिह्नविशेष
- **श्रीङ्कः**—पुं॰—श्री-अङ्कः—-—विष्णु के विशेषण
- **श्रीधारिन्**—पुं॰—श्री-धारिन्—-—विष्णु के विशेषण
- **श्रीभृत्**—पुं॰—श्री-भृत्—-—विष्णु के विशेषण
- **श्रीलक्ष्मन्**—पुं॰—श्री-लक्ष्मन्—-—विष्णु के विशेषण
- **श्रीलाञ्छन**—पुं॰—श्री-लाञ्छन—-—विष्णु के विशेषण
- **श्रीवत्सकिन्**—पुं॰—श्री-वत्सकिन्—-—एक घोड़ा जिसकी छाती पर बालों का घूंघर होता है
- **श्रीवरः**—पुं॰—श्री-वरः—-—विष्णु के विशेषण
- **श्रीवल्लभः**—पुं॰—श्री-वल्लभः—-—लक्ष्मी का प्रिय, सौभाग्यशाली या सुखी व्यक्ति
- **श्रीवासः**—पुं॰—श्री-वासः—-—विष्णु का विशेषण
- **श्रीवासः**—पुं॰—श्री-वासः—-—शिव का विशेषण
- **श्रीवासः**—पुं॰—श्री-वासः—-—कमल
- **श्रीवासः**—पुं॰—श्री-वासः—-—तारपीन
- **श्रीवासस्**—पुं॰—श्री-वासस्—-—तारपीन
- **श्रीवृक्षः**—पुं॰—श्री-वृक्षः—-—बेल का पेड़
- **श्रीवृक्षः**—पुं॰—श्री-वृक्षः—-—अश्वत्थवृक्ष
- **श्रीवृक्षः**—पुं॰—श्री-वृक्षः—-—घोड़े के मस्तक औरछाती पर बालों का घूंघर
- **श्रीवेष्टः**—पुं॰—श्री-वेष्टः—-—तारपीन
- **श्रीवेष्टः**—पुं॰—श्री-वेष्टः—-—राल
- **श्रीसंज्ञम्**—नपुं॰—श्री-संज्ञम्—-—लौंग
- **श्रीसहोदरः**—पुं॰—श्री-सहोदरः—-—चन्द्रमा
- **श्रीसूक्तम्**—नपुं॰—श्री-सूक्तम्—-—एक वैदिक सूक्त का नाम
- **श्रीहरिः**—पुं॰—श्री-हरिः—-—विष्णु का विशेषण

- **श्रीहस्तिनी**—स्त्री०—श्री-हस्तिनी—-—सूर्यमुखी फूल का पौधा
- **श्रीमत्**—वि०——श्री + मतुप्—दौलतमन्द, धनवान्
- **श्रीमत्**—वि०——श्री + मतुप्—सुखी, सौभाग्यशाली, समृद्धिशाली, फलता-फूलता
- **श्रीमत्**—वि०——श्री + मतुप्—सुन्दर, सुहावना, सुखद
- **श्रीमत्**—वि०——श्री + मतुप्—विख्यात, प्रसिद्ध, कीर्तिशाली, प्रतिष्ठित
- **श्रीमत्**—पुं०————विष्णु का विशेषण
- **श्रीमत्**—पुं०————कुबेर का विशेषण
- **श्रीमत्**—पुं०————शिव का विशेषण
- **श्रीमत्**—पुं०————तिलक वृक्ष
- **श्रीमत्**—पुं०————अश्वत्थ वृक्ष
- **श्रील**—वि०——श्रीः अस्ति अस्य लच्—धनवान्, दौलतमन्द
- **श्रील**—वि०——श्रीः अस्ति अस्य लच्—सौभाग्यशाली, समृद्धिशाली
- **श्रील**—वि०——श्रीः अस्ति अस्य लच्—सुन्दर
- **श्रील**—वि०——श्रीः अस्ति अस्य लच्—विख्यात, प्रसिद्ध
- **श्रु**—भ्वा० पर० <श्रवति>————जाना, हिलना-जुलना
- **श्रु**—स्वा० पर० <शृणोति>, <श्रुत>————सुनना, (ध्यानपूर्वक) श्रवण करना, कान देना
- **श्रु**—स्वा० पर० <शृणोति>, <श्रुत>————अधिगम करना, अध्ययन करना
- **श्रु**—स्वा० पर० <शृणोति>, <श्रुत>————सावधान होना, आज्ञामानना
- **श्रु**—स्वा० उभ०, प्रेर० <श्रावयति>, <श्रावयते>————सुनवाना, समाचार देना, कहना बयान करना
- **श्रु**—स्वा० आ०, इच्छा० <शुश्रूषते>————सुनने की इच्छा करना
- **श्रु**—स्वा० आ०, इच्छा० <शुश्रूषते>————सावधान होना, आज्ञाकारी होना, हुक्म मानना
- **श्रु**—स्वा० आ०, इच्छा० <शुश्रूषते>————सेवा करना, सेवा में उपस्थित रहना
- **अनुश्रु**—स्वा० पर०—अनु-श्रु——सुनना
- **अनुश्रु**—स्वा० पर०—अनु-श्रु——गुरुपरम्परा से प्राप्त
- **अभिश्रु**—स्वा० पर०—अभि-श्रु——सुनना
- **अभिश्रु**—स्वा० पर०—अभि-श्रु——ध्यान देकर सुनना
- **आश्रु**—स्वा० पर०—आ-श्रु——सुनना

- **आश्रु**—स्वा° पर°—आ-श्रु—-—प्रतिज्ञा करना
- **उपश्रु**—स्वा° पर°—उप-श्रु—-—सुनना
- **उपश्रु**—स्वा° पर°—उप-श्रु—-—जाना, निश्चय करना
- **परिश्रु**—स्वा° पर°—परि-श्रु—-—सुनना
- **परिश्रु**—स्वा° पर°—परि-श्रु—-—प्रतिज्ञा करना
- **विश्रु**—स्वा° पर°—वि-श्रु—-—सुनना
- **संश्रु**—स्वा° पर°—सम्-श्रु—-—सुनना, ध्यान लगा कर सुनना
- **श्रुघ्निका**—स्त्री°—-—-—शोरा, सज्जी, खार
- **श्रुत**—भू° क° कृ°—-—श्रु + क्त—सुना हुआ, ध्यान लगा कर श्रवण किया हुआ
- **श्रुत**—भू° क° कृ°—-—श्रु + क्त—वर्णित, कर्णगोचर
- **श्रुत**—भू° क° कृ°—-—श्रु + क्त—अधिगत, निर्धारित, समझा गया
- **श्रुत**—भू° क° कृ°—-—श्रु + क्त—सुज्ञात, प्रसिद्ध, विख्यात, विश्रुत
- **श्रुत**—भू° क° कृ°—-—श्रु + क्त—नामक, पुकारा हुआ
- **श्रुतम्**—नपुं°—-—-—सुनने का विषय
- **श्रुतम्**—नपुं°—-—-—जो दैवी संदेश से सुना गया, अर्थात् वेद, पवित्र अधिगम, पुनीत ज्ञान
- **श्रुतम्**—नपुं°—-—-—सामान्य अधिगम, विद्या
- **श्रुताध्ययनम्**—नपुं°—श्रुतम्-अध्ययनम्—-—वेदों का पढ़ना
- **श्रुतान्वित**—वि°—श्रुतम्-अन्वित—-—वेदों का ज्ञाता
- **श्रुतार्थः**—पुं°—श्रुतम्-अर्थः—-—मौख़िक रूप से या ज़बानी कहा गया तथ्य
- **श्रुतकीर्ति**—वि°—श्रुतम्-कीर्ति—-—प्रसिद्ध, विश्रुत
- **श्रुतकीर्ति**—पुं°—श्रुतम्-कीर्ति—-—उदार व्यक्ति
- **श्रुतकीर्ति**—पुं°—श्रुतम्-कीर्ति—-—दिव्य ऋषि
- **श्रुतकीर्ति**—स्त्री°—श्रुतम्-कीर्ति—-—शत्रुघ्न की पत्नी
- **श्रुतदेवी**—स्त्री°—श्रुतम्-देवी—-—सरस्वती
- **श्रुतधर**—वि°—श्रुतम्-धर—-—सुनी हुई बात को याद रखने वाला, मेधावी
- **श्रुतवत्**—वि°—-—श्रुत + मतुप्—वेदज्ञाता, वेदवेत्ता, वेदज्ञ
- **श्रुतिः**—स्त्री°—-—श्रु + क्तिन्—सुनना

- **श्रुतिः**—स्त्री॰—-—श्रु + क्तिन्—कान
- **श्रुतिः**—स्त्री॰—-—श्रु + क्तिन्—विवरण, अफ़वाह, समाचार, मौखिक संवाद
- **श्रुतिः**—स्त्री॰—-—श्रु + क्तिन्—ध्वनि
- **श्रुतिः**—स्त्री॰—-—श्रु + क्तिन्—वेद
- **श्रुतिः**—स्त्री॰—-—श्रु + क्तिन्—वैदिकपाठ वेदमंत्र
- **श्रुतिः**—स्त्री॰—-—श्रु + क्तिन्—वेदज्ञान, पुनीतज्ञान, पुण्य अधिगम
- **श्रुतिः**—स्त्री॰—-—श्रु + क्तिन्—(संगीत में) सप्तक का प्रभाव, स्वर का चतुर्थांश या अन्तराल
- **श्रुतिः**—स्त्री॰—-—श्रु + क्तिन्—श्रवण नक्षत्र
- **श्रुत्यनुप्रासः**—पुं॰—श्रुतिः-अनुप्रासः—-—अनुप्रास का एक भेद
- **श्रुत्युक्त**—वि॰—श्रुतिः-उक्त—-—वेदविहित
- **श्रुत्युदित**—वि॰—श्रुतिः-उदित—-—वेदविहित
- **श्रुतिकटः**—पुं॰—श्रुतिः-कटः—-—साँप
- **श्रुतिकटः**—पुं॰—श्रुतिः-कटः—-—तपश्चर्या, प्रायश्चित्त साधना
- **श्रुतिकटु**—वि॰—श्रुतिः-कटु—-—सुनने में कड़वा
- **श्रुतिकटुः**—पुं॰—श्रुतिः-कटुः—-—कर्णकटु, अमधुर ध्वनि (यह रचना का एक दोष माना जाता है)
- **श्रुतिचोदनम्**—नपुं॰—श्रुतिः-चोदनम्—-—शास्त्रीय विधि, वेदविधि
- **श्रुतिचोदना**—स्त्री॰—श्रुतिः-चोदना—-—शास्त्रीय विधि, वेदविधि
- **श्रुतिजीविका**—स्त्री॰—श्रुतिः-जीविका—-—धर्मशास्त्र, विधिसंहिता
- **श्रुतिद्वैधम्**—नपुं॰—श्रुतिः-द्वैधम्—-—वेदविधियों का परस्पर विरोध या निष्क्रमता
- **श्रुतिधर**—वि॰—श्रुतिः-धर—-—सुननेवाला
- **श्रुतिनिदर्शनम्**—नपुं॰—श्रुतिः-निदर्शनम्—-—वेदों का साक्ष्य
- **श्रुतिपथः**—पुं॰—श्रुतिः-पथः—-—कर्ण-परास
- **श्रुतिप्रसादन**—वि॰—श्रुतिः-प्रसादन—-—कर्णप्रिय
- **श्रुतिप्रामाण्यम्**—नपुं॰—श्रुतिः-प्रामाण्यम्—-—वेदों की प्रामाणिकता या स्वीकृत
- **श्रुतिमण्डलम्**—नपुं॰—श्रुतिः-मण्डलम्—-—कान का बाहरी भाग
- **श्रुतिमूलम्**—नपुं॰—श्रुतिः-मूलम्—-—कान की जड़
- **श्रुतिमूलम्**—नपुं॰—श्रुतिः-मूलम्—-—वेद का संहितापाठ

- **श्रुतिमूलक**—वि०—श्रुतिः-मूलक—-—वेद पर आधारित
- **श्रुतिविषयः**—पुं०—श्रुतिः-विषयः—-—सुनने का विषय, अर्थात् ध्वनि
- **श्रुतिविषयः**—पुं०—श्रुतिः-विषयः—-—कर्ण परास
- **श्रुतिविषयः**—पुं०—श्रुतिः-विषयः—-—वेद का विषय
- **श्रुतिविषयः**—पुं०—श्रुतिः-विषयः—-—धार्मिक अध्यादेश
- **श्रुतिवेधः**—पुं०—श्रुतिः-वेधः—-—कान बींधना
- **श्रुतिस्मृति**—स्त्री० द्वि० व०—श्रुतिः-स्मृति—-—वेद और धर्मशास्त्र
- **श्रुवः**—पुं०—-—श्रु + क—यज्ञ
- **श्रुवः**—पुं०—-—श्रु + क—यज्ञीय स्रुवा
- **श्रुवा**—पुं०—-—श्रुव + टाप्—यज्ञीय चमष
- **श्रुवावृक्षः**—पुं०—श्रुवा-वृक्षः—-—विकंटक वृक्ष
- **श्रेढी**—स्त्री०—-—श्रेण्यै राशीकरणाय ढौकते-श्रेणी + ढौक् + ड, पृषो०— भिन्न जातीय द्रव्यों को मिलाने के लिए गणनांग भेद
- **श्रेढीफल**—वि०—श्रेढी-फल—-—श्रेढ़ी क योग जोड़
- **श्रेणि**—पुं०, स्त्री०—-—श्रि + णि—रेखा, शृंखला, पंक्ति
- **श्रेणि**—पुं०, स्त्री०—-—श्रि + णि—दल, संचय, समह
- **श्रेणि**—पुं०, स्त्री०—-—श्रि + णि—व्यापारियों का संघ, शिल्पियों का संघटन, निगम
- **श्रेणि**—पुं०, स्त्री०—-—श्रि + णि—बोक्का, वालटी
- **श्रेणी**—स्त्री०—-—श्रि + णि + ङीप्—रेखा, शृंखला, पंक्ति
- **श्रेणी**—स्त्री०—-—श्रि + णि + ङीप्—दल, संचय, समह
- **श्रेणी**—स्त्री०—-—श्रि + णि + ङीप्—व्यापारियों का संघ, शिल्पियों का संघटन, निगम
- **श्रेणी**—स्त्री०—-—श्रि + णि + ङीप्—बोक्का, वालटी
- **श्रेणिधर्माः**—पुं०, ब० व०—श्रेणि-धर्माः—-—व्यापारिवर्ग या शिल्पकार-संघों के नियम, रीतियाँ आदि
- **श्रेणिका**—स्त्री०—-—श्रेणि + कन् + टाप्—तम्बू, खेमा
- **श्रेयस्**—वि०—-—अतिशयेन प्रशस्यम्-ईयसुन्, श्रादेशः—अपेक्षाकृत अच्छा, वरीयम्, श्रीष्ठतर
- **श्रेयस्**—वि०—-—अतिशयेन प्रशस्यम्-ईयसुन्, श्रादेशः—सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम
- **श्रेयस्**—वि०—-—अतिशयेन प्रशस्यम्-ईयसुन्, श्रादेशः—अधिक सुखी या सौभाग्यशाली
- **श्रेयस्**—वि०—-—अतिशयेन प्रशस्यम्-ईयसुन्, श्रादेशः—अधिक आनन्ददायक, प्रियतर

- **श्रेयस्**—पुं०————सद्‌गुण, पुण्यकर्म, नैतिक गुण, धार्मिक गुण
- **श्रेयस्**—पुं०————आनन्द, सौभाग्य, मंगल, शुभ, कल्याण, आशीर्वाद, शुभ परिणाम
- **श्रेयस्**—पुं०————शुभ अवसर
- **श्रेयस्**—पुं०————मोक्ष, मुक्ति
- **श्रेयोऽर्थिन्**—वि०—श्रेयस्-अर्थिन्———आनन्द का अन्वेषक, आनन्द का इच्छुक
- **श्रेयोऽर्थिन्**—वि०—श्रेयस्-अर्थिन्———हितैषी
- **श्रेयस्कर**—वि०—श्रेयस्-कर———आनन्दप्रद, अनुकूल
- **श्रेयस्कर**—वि०—श्रेयस्-कर———मंगलमय, शुभ
- **श्रेयःपरिश्रमः**—पुं०—श्रेयस्-परिश्रमः———मुक्ति प्राप्त करने की चेष्टा
- **श्रेष्ठ**—वि०———अतिशयेन प्रशस्यः, इष्ठन्, श्रादेशः—सर्वोत्तम, अत्यन्त श्रेष्ठ, प्रमुखतम
- **श्रेष्ठ**—वि०———अतिशयेन प्रशस्यः, इष्ठन्, श्रादेशः—अत्यन्त प्रसन्न या समृद्ध
- **श्रेष्ठ**—वि०———अतिशयेन प्रशस्यः, इष्ठन्, श्रादेशः—प्रियतम, अत्यन्त प्रिय
- **श्रेष्ठ**—वि०———अतिशयेन प्रशस्यः, इष्ठन्, श्रादेशः—सबसे अधिक पुराना, वृद्धतम
- **श्रेष्ठः**—पुं०————ब्राह्मण
- **श्रेष्ठः**—पुं०————राजा
- **श्रेष्ठः**—पुं०————कुबेर का नाम
- **श्रेष्ठः**—पुं०————विष्णु का नाम
- **श्रेष्ठम्**—नपुं०————गाय का दूध
- **श्रेष्ठाश्रमः**—पुं०—श्रेष्ठ-आश्रमः———मनुष्य के धार्मिक जीवन का सर्वोत्तम आश्रम अर्थात् गृहस्थाश्रम
- **श्रेष्ठाश्रमः**—पुं०—श्रेष्ठ-आश्रमः———गृहस्थ
- **श्रेष्ठवाच्**—वि०—श्रेष्ठ-वाच्———वाग्मी
- **श्रेष्ठिन्**—वि०———श्रेष्ठं धनादिकमस्त्यस्य इनि—किसी व्यापारसंघ या शिल्पिसंस्थान का प्रधान या अध्यक्ष
- **श्रै**—भ्वा० पर० <श्रायति>————स्वेद आना, पसीना निकलना
- **श्रै**—भ्वा० पर० <श्रायति>————पकाना, उबालना
- **श्रोण्**—भ्वा० पर० <श्रोणति>————एकत्र करना, ढेर लगाना
- **श्रोण्**—भ्वा० पर० <श्रोणति>————एकत्र होना, संचित होना
- **श्रोण**—वि०———श्रोण् + अच्—विकलांग, लंगड़ा

- **श्रोणः**—पुं०———–एक प्रकार का रोग
- **श्रोणा**—स्त्री०——श्रोण + टाप्—कांजी
- **श्रोणा**—स्त्री०——श्रोण + टाप्—श्रवण नक्षत्र
- **श्रोणिः**—स्त्री०——श्रोण् + इन्—कूल्हा, नितम्ब, चूतड़
- **श्रोणिः**—स्त्री०——श्रोण् + इन्—सड़क, मार्ग
- **श्रोणी**—स्त्री०——श्रोण् + ङीप्—कूल्हा, नितम्ब, चूतड़
- **श्रोणी**—स्त्री०——श्रोण् + ङीप्—सड़क, मार्ग
- **श्रोणितटः**—पुं०—श्रोणिः-तटः——कूल्हों की ढलान
- **श्रोणिफलकम्**—नपुं०—श्रोणिः-फलकम्——विशाल कूल्हे
- **श्रोणिफलकम्**—नपुं०—श्रोणिः-फलकम्——नितम्ब
- **श्रोणिबिम्बम्**—नपुं०—श्रोणिः-बिम्बम्——गोल कूल्हे
- **श्रोणिबिम्बम्**—नपुं०—श्रोणिः-बिम्बम्——कमर-पट्टा
- **श्रोणिसूत्रम्**—नपुं०—श्रोणिः-सूत्रम्——मेखला
- **श्रोणिसूत्रम्**—नपुं०—श्रोणिः-सूत्रम्——कमर से लटकती हुई तलवार का वन्धन
- **श्रोतस्**—नपुं०——श्रु + असुन् तुट् च—कान
- **श्रोतस्**—नपुं०——श्रु + असुन् तुट् च—हाथी की सूँड
- **श्रोतस्**—नपुं०——श्रु + असुन् तुट् च—ज्ञानेन्द्रिय
- **श्रोतस्**—नपुं०——श्रु + असुन् तुट् च—सरिता, प्रवाह
- **श्रोतोरन्ध्रम्**—नपुं०—श्रोतस्-रन्ध्रम्——सूँड जा विवर, नथुना
- **श्रोतृ**—पुं०——श्रु + तृच्—सुनने वाला
- **श्रोतृ**—पुं०——श्रु + तृच्—छात्र
- **श्रोत्रम्**—नपुं०——श्रूयतेऽनेन-श्रु करणे + ष्ट्रन्—कान
- **श्रोत्रम्**—नपुं०——श्रूयतेऽनेन-श्रु करणे + ष्ट्रन्—वेदों में प्रवीणता
- **श्रोत्रम्**—नपुं०——श्रूयतेऽनेन-श्रु करणे + ष्ट्रन्—वेद
- **श्रोत्रपेय**—वि०—श्रोत्रम्-पेय——कान से ग्रहण करने के योग्य, ध्यानपूर्वक सुनने के योग्य
- **श्रोत्रमूलम्**—नपुं०—श्रोत्रम्-मूलम्——कान की जड़
- **श्रोत्रिय**—वि०——छन्दो वेदमधीते वेत्ति वा-छन्दस् + घ, श्रोत्रादेशः—वेद में प्रवीण या अभिज्ञ

- **श्रोत्रिय**—वि०—-——छन्दो वेदमधीते वेत्ति वा-छन्दस् + घ, श्रोत्रादेशः—शिष्य, अनुशासित होने के योग्य
- **श्रोत्रियः**—पुं०—-—-——विद्वान् ब्राह्मण, धर्मज्ञान में सुविज्ञ
- **श्रोत्रियस्वम्**—नपुं०—श्रोत्रियः-स्वम्—-——विद्वान् ब्राह्मण की संपत्ति
- **श्रौत**—वि०—-——श्रुतौ विहितम् अण्—कान से संबंध रखने वाला
- **श्रौत**—वि०—-——श्रुतौ विहितम् अण्—वेदसंबंधी, वेद पर आधारित, वेदविहित
- **श्रौतम्**—नपुं०—-—-——वेदविहित कोई भी कर्म या अनुष्ठान
- **श्रौतम्**—नपुं०—-—-——वेदप्रतिपादित कर्मकाण्ड
- **श्रौतम्**—नपुं०—-—-——यज्ञाग्नि को संधारण करना
- **श्रौतम्**—नपुं०—-—-——तीनों यज्ञाग्नियों की समष्टि (अर्थात् गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण)
- **श्रौतकर्मन्**—नपुं०—श्रौत-कर्मन्—-——वैदिक कृत्य
- **श्रौतसूत्रम्**—नपुं०—श्रौत-सूत्रम्—-——वेद पर आधारित सूत्रग्रन्थों का संग्रह (आश्वलायन, सांख्यायन और कात्यायन आदि के नाम से अभिहित)
- **श्रौतम्**—नपुं०—-——श्रौत्र + (स्वार्थे) अण्—कान
- **श्रौतम्**—नपुं०—-——श्रौत्र + (स्वार्थे) अण्—वेदों में प्रवीणता
- **श्रौषट्**—अव्य०—-——श्रु + डौषट्—दिवंगत आत्मा या देवों की उद्देश्य करके यज्ञाग्नि में आहुति देते समय उच्चारित होने (बोला जाने) वाला अव्यय
- **श्लक्ष्ण**—वि०—-——श्लिष् + क्स्न, नि०—कोमल, मृदु, सौम्य, स्निग्ध (शब्द आदि)
- **श्लक्ष्ण**—वि०—-——श्लिष् + क्स्न, नि०—चिकना, चमकदार
- **श्लक्ष्ण**—वि०—-—-——स्वल्प, सूक्ष्म, पतला, सुकुमार
- **श्लक्ष्ण**—वि०—-—-——सुन्दर, लावण्यमय
- **श्लक्ष्ण**—वि०—-—-——निश्छल, ईमानदार, खरा
- **श्लक्ष्णकम्**—नपुं०—-——श्लक्ष्ण + कन्—सुपारी, पूगीफल
- **श्लङ्क्**—भ्वा० आ० <श्लङ्कते>—-—-——जाना, हिलना-जुलना
- **श्लङ्ग्**—भ्वा० आ० <श्लङ्गते>—-—-——जाना, हिलना-जुलना
- **श्लथ्**—चुरा० उभ० <श्लथयति>, <श्लथयते>—-—-——शिथिल या ढीलाढाला होना
- **श्लथ्**—चुरा० उभ० <श्लथयति>, <श्लथयते>—-—-——दुर्बल या बलहीन होना
- **श्लथ्**—चुरा० उभ० <श्लथयति>, <श्लथयते>—-—-——शिथिल होना, ढीला होना, विश्राम करना
- **श्लथ्**—चुरा० उभ० <श्लथयति>, <श्लथयते>—-—-——चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना
- **श्लथ**—वि०—-——श्लथ् + अच्—बिना बँधा, बिना जकड़ा

- **श्लथ**—वि॰—-—श्लथ् + अच्—शिथिल, विश्रांत, खुला हुआ, फिसला हुआ
- **श्लथ**—वि॰—-—श्लथ् + अच्—बिखरे हुए (जैसे बाल)
- **श्लथोद्यम**—वि॰—श्लथ-उद्यम—-—जिसने अपने प्रयत्न ढीले कर दिये हों
- **श्लथलम्बिन्**—वि॰—श्लथ-लम्बिन्—-—ढीला-ढाला, नीचे लटकता हुआ
- **श्लाख्**—भ्वा॰ पर॰ <श्लाखति>—-—-—व्याप्त होना, प्रविष्ट होना
- **श्लाघ्**—भ्वा॰ आ॰ <श्लाघते>—-—-—प्रशंसा करना, स्तुति करना, सराहना, गुणगान करना
- **श्लाघ्**—भ्वा॰ आ॰ <श्लाघते>—-—-—शेखी बघारना, घमंड करना
- **श्लाघ्**—भ्वा॰ आ॰ <श्लाघते>—-—-—खुशामद करना, फुसलाकर काम निकालना
- **श्लाघनम्**—नपुं॰—-—श्लाघ् + ल्युट्—प्रशंसा करना, स्तुति करना
- **श्लाघनम्**—नपुं॰—-—श्लाघ् + ल्युट्—खुशामद करना
- **श्लाघा**—स्त्री॰—-—श्लाघ् + अ + टाप्—प्रशंसा, स्तुति, सराहना
- **श्लाघा**—स्त्री॰—-—श्लाघ् + अ + टाप्—आत्मप्रशंसा, शेखी बघारना
- **श्लाघा**—स्त्री॰—-—श्लाघ् + अ + टाप्—खुशामद
- **श्लाघा**—स्त्री॰—-—श्लाघ् + अ + टाप्—सेवा
- **श्लाघा**—स्त्री॰—-—श्लाघ् + अ + टाप्—कामना, इच्छा
- **श्लाघाविपर्ययः**—पुं॰—श्लाघा-विपर्ययः—-—डींग मारने का अभाव
- **श्लाघित**—भू॰ क॰ कृ॰—-—श्लाघ् + क्त—प्रशंसा किया गया, स्तुति किया गया, सराहा गया
- **श्लाघ्य**—वि॰—-—श्लाघ् + ण्यत्—प्रशंसनीय, योग्य
- **श्लाघ्य**—वि॰—-—श्लाघ् + ण्यत्—आदरणीय, श्रद्धेय
- **श्लिकुः**—पुं॰—-—श्लिष् + कु, पृषो॰—कामुक, लंपट
- **श्लिकुः**—पुं॰—-—श्लिष् + कु, पृषो॰—दास, आश्रित
- **श्लिकुः**—नपुं॰—-—-—नक्षत्र विद्या, फलित ज्योतिष
- **श्लिक्युः**—पुं॰—-—श्लिष् + क्यु, पृषो॰—लंपट
- **श्लिक्युः**—पुं॰—-—श्लिष् + क्यु, पृषो॰—सेवक
- **श्लिष्**—भ्वा॰ पर॰ <श्लेषति>—-—-—जलना
- **श्लिष्**—दिवा॰ पर॰ <शिलष्यति>, <श्लिष्ट>—-—-—आलिंगन करना
- **श्लिष्**—दिवा॰ पर॰ <शिलष्यति>, <श्लिष्ट>—-—-—जमे रहना, चिपके रहना, डटे रहना

- **श्लिष्**—दिवा° पर° <शिलष्यति>, <श्लिष्ट>—————संयुक्त होना, सम्मिलित होना
- **श्लिष्**—दिवा° पर° <शिलष्यति>, <श्लिष्ट>—————ग्रहण करना, लेना, समझना
- **आश्लिष्**—दिवा° पर°—आ-श्लिष्———आलिंगन करना, परिरंभण करना
- **उपश्लिष्**—दिवा° पर°—उप-श्लिष्———आलिंगन करना, परिरंभण करना
- **विश्लिष्**—दिवा° पर°—वि-श्लिष्———वियुक्त होना, दूर होना
- **विश्लिष्**—दिवा° पर°—वि-श्लिष्———फट जाना, फट कर उड़ जाना
- **विश्लिष्**—दिवा° पर°, प्रेर°—वि-श्लिष्———अलग अलग करना
- **संश्लिष्**—दिवा° पर°—सम्-श्लिष्———डटे रहना, चिपके रहना
- **संश्लिष्**—दिवा° पर°—सम्-श्लिष्———सम्मिलित होना, मिलना
- **श्लिष्**—चुरा° उभ° <श्लेषयति>, <श्लेषयते>—————जोड़ना, सम्मिलित करना, मिलना
- **श्लिषा**—स्त्री°———श्लिष् + अ + टाप्—आलिंगन
- **श्लिषा**—स्त्री°———श्लिष् + अ + टाप्—चिपकना, जुड़ जाना
- **श्लिष्ट**—भू° क° कृ°———श्लिषृ + क्त—आलिंगित
- **श्लिष्ट**—भू° क° कृ°———श्लिषृ + क्त—चिपका हुआ, जुड़ा हुआ
- **श्लिष्ट**—भू° क° कृ°———श्लिषृ + क्त—टिका हुआ, झुका हुआ
- **श्लिष्ट**—भू° क° कृ°———श्लिषृ + क्त—श्लेष से युक्त, दो अर्थों को संभावना से युक्त
- **श्लिष्टिः**—स्त्री°———श्लिष् + क्तिन्—आलिंगन
- **श्लिष्टिः**—स्त्री°———श्लिष् + क्तिन्—परिरंभण
- **श्लीपदम्**—नपुं°———श्री युक्तं वृत्तियुक्तं पदम् अस्मात्, पृषो° —सूजी हुई टांग या फूला हुआ पैर, फीलपावँ
- **श्लीपदप्रभवः**—पुं°—श्लीपदम्-प्रभवः———आम का पेड़
- **श्लील**—वि°———श्रीः अस्ति अस्य-लच्, पृषो°—भाग्यशाली, समृद्ध
- **श्लील**—वि°———श्रीः अस्ति अस्य-लच्, पृषो°—शिष्ट
- **श्लेषः**—पुं°———श्लिष् + घञ्—आलिंगन
- **श्लेषः**—पुं°———श्लिष् + घञ्—चिपकना, जुड़ना
- **श्लेषः**—पुं°———श्लिष् + घञ्—मिलाप, संगम, संपर्क
- **श्लेषः**—पुं°———श्लिष् + घञ्—अनेकार्थ शब्द प्रयोग, एक से अधिक अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग, द्व्यर्थक, किसी शब्द या वाक्य की दो या दो से अधिक अर्थों की संभाव्यता

- **श्लेषार्थः**—पुं॰—श्लेषः-अर्थः—-—अनेकार्थ शब्द प्रयोग, द्व्यर्थक शब्द प्रयोग
- **श्लेषभित्तिक**—वि॰—श्लेषः-भित्तिकः—-—श्लेष पर टिका हुआ
- **श्लेष्मकः**—पुं॰—-—श्लेष्मन् + कन्—कफ, बलगम
- **श्लेष्मज**—वि॰—-—श्लेष्मन् + जन् + ड—कफ से उत्पन्न, कफमूलक
- **श्लेष्मन्**—पुं॰—-—श्लिष् + मनिन्—कफ, बलगम, कफ की प्रकृति
- **श्लेष्मातिसारः**—पुं॰—श्लेष्मन्-अतिसारः—-—कफविकार से उत्पन्न पेचिश, मरोड़
- **श्लेष्मोजस्**—नपुं॰—श्लेष्मन्-ओजस्—-—कफ की प्रकृति
- **श्लेष्मघ्ना**—स्त्री॰—श्लेष्मन्-घ्ना—-—मल्लिका, एक प्रकार का मोतिया
- **श्लेष्मघ्ना**—स्त्री॰—श्लेष्मन्-घ्ना—-—केतकी, केक्ड़ा
- **श्लेष्मघ्नी**—स्त्री॰—श्लेष्मन्-घ्नी—-—मल्लिका, एक प्रकार का मोतिया
- **श्लेष्मघ्नी**—स्त्री॰—श्लेष्मन्-घ्नी—-—केतकी, केक्ड़ा
- **श्लेष्मल**—वि॰—-—श्लेष्मन् + लच्—कफ प्रकृति का, बलगमी
- **श्लेष्मातः**—पुं॰—-—श्लेष्मन् + अत् + अच्—एक वृक्ष विशेष, लिसोड़े का पेड़
- **श्लेष्मातकः**—पुं॰—-—श्लेष्मन् + अत् + अच् पक्षे कन् च—एक वृक्ष विशेष, लिसोड़े का पेड़
- **श्लोक्**—भ्वा॰ आ॰ <श्लोकते>—-—-—प्रशंसा करना, पद्य रचना करना, छन्दोबद्ध करना
- **श्लोक्**—भ्वा॰ आ॰ <श्लोकते>—-—-—अवाप्त करना
- **श्लोक्**—भ्वा॰ आ॰ <श्लोकते>—-—-—त्यागना, छोड़ना
- **श्लोकः**—पुं॰—-—श्लोक् + अच्—कवितामय प्रशंसन, स्तुतीकरण
- **श्लोकः**—पुं॰—-—श्लोक् + अच्—स्तोत्र
- **श्लोकः**—पुं॰—-—श्लोक् + अच्—ख्याति, प्रसिद्धि, विश्रुति, यश
- **श्लोकः**—पुं॰—-—श्लोक् + अच्—प्रशंसा का विषय
- **श्लोकः**—पुं॰—-—श्लोक् + अच्—किंवदन्ती, कहावत
- **श्लोकः**—पुं॰—-—श्लोक् + अच्—पद्य, कविता
- **श्लोकः**—पुं॰—-—श्लोक् + अच्—अनुष्टुप् छन्द में कोई पद्य या कविता
- **श्लोण्**—भ्वा॰ पर॰ <श्लोणति>—-—-—एकत्र करना, इकट्ठा करना, बीनना
- **श्लोणः**—पुं॰—-—श्लोण् + अच्—लंगड़ा पुरुष, विकलांग
- **श्वङ्क्**—भ्वा॰ पर॰ <श्वङ्कते>—-—-—जाना, हिलना-जुलना

- **श्वच्**—भ्वा° पर° <श्वचते>———–—जाना, हिलना-जुलना
- **श्वच्**—भ्वा° पर° <श्वचते>———–—खुला होना, मुँह बाना, फटना, दरार हो जाना
- **श्वञ्च्**—भ्वा° पर° <श्वञ्चते>———–—जाना, हिलना-जुलना
- **श्वञ्च्**—भ्वा° पर° <श्वञ्चते>———–—खुला होना, मुँह बाना, फटना, दरार हो जाना
- **श्वज्**—भ्वा° आ° <श्वजते>—–—–—जाना, हिलना-जुलना
- **श्वठ्**—चुरा° उभ° <श्वठयति>, <श्वठयते>—–—–—निन्दा करना
- **श्वठ्**—चुरा° उभ° <श्वाठयति>, <श्वाठयते>———–—जाना, हिलना-जुलना
- **श्वठ्**—चुरा° उभ° <श्वाठयति>, <श्वाठयते>———–—अलंकृत करना
- **श्वठ्**—चुरा° उभ° <श्वाठयति>, <श्वाठयते>———–—समाप्त करना, सम्पन्न करना
- **श्वण्ठ्**—चुरा° उभ° <श्वण्ठयति>, <श्वण्ठयते>———–—निन्दा करना
- **श्वन्**—पुं°—–—श्वि + कनिन्, नि° —कुत्ता
- **श्वक्रीडिन्**—पुं°—श्वन्-क्रीडिन्—–—खिलारी कुत्तों को पालने वाला
- **श्वगणः**—पुं°—श्वन्-गणः—–—कुत्तों का झुंड
- **श्वगणिकः**—पुं°—श्वन्-गणिकः—–—शिकारी
- **श्वगणिकः**—पुं°—श्वन्-गणिकः—–—कुत्तों को खिलाने वाला
- **श्वधूर्तः**—पुं°—श्वन्-धूर्तः—–—गीदड़
- **श्वनरः**—पुं°—श्वन्-नरः—–—कमीना आदमी, नीच व्यक्ति
- **श्वनिशम्**—नपुं°—श्वन्-निशम्—–—वह रात जिसमें कुत्ते भौंकते हों
- **श्वनिशा**—स्त्री°—श्वन्-निशा—–—वह रात जिसमें कुत्ते भौंकते हों
- **श्वपच्**—पुं°—श्वन्-पच्—–—अतिनीच और पतित जाति का पुरुष, जातिबहिष्कृत, चांडाल
- **श्वपच्**—पुं°—श्वन्-पच्—–—कुत्तों को खिलाने वाला
- **श्वपचः**—पुं°—श्वन्-पचः—–—अतिनीच और पतित जाति का पुरुष, जातिबहिष्कृत, चांडाल
- **श्वपचः**—पुं°—श्वन्-पचः—–—कुत्तों को खिलाने वाला
- **श्वपदम्**—नपुं°—श्वन्-पदम्—–—कुत्ते का पैर
- **श्वपाकः**—पुं°—श्वन्-पाकः—–—जाति से बहिष्कृत, चाण्डाल
- **श्वफलम्**—नपुं°—श्वन्-फलम्—–—खट्टा नींबू या चकोतरा
- **श्वफल्कः**—पुं°—श्वन्-फल्कः—–—अक्रुर के पिता का नाम

- **श्वभीरुः**—पुं°—श्वन्-भीरुः——गीदड़
- **श्वयूथ्यम्**—नपुं°—श्वन्-यूथ्यम्——कुत्तों का झुंड
- **श्ववृत्तिः**—स्त्री°—श्वन्-वृत्तिः——कुत्ते का जीवन
- **श्ववृत्तिः**—स्त्री°—श्वन्-वृत्तिः——सेवावृत्ति, सेवा
- **श्वव्याघ्रः**—पुं°—श्वन्-व्याघ्रः——शिकारी जानवर
- **श्वव्याघ्रः**—पुं°—श्वन्-व्याघ्रः——बाघ
- **श्वव्याघ्रः**—पुं°—श्वन्-व्याघ्रः——चीता
- **श्वहन्**—पुं°—श्वन्-हन्——शिकारी
- **श्वभ्र्**—चुरा° उभ° <श्वभ्रयति>, <श्वभ्रयते>————जाना, हिलना-जुलना
- **श्वभ्र्**—चुरा° उभ° <श्वभ्रयति>, <श्वभ्रयते>————बींधना, सूराख करना, छिद्र करना
- **श्वभ्र्**—चुरा° उभ° <श्वभ्रयति>, <श्वभ्रयते>————दरिद्रता में रहना
- **श्वभ्रम्**—नपुं°——श्वभ्र् + अच्—रन्ध्र, विवर
- **श्वयः**—पुं°——श्वि + अच्—सूजन, शोथ, वृद्धि
- **श्वयथुः**—पुं°——श्वि + अथुच्—सूजन, शोथ
- **श्वयीची**—स्त्री°——श्वि + ईचि + ङीप्—बीमारी, रोग
- **श्वल्**—भ्वा° पर° <श्वलति>————दौड़ना, फुर्ती से जाना
- **श्वल्क्**—चुरा° उभ° <श्वल्कयति>, <श्वल्कयते>————कहना, वर्णन करना
- **श्वल्ल्**—भ्वा° पर° <श्वल्लति>————दौड़ना
- **श्वशुरः**—पुं°——श आशु अश्नुते आशु + अश् + उरच् पृषो° —ससुर, पत्नी या पति का पिता
- **श्वशुरकः**—पुं°——श्वशुर + कन्—ससुर
- **श्वशुर्यः**—पुं°——श्वशुरस्यापत्यम्-श्वशुर + यत् —साला पत्नी या पति का भाई
- **श्वशुर्यः**—पुं°——श्वशुरस्यापत्यम्-श्वशुर + यत् —पति का छोटा भाई, देवर
- **श्वश्रूः**—स्त्री°——श्वशुर + ऊङ्, उकार-अकारलोपः—सास, पत्नी या पति की माँ
- **श्वश्रूश्वशुर**—पुं° द्वि° व°—श्वश्रू-श्वशुर——सास और ससुर
- **श्वस्**—अदा° पर° <श्वसिति>, <श्वस्त>,<श्वसित>————साँस लेना, साँस निकालना, साँस खींचना
- **श्वस्**—अदा° पर° <श्वसिति>, <श्वस्त>,<श्वसित>————आह भरना, हाँपना, ऊँचा साँस लेना
- **श्वस्**—अदा° पर° <श्वसिति>, <श्वस्त>,<श्वसित>————फूत्कार करना, खुर्राटे भरना

- **श्वस्**—अदा॰ उभ॰, प्रेर॰ <श्वासयति>, <श्वासयते>—-—-—साँस दिलाना, जीवित रखना
- **आश्वस्**—अदा॰ पर॰ —आ-श्वस्—-—साँस लेना
- **आश्वस्**—अदा॰ पर॰ —आ-श्वस्—-—साँस लेने लगना, साहसी बनना, हिम्मत करना
- **आश्वस्**—अदा॰ पर॰ —आ-श्वस्—-—पुनर्जीवित करना
- **आश्वस्**—अदा॰ उभ॰, प्रेर॰—आ-श्वस्—-—सांत्वना देना आराम देना, प्रसन्न करना
- **उच्छ्वस्**—अदा॰ पर॰ —उद्-श्वस्—-—साँस देना, जीना
- **उच्छ्वस्**—अदा॰ पर॰ —उद्-श्वस्—-—उत्साह बढाना, जी उठना, हिम्मत बाँधना
- **उच्छ्वस्**—अदा॰ पर॰ —उद्-श्वस्—-—खुलना, खिलना (जैसे कमल का)
- **उच्छ्वस्**—अदा॰ पर॰ —उद्-श्वस्—-—हांपना, गहरा साँस लेना
- **उच्छ्वस्**—अदा॰ पर॰ —उद्-श्वस्—-—ऊँचा साँस लेना, धड़कना
- **उच्छ्वस्**—अदा॰ पर॰ —उद्-श्वस्—-—उन्मुक्त होना
- **निःश्वस्**—अदा॰ पर॰ —नि-श्वस्—-—आह भरना,ऊँचा साँस लेना
- **निःश्वस्**—अदा॰ पर॰ —निस्-श्वस्—-—आह भरना,ऊँचा साँस लेना
- **विश्वस्**—अदा॰ पर॰ —वि-श्वस्—-—विश्वास करना, भरोसा करना, विश्वास रखना
- **विश्वस्**—अदा॰ पर॰ —वि-श्वस्—-—सुरक्षित रहना, निर्भय या विश्वस्त होना
- **समाश्वस्**—अदा॰ पर॰ —समा-श्वस्—-—साहसी होना, हिम्मत बांधना, ढाढस रखना
- **समाश्वस्**—अदा॰ उभ॰, प्रेर॰—समा-श्वस्—-—सांत्वना देना, प्रोत्साहित करना, उत्साह बढ़ाना
- **श्वस्**—अव्य॰—-—आगामि अहः पृषो॰—आने वाला कल
- **श्वस्**—अव्य॰—-—आगामि अहः पृषो॰—भविष्यत्काल
- **श्वोभूत**—वि॰—श्वस्-भूत—-—कल होने वाला
- **श्वोवसीय**—वि॰—श्वस्-वसीय—-—प्रसन्न, शुभ, भाग्यशाली
- **श्वोवसीय**—नपुं॰—श्वस्-वसीय—-—प्रसन्नता, सौभाग्य
- **श्वोवसीयस्**—वि॰—श्वस्-वसीयस्—-—प्रसन्न, शुभ, भाग्यशाली
- **श्वोवसीयस्**—नपुं॰—श्वस्-वसीयस्—-—प्रसन्नता, सौभाग्य
- **श्वःश्रेयस्**—वि॰—श्वस्-श्रेयस्—-—प्रसन्न, समृद्धि
- **श्वःश्रेयसम्**—नपुं॰—श्वस्-श्रेयसम्—-—प्रसन्नता, समृद्धि
- **श्वःश्रेयसम्**—नपुं॰—श्वस्-श्रेयसम्—-—ब्रह्म या परमात्मा का विशेषण

- **श्वसनः**—पुं°—-—श्वसित्यनेन-श्वस् + ल्युट्—हवा, वायु
- **श्वसनः**—पुं°—-—श्वसित्यनेन-श्वस् + ल्युट्—एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था
- **श्वसनम्**—नपुं°—-—-—श्वास, साँस लेना, साँस निकालना
- **श्वसनम्**—नपुं°—-—-—आह भरना
- **श्वसनाशनः**—पुं°—श्वसनः-अशनः—-—साँप
- **श्वसनेश्वरः**—पुं°—श्वसनः-ईश्वरः—-—अर्जुन वृक्ष
- **श्वसनोत्सुकः**—पुं°—श्वसनः-उत्सुकः—-—साँप
- **श्वसनोर्मिः**—स्त्री°—श्वसनः-ऊर्मिः—-—हवा का झोंका
- **श्वसित**—भू° क° कृ°—-—श्वस् + क्त—साँस लिया हुआ, आह भरी हुई
- **श्वसित**—भू° क° कृ°—-—श्वस् + क्त—साँस लेने वाला
- **श्वसितम्**—नपुं°—-—-—साँस लेना, साँस निकालना
- **श्वसितम्**—नपुं°—-—-—ऊँचा साँस लेना
- **श्वस्तन**—वि°—-—श्वस् +ट्युल्—आगामी कल से संबंध रखने वाला, भावी, आगे आने वाला
- **श्वस्त्य**—वि°—-—तुट् श्वस् + त्यप्—आगामी कल से संबंध रखने वाला, भावी, आगे आने वाला
- **श्वाकर्णः**—पुं°—-—शुनः कर्णः ष° त°, अन्येषामपीति दीर्घः—कुत्ते का कान
- **श्वागणिकः**—पुं°—-—श्वगणेन चरति-श्वगण + ठञ्—कुत्ते रखने वाला, कुत्ते पाल कर अपनी जीविका चलाने वाला
- **श्वादन्तः**—पुं°—-—शुनो दन्तः ष° त°, अन्येषामपीति दीर्घः—कुत्ते का दाँत
- **श्वानः**—पुं°—-—श्वैव + अण् न टिलोपः—कुत्ता
- **श्वाननिद्रा**—स्त्री°—श्वानः-निद्रा—-—कुत्ते की नींद, बहुत हलकी नींद
- **श्वानवैखरी**—स्त्री°—श्वानः-वैखरी—-—क्रुद्ध कुत्ते का गुर्राना
- **श्वापद**—वि°—-—शुन इव आपद् अस्मात् ब° स, श्वन् + आपद् + अच्—वर्बर, हिंस्र
- **श्वापदः**—पुं°—-—-—शिकारी जानवर, जंगली जानवर
- **श्वापदः**—पुं°—-—-—बाघ
- **श्वापुच्छः**—पुं°—-—शुनः पुच्छम्-ष° त°, नि° दीर्घ— कुत्ते की पूँछ, दुम
- **श्वापुच्छम्**—नपुं°—-—शुनः पुच्छम्-ष° त°, नि° दीर्घ— कुत्ते की पूँछ, दुम
- **श्वाविध्**—पुं°—-—शुना आविध्यते-श्वन् + आ + व्यध् + क्विप्—साही, शल्यक
- **श्वासः**—पुं°—-—श्वस् + घञ्—साँस लेना, साँस, श्वासप्रश्वास क्रिया, ऊँचा साँस

- **श्वासः**—पुं॰—-—श्वस् + घञ्—आह, हाँपना
- **श्वासः**—पुं॰—-—श्वस् + घञ्—हवा, वायु
- **श्वासः**—पुं॰—-—श्वस् + घञ्—दमा
- **श्वासकासः**—पुं॰—श्वासः-कासः—-—दमा
- **श्वासरोधः**—पुं॰—श्वासः-रोधः—-—साँस का रोकना
- **श्वासहिक्का**—स्त्री॰—श्वासः-हिक्का—-—एक प्रकार की हिचकी
- **श्वासहेतिः**—स्त्री॰—श्वासः-हेतिः—-—नींद
- **श्वासिन्**—वि॰—-—श्वास + इनि—साँस लेने वाला
- **श्वासिन्**—पुं॰—-—-—हवा, वायु
- **श्वासिन्**—पुं॰—-—-—श्वास लेने वाला जानवर, जीवित प्राणी
- **श्वासिन्**—पुं॰—-—-—जो फूत्कार की ध्वनि के साथ (वर्ण) उच्चारण करता है
- **श्वि**—भ्वा॰ पर॰ <श्वयति>, <शून>—-—-—विकसित होना, बढ़ना , सूजना (जैसे आँख का)
- **श्वि**—भ्वा॰ पर॰ <श्वयति>, <शून>—-—-—फलना-फूलना, समृद्ध होना
- **श्वि**—भ्वा॰ पर॰ <श्वयति>, <शून>—-—-—जाना, पहुँचना, अभिमुख चलना
- **उद्-श्वि**—भ्वा॰ पर॰—-—-—सूजना, बढ़ना, विकसित होना
- **उद्-श्वि**—भ्वा॰ पर॰—-—-—घमण्डी होना, घमण्ड से फूल जाना
- **श्वित्**—भ्वा॰ पर॰ <श्वेतते>—-—-—श्वेत होना, सफ़ेद होना
- **श्वित**—वि॰—-—श्वित् + क—सफ़ेद
- **श्वितिः**—स्त्री॰—-—श्वित् + यत्—सफ़ेदी
- **श्वित्रम्**—नपुं॰—-—श्वित् + रक्—सफ़ेद कोढ़
- **श्वित्रम्**—नपुं॰—-—श्वित् + रक्—फुलबहरी, कोढ का दाग़ (त्वचा पर)
- **श्वित्रिन्**—वि॰—-—श्वित्र + इनि—कोढ़ के रोग से ग्रस्त
- **श्वित्रिन्**—पुं॰—-—-—कोढ़ी
- **श्विन्द्**—भ्वा॰ आ॰ <श्विन्दते>—-—-—सफ़ेद होना
- **श्वेत**—वि॰—-—श्वित् + घञ्, अच् वा—सफ़ेद
- **श्वेतः**—वि॰—-—श्वित् + घञ्, अच् वा—सफ़ेद रङ्ग
- **श्वेतः**—वि॰—-—श्वित् + घञ्, अच् वा—शङ्ख

- **श्वेतः**—वि॰—-—श्वित् + घञ्, अच् वा—कौड़ी
- **श्वेतः**—वि॰—-—श्वित् + घञ्, अच् वा—रति कूट पौधा
- **श्वेतः**—वि॰—-—श्वित् + घञ्, अच् वा—शुक्र ग्रह, शुक्र ग्रह की अधिष्ठात्री देवता
- **श्वेतः**—वि॰—-—श्वित् + घञ्, अच् वा—सफ़ेद बादल
- **श्वेतः**—वि॰—-—श्वित् + घञ्, अच् वा—जीरा
- **श्वेतः**—वि॰—-—श्वित् + घञ्, अच् वा—पर्वतश्रेणी
- **श्वेतः**—वि॰—-—श्वित् + घञ्, अच् वा—ब्रह्माण्ड का एक प्रभाग
- **श्वेतम्**—नपुं॰—-—-—चाँदी
- **श्वेताम्बरः**—पुं॰—श्वेतः-अम्बरः—-—जैन सन्यासियों का एक सम्प्रदाय
- **श्वेतवासस्**—पुं॰—श्वेतः-वासस्—-—जैन सन्यासियों का एक सम्प्रदाय
- **श्वेतेक्षुः**—पुं॰—श्वेतः-इक्षुः—-—एक प्रकार का ईख, गन्ना
- **श्वेतोदरः**—पुं॰—श्वेतः-उदरः—-—कुबेर का विशेषण
- **श्वेतकमलम्**—नपुं॰—श्वेतः-कमलम्—-—सफ़ेद कमल
- **श्वेतपद्मम्**—नपुं॰—श्वेतः-पद्मम्—-—सफ़ेद कमल
- **श्वेतकुञ्जरः**—पुं॰—श्वेतः-कुञ्जरः—-—इन्द्र के हाथी ऐरावत का विशेषण
- **श्वेतकुष्ठम्**—नपुं॰—श्वेतः-कुष्ठम्—-—सफ़ेद कोढ़
- **श्वेतकेतुः**—पुं॰—श्वेतः-केतुः—-—बौद्ध श्रमण या जैनसाधु
- **श्वेतकोलः**—पुं॰—श्वेतः-कोलः—-—एक प्रकार की मछली, शफर
- **श्वेतगजः**—पुं॰—श्वेतः-गजः—-—सफ़ेद हाथी
- **श्वेतगजः**—पुं॰—श्वेतः-गजः—-—इन्द्र का हाथी
- **श्वेतद्विपः**—पुं॰—श्वेतः-द्विपः—-—सफ़ेद हाथी
- **श्वेतद्विपः**—पुं॰—श्वेतः-द्विपः—-—इन्द्र का हाथी
- **श्वेतगरुत्**—पुं॰—श्वेतः-गरुत्—-—हंस
- **श्वेतगरुतः**—पुं॰—श्वेतः-गरुतः—-—हंस
- **श्वेतच्छदः**—पुं॰—श्वेतः-छदः—-—हंस
- **श्वेतच्छदः**—पुं॰—श्वेतः-छदः—-—एक प्रकार का तुलसी, सफ़ेद तुलसी
- **श्वेतद्वीपः**—पुं॰—श्वेतः-द्वीपः—-—इस महाद्वीप के अठारह लघु प्रभागों में से एक

- **श्वेतधातुः**—पुं°—श्वेतः-धातुः—-—सफ़ेद खनिज पदार्थ
- **श्वेतधातुः**—पुं°—श्वेतः-धातुः—-—खड़िया मिट्टी
- **श्वेतधातुः**—पुं°—श्वेतः-धातुः—-—दूधिया पत्थर
- **श्वेतधामन्**—पुं°—श्वेतः-धामन्—-—चाँद
- **श्वेतधामन्**—नपुं°—श्वेतः-धामन्—-—कपूर
- **श्वेतधामन्**—नपुं°—श्वेतः-धामन्—-—समुद्रफेन
- **श्वेतनीलः**—पुं°—श्वेतः-नीलः—-—बादल
- **श्वेतपत्रः**—पुं°—श्वेतः-पत्रः—-—हंस
- **श्वेतरथः**—पुं°—श्वेतः-रथः—-—ब्रह्मा का विशेषण
- **श्वेतपाटला**—स्त्री°—श्वेतः-पाटला—-—शृङ्गवल्ली का फूल
- **श्वेतपिङ्गः**—पुं°—श्वेतः-पिङ्गः—-—सिंह
- **श्वेतपिङ्गलः**—पुं°—श्वेतः-पिङ्गलः—-—सिंह
- **श्वेतपिङ्गलः**—पुं°—श्वेतः-पिङ्गलः—-—शिव का विशेषण
- **श्वेतमरिचम्**—नपुं°—श्वेतः-मरिचम्—-—सफ़ेद मिर्च
- **श्वेतमालः**—पुं°—श्वेतः-मालः—-—बादल
- **श्वेतमालः**—पुं°—श्वेतः-मालः—-—धूआँ
- **श्वेतरक्तः**—पुं°—श्वेतः-रक्तः—-—गुलाबी रङ्ग
- **श्वेतरञ्जनम्**—नपुं°—श्वेतः-रञ्जनम्—-—सीसा
- **श्वेतरथः**—पुं°—श्वेतः-रथः—-—शुक्रग्रह
- **श्वेतरोचिस्**—पुं°—श्वेतः-रोचिस्—-—चन्द्रमा
- **श्वेतरोहितः**—पुं°—श्वेतः-रोहितः—-—गरुड़ का विशेषण
- **श्वेतवल्कलः**—पुं°—श्वेतः-वल्कलः—-—गूलर का पेड़
- **श्वेतवाजिन्**—पुं°—श्वेतः-वाजिन्—-—चन्द्रमा
- **श्वेतवाजिन्**—पुं°—श्वेतः-वाजिन्—-—अर्जुन का विशेषण
- **श्वेतवाह्**—पुं°—श्वेतः-वाह्—-—इन्द्र का विशेषण
- **श्वेतवाहः**—पुं°—श्वेतः-वाहः—-—अर्जुन का विशेषण
- **श्वेतवाहः**—पुं°—श्वेतः-वाहः—-—इन्द्र का विशेषण

- **श्वेतवाहनः**—पुं०—श्वेतः-वाहनः—-—अर्जुन का विशेषण
- **श्वेतवाहनः**—पुं०—श्वेतः-वाहनः—-—चन्द्रमा
- **श्वेतवाहनः**—पुं०—श्वेतः-वाहनः—-—समुद्री दानव, मगरमच्छ, घड़ियाल
- **श्वेतवाहिन्**—पुं०—श्वेतः-वाहिन्—-—अर्जुन का विशेषण
- **श्वेतशुङ्गः**—पुं०—श्वेतः-शुङ्गः—-—जौ
- **श्वेतशृङ्गः**—पुं०—श्वेतः-शृङ्गः—-—जौ
- **श्वेतहयः**—पुं०—श्वेतः-हयः—-—इन्द्र का घोड़ा
- **श्वेतहयः**—पुं०—श्वेतः-हयः—-—अर्जुन का विशेषण
- **श्वेतहस्तिन्**—पुं०—श्वेतः-हस्तिन्—-—इन्द्र का हाथी ऐरावत
- **श्वेतकः**—पुं०—-—श्वेत + कन्—कौड़ी
- **श्वेतकः**—पुं०—-—श्वेत + कन्—पुनर्नवा
- **श्वेतकः**—पुं०—-—श्वेत + कन्—सफ़ेद दूब
- **श्वेतकः**—पुं०—-—श्वेत + कन्—स्फटिक
- **श्वेतकः**—पुं०—-—श्वेत + कन्—रवेदार चीनी
- **श्वेतकः**—पुं०—-—श्वेत + कन्—बंसलोचन
- **श्वेतकः**—पुं०—-—श्वेत + कन्—अनेक पौधों के नाम (श्वेत कण्टकारी, श्वेत बृहती आदि)
- **श्वेतौही**—स्त्री०—-—श्वेतवाह + ङीष्—इन्द्र की पत्नी, शची
- **श्वेत्रम्**—नपुं०—-—-—सफ़ेद कोढ़
- **श्वैत्यम्**—नपुं०—-—श्वेत + ष्यञ्—सफ़ेदी
- **श्वैत्यम्**—नपुं०—-—श्वेत + ष्यञ्—सफ़ेद कोढ़
- **श्वैत्रम्**—नपुं०—-—श्वित्र + अण्—सफ़ेद कोढ़
- **श्वैत्र्यम्**—नपुं०—-—श्वित्र + ष्यञ्—सफ़ेद कोढ़
- **ष**—वि०—-—-—
- **ष**—वि०—-—सो + क, पृषो० षत्वम्—सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट
- **षः**—पुं०—-—-—हानि, विनाश
- **षः**—पुं०—-—-—अन्त
- **षः**—पुं०—-—-—शेष, अवशिष्ट

- **षः**—पुं०—–——मोक्ष
- **षट्क**—वि०—–—षडभिः क्रीतम्-षष् + कन्—छः गुना
- **षट्कम्**—नपुं०—–——छः की समष्टि
- **षड्धा**—स्त्री०—–——छः प्रकार से
- **षण्डः**—पुं०—–—सन् + ड, पृषो० षत्वम्—साँड़
- **षण्डः**—पुं०—–—सन् + ड, पृषो० षत्वम्—नपुंसक
- **षण्डः**—पुं०—–—सन् + ड, पृषो० षत्वम्—समूह, समुच्चय, संग्रह, ढेर, राशि
- **षण्डः**—नपुं०—–—सन् + ड, पृषो० षत्वम्—समूह, समुच्चय, संग्रह, ढेर, राशि
- **षण्डकः**—पुं०—–—षण्ड + कन्—नपुंसक, हिजड़ा
- **षण्डाली**—स्त्री०—–—षण्ड + अल् + अच् + ङीष्—तालाब, जोहड़
- **षण्डाली**—स्त्री०—–—षण्ड + अल् + अच् + ङीष्—व्यभिचारिणी या असती स्त्री
- **षण्ढः**—पुं०—–—सन् + ढ, पृषो० षत्वम्—नपुंसक, हिजड़ा
- **षण्ढः**—पुं०—–—सन् + ढ, पृषो० षत्वम्—नपुंसकलिंग
- **षण्ढतिलः**—पुं०—षण्ढः-तिलः—–—बंध्य तिल, वह तिल जो उग न सके
- **षष्**—संख्या० वि०—–—सो + क्विप्, पृषो०—छः
- **षडक्षीणः**—पुं०—षष्-अक्षीणः—–—मछली
- **षडङ्गम्**—नपुं०—षष्-अङ्गम्—–—समष्टि रूप से ग्रहण किये गये शरीर के छः भाग
- **षडङ्गम्**—नपुं०—षष्-अङ्गम्—–—वेद के छः अंग सहायक भाग
- **षडङ्गम्**—नपुं०—षष्-अङ्गम्—–—छः शुभ वस्तुएँ अर्थात् गोमाता से प्राप्त छः पदार्थ
- **षडङ्घ्रिः**—पुं०—षष्-अङ्घ्रिः—–—भौंरा
- **षडाधिक**—वि०—षष्-अधिक—–—वह जिसमें छः अधिक हों
- **षडभिज्ञः**—पुं०—षष्-अभिज्ञः—–—देवरूप बौद्ध महात्मा
- **षडशीत**—वि०—षष्-अशीत—–—छयासीवाँ
- **षडशीतिः**—स्त्री०—षष्-अशीतिः—–—छयासी
- **षडहः**—पुं०—षष्-अहः—–—छः दिन का समय या अवधि
- **षडाननः**—पुं०—षष्-आननः—–—कार्तिकेय के विशेषण
- **षड्वक्त्रः**—पुं०—षष्-वक्त्रः—–—कार्तिकेय के विशेषण

- **षड्वदनः**—पुं°—षष्-वदनः—-—कार्तिकेय के विशेषण
- **षडाम्नायः**—पुं°—षष्-आम्नायः—-—छः तन्त्र
- **षडूषणम्**—नपुं°—षष्-ऊषणम्—-—समष्टि रूप से ग्रहण किये हुए छः मसाले
- **षट्कर्ण**—वि°—षष्-कर्ण—-—छः कानों से सुना गया
- **षट्कर्णः**—पुं°—षष्-कर्णः—-—एक प्रकार की वीणा
- **षट्कर्मन्**—नपुं°—षष्-कर्मन्—-—ब्राहणों के लिए विहित छः कर्तव्य
- **षट्कर्मन्**—नपुं°—षष्-कर्मन्—-—छः कर्म जो ब्राह्मण की जीविका के लिए विहित हैं
- **षट्कर्मन्**—नपुं°—षष्-कर्मन्—-—जादू के छः करतब शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेष, उच्चाटन तथा मारण
- **षट्कर्मन्**—नपुं°—षष्-कर्मन्—-—योगाभ्याससंबंधी छः क्रियाएँ
- **षट्कर्मन्**—पुं°—षष्-कर्मन्—-—ब्राह्मण
- **षट्कोण**—वि°—षष्-कोण—-—छः कोणों से युक्त
- **षट्कोणम्**—नपुं°—षष्-कोणम्—-—षड्भुज, छः कोनिया
- **षट्कोणम्**—नपुं°—षष्-कोणम्—-—इन्द्र का वज्र
- **षड्गवम्**—नपुं°—षष्-गवम्—-—छः बैलों की जोड़ी
- **षड्गवम्**—नपुं°—षष्-गवम्—-—वह जुवा जिसमें छः बैल जोते जायं
- **षड्ढस्ति**—पुं°—षष्-हस्ति—-—छः हाथी
- **षडश्व**—पुं°—षष्-अश्व—-—छः घोड़े
- **षड्गुण**—वि°—षष्-गुण—-—छः गुना
- **षड्गुण**—वि°—षष्-गुण—-—छः विशेषणों से युक्त
- **षड्गुणम्**—नपुं°—षष्-गुणम्—-—छः गुणों का समुदाय
- **षड्गुणम्**—नपुं°—षष्-गुणम्—-—किसी राजा की विदेशनीति में प्रयोक्तव्य छः उपाय
- **षड्ग्रन्थि**—स्त्री°—षष्-ग्रन्थि—-—पिप्परामूल
- **षड्ग्रन्थिका**—स्त्री°—षष्-ग्रन्थिका—-—शटी, आमाहल्दी
- **षट्चक्रम्**—नपुं°—षष्-चक्रम्—-—शरीर के छः रहस्यमय चक्र (मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा)
- **षट्चत्वारिंशत्**—वि°—षष्-चत्वारिंशत्—-—छयालीस
- **षट्चरणः**—पुं°—षष्-चरणः—-—मधुमक्खी
- **षट्चरणः**—पुं°—षष्-चरणः—-—टिड्डी

- **षट्चरणः**—पुं°—षष्-चरणः—-—जूँ
- **षड्जः**—पुं°—षष्-जः—-—भारतीय स्वरग्राम के सात प्राथमिक स्वरों में से चौथा स्वर (कुछ के अनुसार पहला) क्योंकि यह स्वर छः अंगों से व्युत्पन्न है
- **षट्त्रिंशत्**—नपुं°—षष्-त्रिंशत्—-—छत्तीस
- **षट्त्रिंश**—वि°—षष्-त्रिंश—-—छत्तीसवाँ
- **षड्दर्शनम्**—नपुं°—षष्-दर्शनम्—-—हिन्दू दर्शन के छः मुख्य शास्त्र-सांख्य, योग, न्याय, वैशैषिक, मीमांसा और वेदान्त
- **षड्दुर्गम्**—नपुं°—षष्-दुर्गम्—-—छः प्रकार के गढ़ों की समष्टि
- **षण्णवतिः**—स्त्री°—षष्-नवतिः—-—छयानवे
- **षट्पञ्चाशत्**—स्त्री°—षष्-पञ्चाशत्—-—छप्पन
- **षट्पदः**—पुं°—षष्-पदः—-—भौंरा
- **षट्पदः**—पुं°—षष्-पदः—-—जूँ
- **षट्पदातिथिः**—पुं°—षष्-पदः-अतिथिः—-—आम का वृक्ष
- **षट्पदानन्दवर्धनः**—पुं°—षष्-पदः-आनन्दवर्धनः—-—अशोक या किंकिरात वृक्ष
- **षट्पदाज्य**—वि°—षष्-पदः-ज्य—-—जिस की डोरी भौंरों से बनी है
- **षट्पदप्रियः**—पुं°—षष्-पदः-प्रियः—-—नागकेशर नाम का वृक्ष
- **षट्पदी**—स्त्री°—षष्-पदी—-—छः पंक्तियों का श्लोक
- **षट्पदी**—स्त्री°—षष्-पदी—-—भ्रमरी
- **षट्पदी**—स्त्री°—षष्-पदी—-—जूँ
- **षट्प्रज्ञः**—पुं°—षष्-प्रज्ञः—-—जो छः विषयों से सुपरिचित है अर्थात् चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) या मानवजीवन के उद्देश्य और लोकप्रकृति, ब्रह्मप्रकृति
- **षट्प्रज्ञः**—पुं°—षष्-प्रज्ञः—-—विलासी, कामासक्त पुरुष
- **षड्बिन्दुः**—पुं°—षष्-बिन्दुः—-—विष्णु का विशेषण
- **षड्भागः**—पुं°—षष्-भागः—-—छठा भाग, १/६ भाग
- **षड्भुज**—वि°—षष्-भुज—-—छः हैं सहायक जिसके, छः कोनों वाला
- **षड्भुजः**—पुं°—षष्-भुजः—-—षट्कोण
- **षड्भुजा**—स्त्री°—षष्-भुजा—-—दुर्गा का विशेषण
- **षड्भुजा**—स्त्री°—षष्-भुजा—-—तरबूज़

- **षण्मासः**—पुं॰—षष्-मासः—-—छः महीने का समय
- **षण्मासिक**—वि॰—षष्-मासिक—-—छमाही, अर्धवार्षिक
- **षण्मुखः**—पुं॰—षष्-मुखः—-—कार्तिकेय के विशेषण
- **षण्मुखा**—स्त्री॰—षष्-मुखा—-—तरबूज़
- **षड्रसम्**—पुं॰ ब॰ व॰—षष्-रसम्—-—छः रसों की समष्टि
- **षड्रसाः**—पुं॰ ब॰ व॰—षष्-रसाः—-—छः रसों की समष्टि
- **षड्रात्रम्**—नपुं॰—षष्-रात्रम्—-—छः रातों का समय या अवधि
- **षड्वर्गः**—पुं॰—षष्-वर्गः—-—छः वस्तुओं की समष्टि
- **षड्वर्गः**—पुं॰—षष्-वर्गः—-— विशेष रूप से मनुष्य के छः शत्रु
- **षड्विंशतिः**—स्त्री॰—षष्-विंशतिः—-—छब्बीस
- **षड्विंश**—वि॰—षष्-विंश—-—छब्बीसवाँ
- **षड्विध**—वि॰—षष्-विध—-—छः प्रकार का , छः गुना
- **षट्षष्टिः**—स्त्री॰—षष्-षष्टिः—-—छासठ
- **षट्सप्ततिः**—स्त्री॰—षष्-सप्ततिः—-—छिहत्तर
- **षष्टिः**—स्त्री॰—-—षड्गुणिता दशतिः नि॰—साठ
- **षष्टितम्**—नपुं॰—-—-—साठवाँ
- **षष्टिमत्तः**—पुं॰—षष्टिः-मत्तः—-—साठ वर्ष की आयु का हाथी जिसके मस्तक से मद चूता है
- **षष्टियोजनी**—स्त्री॰—षष्टिः-योजनी—-—साठ योजन का विस्तार या यात्रा
- **षष्टिसंवत्सरः**—पुं॰—षष्टिः-संवत्सरः—-—साठ वर्ष की अवधि या समय
- **षष्टिहायनः**—पुं॰—षष्टिः-हायनः—-—(साठवर्ष की आयु का) हाथी
- **षष्टिहायनः**—पुं॰—षष्टिः-हायनः—-—एक प्रकार का चावल
- **षष्ठ**—वि॰—-—षण्णां पूरणः-षष् + डट्, वुक्—छठा, छठा भाग
- **षष्ठांशः**—पुं॰—षष्ठ-अंशः—-—सामान्य छठा भाग
- **षष्ठांशः**—पुं॰—षष्ठ-अंशः—-—विशेष कर उपज का छठा भाग जिसको कि राजा अपनी प्रजा से भूमिकर के रूप में ग्रहण करता है
- **षष्ठवृत्तिः**—पुं॰—षष्ठ-वृत्तिः—-—उपज के छठे भाग का अधिकारी राजा
- **षष्ठान्नम्**—नपुं॰—षष्ठ-अन्नम्—-—छठा भोजन
- **षष्ठकालः**—पुं॰—षष्ठ-कालः—-—तीन दिन में केवल एक बार भोजन करने वाला

- **षष्ठी**—स्त्री०—-—षष्ठ + ङीप्—चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
- **षष्ठी**—स्त्री०—-—षष्ठ + ङीप्—(व्या० में) छठी विभक्ति या सम्बन्ध कारक
- **षष्ठी**—स्त्री०—-—षष्ठ + ङीप्—कात्यायनी के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो सोलह दिव्य मातृकाओं में से एक है
- **षष्ठीतत्पुरुषः**—पुं०—षष्ठी-तत्पुरुषः—-—छठी विभक्ति के लोप वाला तत्पुरुष सदैव छठी विभक्ति का होता है
- **षष्ठीपूजनम्**—नपुं०—षष्ठी-पूजनम्—-—बालक उत्पन्न होने के छठे दिन छठी देवी की पूजा करना
- **षष्ठीपूजा**—स्त्री०—षष्ठी-पूजा—-—बालक उत्पन्न होने के छठे दिन छठी देवी की पूजा करना
- **षहसानुः**—पुं०—-—सह + आनु, असुक्, पृषो षत्वम्—मोर
- **षहसानुः**—पुं०—-—सह + आनु, असुक्, पृषो षत्वम्—यज्ञ
- **षाट्**—अव्य०—-—सह + ण्वि, पृषो० षत्वं टत्वम् —सम्बोधक अव्यय
- **षाट्कौशिक**—वि०—-—षट्कोश + ठक्—छः तहों में लिपटा हुआ
- **षाडवः**—पुं०—-—षड् + अव् + अच् ततः स्वार्थे अण्—राग, मनोवेग
- **षाडवः**—पुं०—-—षड् + अव् + अच् ततः स्वार्थे अण्—गाना, संगीत
- **षाडवः**—पुं०—-—षड् + अव् + अच् ततः स्वार्थे अण्—(संगीत में) एक राग जिस में संगीत के सात स्वरों में से छः स्वर प्रयुक्त होते हैं
- **षाड्गुण्यम्**—नपुं०—-—षड्गुण + ष्यञ्—छः गुणों की समष्टि
- **षाड्गुण्यम्**—नपुं०—-—षड्गुण + ष्यञ्—राजा के द्वारा प्रयुक्त छः युक्तियाँ, राजनीति के छः उपाय
- **षाड्गुण्यम्**—नपुं०—-—षड्गुण + ष्यञ्—छः से किसी संख्या का गुणन
- **षाड्गुण्यप्रयोगः**—पुं०—षाड्गुण्यम्-प्रयोगः—-—राजनीति के छः उपाय, या छः युक्तियों का प्रयोग
- **षाण्मातुरः**—पुं०—-—षण्णां मातृणाम् अपत्यम्, षण्मातृ + अण्, उत्व, रपर—छः माताओं वाला, कार्तिकेय का विशेषण
- **षाण्मासिक**—वि०—-—षण्मास + ठक्—छमाही, अर्धवार्षिक
- **षाण्मासिक**—वि०—-—षण्मास + ठक्—छः महीने का
- **षाष्ठ**—वि०—-—षष्ठ + अण् स्वार्थे —छठा
- **षिड्गः**—पुं०—-—सिट् + गन्, पृषो० षत्वम्— विलासी, ऐयाश, कामुक, कामासक्त
- **षिड्गः**—पुं०—-—सिट् + गन्, पृषो० षत्वम्—प्रेमनिपुण, असंगत प्रेमी, विट
- **षुः**—पुं०—-—सु + डु, पृषो० षत्वम्—प्रसूति, प्रजनन
- **षोडश**—वि०—-—षोडशम् + डट्—सोलहवाँ
- **षोडशम्**—संख्या० वि०, ब० व०—-—सोलह
- **षोडशांशुः**—पुं०—षोडशम्-अंशुः—-—शुक्रग्रह

- **षोडशाङ्गः**—वि०—षोडशम्-अङ्गः———एक प्रकार का गन्धद्रव
- **षोडशाङ्गुलक**—वि०—षोडशम्-अङ्गुलक———छः अंगुल की चौड़ाई का
- **षोडशाङ्घ्रिः**—पुं०—षोडशम्-अङ्घ्रिः———केकड़ा
- **षोडशार्चिस्**—पुं०—षोडशम्-अर्चिस्———शुक्रग्रह
- **षोडशावर्तः**—पुं०—षोडशम्-आवर्तः———शंख
- **षोडशोपचारः**—पुं०—षोडशम्-उपचारः———श्रद्धांजलि अर्पित करने की सोलह रीतियाँ
- **षोडशकलः**—पुं०—षोडशम्-कलः———चन्द्रमा की सोलह कलाएँ
- **षोडशभुजा**—स्त्री०—षोडशम्-भुजा———दुर्गा की एक मूर्ति
- **षोडशमातृका**—स्त्री० ब० व०—षोडशम्-मातृका———सोलह दिव्य माताएँ
- **षोडशधा**—अव्य०———षोडशन् + धाच्—सोलह प्रकार से
- **षोडशिक**—वि०———षोडशन् + ठक्—सोलह भागों से युक्त
- **षोडशिन्**—पुं०———षोडशन् + इनि—अग्निष्टोम यज्ञ का रूपान्तर
- **षोढा**—अव्य०———षष् + धाच्, षष् उत्वम्, धस्य ष्टुत्वम्—छः प्रकार से
- **षोढान्यासः**—पुं०—षोढा-न्यासः———मंत्र पढ़ते हुए शरीर स्पर्श के छः प्रकार
- **षोढामुखः**—पुं०—षोढा-मुखः———छः मुंह वाला, कार्तिकेय
- **ष्ठिव्**—भ्वा० <ष्ठीवति>, दिवा० पर०<ष्ठीव्यति>, <ष्ठ्यूत>—————थूकना, मुँह से खखार निकालना
- **ष्ठिव्**—भ्वा० <ष्ठीवति>, दिवा० पर०<ष्ठीव्यति>, <ष्ठ्यूत>—————राल टपकना
- **निष्ठिव्**—भ्वा०—नि-ष्ठिव्———प्रक्षेपण करना, निकालना, धकेलना
- **निष्ठिव्**—भ्वा०—नि-ष्ठिव्———मुँह से खखार निकालना
- **ष्ठीवनम्**—नपुं०———ष्ठीव् + ल्युट्—थूकना
- **ष्ठीवनम्**—नपुं०———ष्ठीव् + ल्युट्—लार, थूक, खखार
- **ष्ठेवनम्**—नपुं०———ष्ठिव् + ल्युट्—थूकना
- **ष्ठेवनम्**—नपुं०———ष्ठिव् + ल्युट्—लार, थूक, खखार
- **ष्ठ्यूत**—भू० क० कृ०———ष्ठिव् + क्त, ऊ—थूका हुआ, खखारा हुआ
- **ष्वक्क्**—भ्वा० आ० <ष्वक्कते>—————जाना, हिलना-जुलना
- **ष्वस्क्**—भ्वा० आ० <ष्वस्कते>—————जाना, हिलना-जुलना